भावनाओं के खण्डहर

सुमेरसिंह दईया



सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

प्रकाशक
सूर्य प्रकाशन मन्दिर
नेहरू मार्ग
बीकानेर

प्रकाशकीय



सूर्य प्रकाशन मन्दिर की प्रकाशन शृंखला में श्री सुमेर सिंह दइया का नवीन उपन्यास एक नवीन कड़ी है। इस उपन्यास को कुछ पूर्व ही आपके हाथों में होना चाहिये था मगर मुद्रण सम्बन्धी कुछ कठिनाइयों के कारण विलम्ब से आप तक पहुंचा सके हैं। इस उपन्यास को आप सभी पसन्द करेंगे ऐसी ही आशा है।

प्रकाशन सम्बन्धी सुझाव आमन्त्रित हैं।

—व्यवस्थापक

मनशिल पक्ष तथा मानसिक जटिलताओं को उभार कर एक नवीन जीवन दृष्टि की स्थापना करती है जो सम्प्रेष्य भाव तथा प्रभाववादी स्वरूप की अभिव्यक्ति को रूपायित करके कथा के विशिष्ट पक्ष को निखारती है और उसके माध्यम से भारत को एक विशेष रूप में खोजने तथा व्यक्त करने की अपूर्व प्रेरणा देती है। ग्रामीण आंचल से उभरती हुई यह कथा परम्परानुमोदित विशिष्टता का कहां तक निर्वाह कर पाई है इसका उत्तर तो केवल सहृदय एवं विचारशील पाठक ही दे सकते हैं।

हनुमान हत्था बीकानेर — सुमेरसिंह दईया

सोन गाव प्रकृति के अचल म बसा है। उसकी आबादी थोडी है मगर शहर के निकट बसे होने के कारण उसका अपना म… अधिकाश बस्ती कोरी कीर और गूजरो की है। कुछ उच्च वर्ग लोग रहते हैं— जैसे राजपूत, बनिये और ब्राह्मण । उनकी स्थिति … नमक के समान है।

इसके एक ओर सोन नदी बहती है। सुदूर किसी पर्व… झील से निकलकर वह इठलाती-बलखाती हुई अभिसारिका न… भाति अपनी लगन म मस्त सगम स्थल की ओर बढ रही है । यह … से शात है। इतनी उद्दड नही है जो आषाढ की पहली वर्षा प्रारम्भ… ही रौद्र रूप धारण कर लेती है। फिर इसकी प्रलयकारी लहरें गाव … अपने विकराल जबडो म समेट लेती है। चारो ओर तबाही… हाहाकार!

गाव वाले इसम प्रेम करते हैं । यह उनके सपनों की रा… पूजा की देवी है गीतो की नायिका है और है उनके मनों की पावन… मा! जिसकी महिमा सर्वत्र व्याप्त है इस चराचर जगत के कौन … जाती है। यह ममता करुणा क्षमा और परोपकार की गौरवशाली … प्रतिमा है। सारा ससार उसका कृतज्ञ है। श्रद्धा प्लावित हो उसक… में शीश नवाता है—भक्ति के फूल चढाता है। … इसी है सोन।

शेष दोनों बाजुओं पर खेत हैं। दूर दूर तक लम्बी कतारें

एक नवयुवक हाथ में बंसरी लिए गाँव की ओर से आ रहा है। कभी इधर जाता है—कभी उधर। लगता है जैसे वह निरुद्देश्य भटक रहा है।

'आ हठीले नैना आ बादीले नैना मोह कासों किया उलझाय रे
मोह कासों दियो उलझाय रे आ हठीले नैना आ।'

गुनगुनाहट सहसा मधुर स्वर के साथ एक गीत के रूप में परिणत हो गई। गायक आत्म विभोर हो उसमें खो सा गया। आँखें बंद! चित्त एकाग्र! उसका मन रस प्लावित है और निखिल विश्व का सारा आनन्द जैसे उसमें भर गया है।

पता नहीं कितना समय बीता होगा ? मगर जब उसने बंद पलकों को खोला तो उस प्रकृति का मनोरम सौंदर्य मोहित कर गया। *एक नया रंग एक नई छटा उमड़ कण कण में परिव्याप्त है।* चहचहाते पक्षी सूरज की किरणों को चूमती पेड़ों की डालियाँ और वायु में प्रभात के सुंदर नीहारकणों तथा लहलहाते खेतों की मादक गंध! जी भर कर इस अलौकिक सुरा का वह पान करता रहा।

नीचे ढलान से मटकी लिये एक नारी सिर ऊपर उठा और फिर कुछ ही देर में पूरी सुडौल आकृति पगडंडी पर धीरे धीरे चलने लगी। *युवक चौंक कर ठिठक गया। अस्फुट स्वर में गुनगुनाया— मां भी।*

एक शरारत भरी मुस्कान उसके होठों पर खेल गई।

वह फुर्ती से दौड़कर एक पेड़ की ओट हो गया। वह मन ही मन किसी हुड़दंग या किसी ठिठौली की कल्पना करने लगा।

युवती स्वाभाविक चाल से निरंतर आगे बढ़ती आ रही है। अपनी धुन में मगन वह पेड़ के पास से निकल गई है। अब युवक मन मसोस कर रह गया। दरअसल में उसकी अक्ल में छोटी सी शरारत भी नहीं

उतरा। द्वार पर वह पगडंडी पर आ गया और धीरे से बोला — राम राम भाभी ।

कौन ?

गोमा घूम कर खड़ी हो गई।

पूछा— क्या है ?"

युवक समीप आ गया और रास्ता रोक कर खड़ा हो गया।

'अच्छा जी हमारी बोली तक पहचानना भूल गईं। —युवक ने अजीब लहजे में मुँह बनाकर कहा।

युवती हठात् हँस पड़ी।

अच्छा रास्ता छोड़ दो।'

नहीं।

युवक इठलाकर खड़ा रहा।

देखो जी युवती ने तिरछी नजरों से घूर कर कहा— सीधी तरह रास्ता छोड़ दो वरना ।

इस उठी हुई उंगली की चेतावनी ने शीघ्र ही अपना प्रभाव दिखाया और युवक खिसियानी हँसी हँसकर हट गया।

देखो बाबू देवर ! मुझे हर घड़ी का यह हँसी ठट्ठा पसंद नहीं है। समझे कुछ।

क्रोध के इस नाटकीय अभिनय ने गोमा के व्यक्तित्व को निखार दिया है। उसकी मर्म स्पर्शी प्रतिभा आँखों के वातायन से झाँकने लगी है।

बस भाभी ! थोड़ी देर ठहर जाओ और ।'

'चुप। —गोमा ने एक झिड़की पिलाई।

बेचारा बाबू बुझ गया।

अब गोमा उसकी यह अवस्था देखकर बरबस खिल खिला पडी — 'बस भाभी की एक ही डाट म खिसिया गये।"

हैं —शम्भू घुग्घू की तरह मु ह बाए देखता रहा, मगर शीघ्र ही अपने हाथ की खसरी से मटकी पर हल्की सी चोट करके ही ही हसने लगा।

गोमा हाथ मटका कर बोली— क्यों जी, गाव म दूसरी सारी भाभिया मर गई हैं, जो हर वक्त मुझे ही छेड़ते रहते हो ? हाँ हाँ
S ﻝ S I

गोमा प्रश्न पूछ कर शम्भू की आखो म झाकने लगी। लेकिन वह भी है पक्का बेशर्म। बस हसता रहा – दात निकालता रहा।

अच्छा, करलो देवर जी तुम भी हसी दिल्लगी । क्या करू भगवान ने कुछ रिश्ता ही ऐसा बनाया है । पराये गाव की बेटी हू ना। तुम भी मन की निकाल लो।

गोमा एक मादक अन्दाज म बाकी चितवन से मुस्करा कर आगे बढ गई।

शम्भू खडा रहा मौन। भाभी का यह उलाहना कितना मीठा है, जिसके रस मे उसका मन डूब डूब जाता है। वह जाती हुई गोमा को देखकर बुदबुदाया —'हो ना आखिर मेरी भाभी !

अपनी सारी ममता उडेल दी है। भोला के सम्मुख शेह का प्रश्न बड़ा जटिल और पेचीदा हो गया था। गाँव के लोगों ने भिन्न भिन्न विचार और सानेली मा ने दुर्व्यवहार की अनेक कथायें सुनाकर उसकी आशंका को अधिक उलझनपूर्ण बना दिया था। इसके अतिरिक्त गाँव में भी कुछ ऐसी घटनायें उसकी आँखों के आगे हो गई थी जिससे उसकी दुर्बलता की पुष्टि हो जाती है और इन्हीं चिन्ता तथा अप्रिय दुश्चिन्ताओं से ग्रसित होकर भोला शादी करने गया था। जब वास्तविकता बिल्कुल भिन्न रूप में सामने आई तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

गोमा ने आते ही अपने सौम्य व्यवहार से कुछ ही दिनों में जीत लिया है। सारी शंकायें निर्मूल सिद्ध हुई। अनिष्टकारक धारणाय निराधार साबित हुई। वह शेह को अपने पेट के जाए सगे बेटे के समान प्यार करती है। इस अप्रत्याशित व्यवहार और अकल्पित चमत्कार को देख कर सब दंग रह गये हैं। बड़े बूढ़े न जाने क्या क्या कहते हैं। कइयों ने आतंकित होकर इसे दिखावा भर कहा और कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने फिलहाल राय प्रकट करना उचित नहीं समझा। भिन्न भिन्न लोग—भिन्न भिन्न रायें। गोमा तो मूक दर्शक सी बनकर निरपेक्ष भाव से सुन रही है।

गृह प्रवेश की रस्म पूरी होते ही नई दुल्हन गोमा ने पहला काम यह किया कि आँगन में बैठी सारी औरतों के रिवाज के अनुसार पैर छुए। बड़ी बूढ़ियों के पैर तो उसने ऐसे दबाए कि वे बड़ी प्रसन्न हो गई। उन्होंने उसे 'दूधो नहाओ—पूतो फलो' का शुभ आशीर्वाद दिया। जब घूंघट उघाड़ कर मुंह देखना चाहा तो उसने कोई आनाकानी न की। उसके साँवरे मुख पर लो लजालु कजरारे मौन भाव से झुके नयन—सबने उसके निश्छल रूप की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। कुछ झुक कर उसके ललाट पर काला टीका लगाकर राई उतारने भी लगीं। उन्हें डर है कि किसी निगोड़ी की ईर्षापूर्ण दुष्ट नजर इस चाँद से मुखड़े को न लग जाए। वे भोला को भी बधाई देने से नहीं चूकीं।

भोला फूलकर कुप्पा हो गया । उसने सोचा—"शोभा के लिए ढेर सारे गहने बनाऊगा । कपडे, टीके, टमक ललाई आदि लाकर उसे खुश रखू गा उसे बनाऊगा रानी बिल्कुल रानी ! नदी से पानी लेने भी नही भेजू गा मैं खुद ले आऊगा । कौन भरा जाता ? अगर लोग हसेंगे तो हसा करें । यहा परवाह किसे है । जगल से लकडी भी काट कर ले आऊगा और और '

तभी उसे एक विचार सूझा — क्यो न शहर म जाकर कपडे की मील में नौकरी करने ? हर माह साठ रुपल्ली तनख्वाह ! टन टना टन—खन खना खन ! अरे वाह फिर क्या चाहिए ? पौ बारह हैं । न किसी की चाकरी—न किसी की गुलामी ! किसी की खुशामद करने की भी जरूरत नही है । आजकल किसानी म कोई बरकत नही है । कभी बरखा नही, कभी साहूकार बीज न दे कभी फसल को पाला मार जाए । हजार झझट हैं । यदि सौभाग्य स फसल तयार हो जाए तो जमीदार आकर गला पकड ले । बस, ले देकर मुट्ठी भर दाने हाथ लगते हैं । इन सब मुसीबतो स छुटकारा । वाह खूब !

उसने पक्का निश्चय कर लिया ।

जब रात को एकात म वह शोभा स मिलन गया तो उसाक रूप की चकाचौंध म सब कुछ भूल गया । थोडी सी दारू भी पी ली थी । कुछ रूप का नशा—कुछ दारू का नशा ! बचारा भोला रहातो तत्दम दीवाना हो गया । अधिक देर बातें करन समय खोना उस अच्छा न लगा और सुहाग रात की नशीली फिजा म आत्म विभोर हो खो गया ।

रजत रश्मियों स आलोकित आज शोभा की प्रथम सोहाग रात है । सारा ससार पूनम की शुभ्र ज्योत्स्ना में डूब गया है । चारों ओर मनो हर शान्ति जगमगा रही है । उसका मन आनन्द में डूब और उल्लास का झरना सा फूट रहा है । ल्पना म रगीयें स्वप्न विविध रूप स साकार समझ

हैं अतः अपने उद्वेग को रोक पाना कठिन हो गया है।

भोला के होठों से दारू की गंध चुराकर हवा के एक छोटे-से झोंके ने उसे गामा के नाक पर पटक दिया। उसका एकाएक जी घुटने लगा, मगर इस घुटन में भी अपूर्व आनन्द है। भोला नशे की झोंक में झूमने लगा किन्तु उसमें भी हृदयग्राही मिठास है। बस उसका आनन तो लाज से गुलाबी हो हो जाता है।

भोला शान शक्ल का कोई बुरा नहीं है। फिर शादी के दिन नजदीक आते देखकर मनबहलन का काम करता रहा। सेर भर दूध में छटांक भर घी मिलाकर रोज सुबह शाम पीता रहा। परिणामस्वरूप उसके चेहरे पर नई रौनक आ गई है। शरीर का गठन अधिक मांसल तथा सुडौल हो गया है। सचमुच गामा पहली ही दृष्टि में मर गई। उसने आत्म समर्पण कर दिया। सपनों का राजा उसे मिल गया है और उसकी कुंवारी आशायें फलने फूलने लगी हैं।

वह भोला के भुजपाश में बंध गई। एक क्षण के लिये अपने प्रियतम की ओर अपलक मंत्र मुग्ध सी निहारती रही तत्पश्चात् भावावेग में उसके गालों होठों और आंखों पर चुम्बन की वर्षा करने लगी। इतने उन्मत्त और विक्षिप्त चुम्बनों की बौछार में ये चिर-विरही युगल प्रणयी प्रेम के अटूट बंधन में बंध गये।

सुबह जब भोला धन्धा लेकर जाने लगा तो गामा का माथा ठनका। उसने लजाकर पूछा— कहां जा रहे हैं?

नदी पर।

भोला की आंखों में अभी सरूर बाकी है।

हां रानी! तुम दूध गरम करो। मैं चुटकी बजाते ही आया।

तो फिर मैं किसलिए हूं?

बडे गुमान के साथ आहिस्ता से गोमा ने कहा। रात्रि जागरण से बोझिल हुई पलकों में दिल फरेब अदा अपने आप भर गई।

'हिन्‌ तुम जाओगे पानी लेने।'

झिड़की देकर गोमा ने घाड छान लिया। बडे नखरे से मुस्करा कर बोली— कहा मर्द भी पानी लेने जाते हैं।

इस मीठे उलाहने में गोमा ने अपने हृदय का सारा रस घोल दिया। भोला मुग्ध भाव से पीता रहा—गटकता रहा।

छम छम छम।

सुबह—तडके की—गली के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक यह कर्ण प्रिय ध्वनि गूंज उठी। तनिक हलचल सी मच गई। इस दरिद्र अभावग्रस्त और पिछड़े गांव में यह श्रुति मधुर ध्वनि कहा से फूट पड़ी? बस सब घरों के किवाड़ खुल गये और सारी औरतें दरवाजों पर जमा हो गई। वे एसे आंखें फाडकर देखने लगीं जैसे कोई अजूबा अचानक प्रकट हो गया है।

कौन है?

किसकी बहू है?

कहा लम्बा घूंघट निकाल रखा है।

अरे यह तो नई बहू है।

मां भोला की बहू है।

बस दूसरा [illegible] उठा और फिर [illegible] गया। अब तो सबकी दृष्टि उसकर गोमा के पैरों पर जम गई जहां [illegible] चमकती हुई पायलों का जादू [illegible] में स्पष्ट जलन सी [illegible] है। ईर्ष्या में वे जल उठी हैं। उनके मन में एक [illegible] पूछा [illegible] समय था जब उनके पैरों में भी ऐसी पायलों की झनकार [illegible] करती थी मगर

आज वे महाजन की तिजारी में चली गई हैं। अब तो केवल हसरत ही शेष रह गई है। उनके अधरों पर नैराश्य और मसली हुई आशा की फीकी सी मुस्कान अनायास ही उभर आती है।

नौजवानों ने इस भोला की दुल्हन को कुछ दूसरी निगाहों से घूरा। यह छम छम की ध्वनि तो जैसे उनके दिलों में उतर गई। उसके अंतराल में क्रमशः प्रतिध्वनि सी होती रही। उनमें से कई अपने आप को रोक न सके और स्वर में रस भरकर बोले — राम राम भाभी!

और गोमा तो सलज्ज मुस्कान लिये अपनी ओढ़नी में सिमि सिकुड़ गई।

इस अनुकूल प्रतिक्रिया को देखकर इन देवरों का साहस एकदम बढ़ गया और वे खीसें निपोर कर हँसने लगे। अजीब ढंग से मुँह बिगाड़ कर प्रलाप करने लगे। इसके अतिरिक्त उनकी दृष्टि अधिक निर्लज्ज और लोलुप भी बन गई।

अब गोमा को अपनी भूल का आभास हुआ। वह घबरा गई। सचमुच यह पायल की झनकार तो उनके कानों में चुभने लगी। वह सिर नीचा किये फुर्ती से आगे बढ़ गई।

जब वह वापिस लौट कर आई तो भोला से उसका खिन्न और कुम्हलाया चेहरा छिप न सका। जिन चंचल आँखों की गहराइयों में अभी—थोड़ी देर पहले—उमंग और उत्साह का रंग छलक रहा था वहाँ घृणा और विरक्ति का भाव घनीभूत होते देखकर वह चौंक उठा। उसने पूछा—क्या बात है रानी?

एक बार तो मन हुआ कि सारी बात खोलकर कहे और पूछे कि तुम्हारे गाँव में नई आई बहू के साथ इस प्रकार का सलूक किया जाता है? लेकिन गोमा—पता नहीं क्यों—चुप्पी साध कर खड़ी रही।

भोला ने फिर पूछा— क्या हुआ रानी?

पर गोमा ने सोचा कि उसका यह चुप्पी अनादर पर है—और यह अनादर शंकाएँ भी उत्पन्न कर सकता है अत अपने अधरों पर बनावट मुस्कान खींच कर बोली— कोई खास बात नहीं है।

नहीं है ?

बिल्कुल नहीं है।

गोमा हंस पड़ी—एक सरल हंसी।

अब भोला का आतंकित मन थोड़ा आश्वस्त हुआ। सदा पर वह आज पहली बार गई है। अजानी डगर और अपरिचित लोग। सम्भवत इस प्रकार घबरा जाना कोई आश्चर्य नहीं है। धीरे धीरे यह झिझक और दुराव अपने आप समाप्त हो जाएगा। इस में कोई सदेह नहीं है।

'राम' राम भाभी।'

गोमा तो सन्न-सी रह गई।

वही आवाज जो उसका पीछा करते करते यहा भी पहुच गई है। वही सम्बोधन, जिसके संदर्भ में वही अश्लील हंसी और मैली दृष्टि। वह इतनी भयभीत हो उठी है कि उसकी आखें नीचे झुकती चली गई और उसने पुकारने वाले को एक नजर उठाकर भी नहीं देखा।

'गोमा ! यह तो अपना शम्भू है मेरे छोटे भाई जैसा समझो।

इस संक्षिप्त परिचय का उस पर तत्क्षण ही प्रभाव पड़ा। उसने निगाह उठाकर निहारा भर बस कहा कुछ नहीं।

अरे वाह तूने मुह खोलकर इसे कुछ भी नहीं कहा। —भोला एक आख से शम्भू और दूसरी से गोमा को देखकर बोला— जा जा। अदर जाकर देख। इसने अपनी भाभी के लिए चाय बनाई है।

चाय! —विस्मय से गोमा के होंठ खुल रह गए।

'हा।

अब गोमा ने अपनी दृष्टि शम्भू की स्नेहोज्ज्वल आखों में ग
री, जो आदर व श्रद्धा से नमित हैं। जिस कुमन भावना का परिचय उ
अभी मिला है—यह उससे सर्वथा भिन्न है।

यह तो कुछ और ही बनाने वाला था पर तुम जल्दी ही न
आई।

गोमा घर के अंदर चली गई। उसके मन की वह दुर्भावना क्रम
क्षीण होती गई। धीरे धीरे एक बोझ सा उतर गया। उसने मन ही म
कहा—सच है, सब आदमी एक से नहीं होते।

बाहर भोला हंसी के साथ बोला— शम्भू ! अभी तुम्हारी भा
शर्मीली है।

❀ ❀ ❀

भोर का तारा उगता है—तब गोमा उठती है। नित्य कर्मों से निवृत्त होकर वह घर के काम काज में लग जाती है। गाय दुहती है कण्डे पाथती है घर की सफाई करती है बासी बर्तन मलती है भोला के नाश्ते के लिए कलेवा तैयार करती है पानी भरती है। अपने मधुर कण्ठ से प्रभाती गाती हुई वह रोज दो सेर ज्वार पीसती है भोला भी उठ जाता है और हुक्का गुड़गुड़ाता हुआ गाती को आनन्दपूर्वक सुनता है।

उसने सबसे पहले सारे घर को लीपा और फिर लाल मिट्टी व सफेद कलई से पोता। अब उसे करीने से सजाया।

यद्यपि भोला उसे बराबर मना करता रहा। नई दुल्हन को आते ही काम पर लगाना सरासर अन्याय है। गांव की बड़ी बूढ़ियां भी ताने कसती हैं। उसे जालिम कहकर कोसती हैं जो नन्हीं फूल सी बहू को बड़ी बेरहमी से काम में लगाए रखता है।

अरी भागवान रहने दे। तनिक सुस्ता ले।

क्यों हट्टो काम से भी कोई घिसता है।

केवल नैनों की ऐसी प्रेमपूर्ण दृष्टि फेंकती है कि भोला एकदम लुट जाता है। वह निकट आ जाता है और उसे छाती से लगाकर एक स्नेह पूर्ण चुम्बन उस के होठों पर टांक देता है।

'अह अह अह।

हठात् वह छुई मुई सी बन जाती है।

गोमा के दोनों हाथों को पकड़कर भोला ने कहा— देख, तेरे हाथों की मेहदी अभी तलक नहीं सूखी है और तू जो है बैल की तरह काम किए जा रही है। थोड़े दिन आराम करले फिर सारी जिंदगी काम ही तो करना है।'

भोला के इन शब्दों में सहृदयता तथा आत्मीयता का रंग अधिक गहरा एवं घना हो गया। गोमा तो निहाल हो गई। आज वह अपने इस सौभाग्य पर दर्प स्फीत से मुस्करा रही है।

'सच कहता हूं कि तुम्हें इस तरह काम करते देखकर मुझे मुझ मुझे ?'

भोला के आगे के शब्द कहीं गुम हो गए।

क्या मुझे मुझे ? —बड़े भोलेपन से गोमा ने पूछा।

तो मुझे मुझे अच्छा नहीं लगता।

कैसी बातें करते हो ! —हंसकर गोमा ने प्रतिवाद किया— घर का काम तो करना ही चाहिए।

वह सब तो ठीक है पर समय का भी कुछ ।

ऊहूं । यह सब गलत है ।' —सयानी सी बनकर गोमा कहने लगी— मेरा तो विश्वास है कि आदमी को कभी ठाला बैठना ही नहीं चाहिए इससे वह निकम्मा बेकार और आलसी हो जाता है।

इस तर्क-सम्मत उत्तर से भोला बड़ा प्रभावित हुआ। इसमें गोमा की तीव्र बुद्धि की झलक मिलती है। इसके अतिरिक्त उसके कहने का ढंग इतना अधिक रोचक है कि इसमें यह अप्रिय प्रसंग अपने आप समाप्त हो गया।

वह गद् गद् कण्ठ से बोला— रोहू की मां ! तुम कितनी अच्छी हो ।

शेरु की मा !' —इस सम्बोधन म कितनी मार्मिकता छिपी पडी है । अपने पति के मु ह से गोमा जब सुनती है ता उसक हृदय म एक मीठी सी गुदगुदी होती है । किसी न सच ही कहा है कि नारी जीवन की साथ कता मातृत्व म है ।

यथाथ मे प्रत्येक स्त्री जब से होश सम्भालती है तो कुछ सपने देखने शुरू करती है । गुडिया के खेल के साथ वह अपने सलौने सजीव और सु दर प्रियतम की मधुर कल्पना करती है । उसके सग हसती है खेलती है और प्रेम के तराने गाती हुई सावन म झूला झूलती है ।

फिर जब ब्याहने योग्य हो जाती है तब विवाह के सारे समारोह देखकर उसके मन म सुकुमार कल्पनायें हो जाती हैं । कुछ मर्मिक प्रश्न कुछ चिताय, कुछ शकायें अपने आप उठती हैं और व आदश वर प्राप्ति की कामना को अपने अतमन म छिपाय गा उठती हैं—

काची दाख हेठे बनडी पान चाव
फूल सू घ करे ए बाबाजी सू बीनती ।
बाबाजी देस देना परदस दीज्यो
म्हारी जोडी रा वर हेरज्यो ।
काळो मत हेरो बाबाजी कुल नै लजाव
गोरो मत हेरो बाबाजी अग पसीजे ।
लाबो मत हरो बाबा सागर चूट
ओछो मत हरो बाबा बावनू बतावे ।
असो वर हरो कासी को वासी
बाई रे मन भासी हसती चन्द्र आसी ।
हस मन ए बाबाजी री प्यारी,
हरयो है फूल गुलाब सो ।'

तदनन्तर गृहस्थी क साथ साथ बच्चों की मा बनने की उत्कट अभिलाषा भी जाग्रत हो उठती है ।

ओह ! कितना आनन्द है मा का गौरवशाली पद पाने मे मानों ससार का सारा वैभव उसके आचल मे आ गया है। छोटा सा बालक— जैसे चाद का टुकडा। नवनीत से कोमल हाथ पाव निर्मल हसी ठुनकती हुई वह शाव चाल ! घर के आगन मे हर्षोल्लास की पवित्र गगा सी बहने लगती है।

मा ऽ ऽऽऽ !

तुतली आवाज की यह पुकार नाव काम छुटा देती है। मातृ भाव का झरना सा हृदय के जाने कौन से अचानक फूट पडता है और

आह ! मुझे यह सौभाग्य प्राप्त है। —अक्सर गोमा सोचती है—' नेह मेरा ही तो जन्मा है। अगर मेरी कोख से नही जन्मा तो क्या हुआ। आखिर है तो मेरे पति का अश। उनका रूप उस मे झलकता है। वह मेरा है और मेरी गोद से कोई भी नही छीन सकता।

पाच वर्ष का नेह अभी नादान है—अबोध है यद्यपि वह अपने पराये का सहज स्वाभाविक ज्ञान रखता है। जब गोमा पहले पहल आई तो वह एकदम सहम कर डर गया। भोजा का मन भी आशका एव दुविधा से डावाडोल हो रहा था पता नही सौतेली मा कसी निकले ! उसने जी कडा करके नेह को गोमा की गोद मे डाल दिया।

इसका ध्यान रखना। बस।

उसका गला रुध गया।—अतःकरण में कोई किसी अज्ञात पीडा की अनुभूति से उसके नेत्र आर्द्र हो गये। कुछ क्षणों के लिये वह एक प्रस्तर के सदृश नि स्पन्द और जड होकर किन्हीं अतीत स्मृतियो में खो गया।

नेह भयभीत हो रो पडा। उसकी करुणाप्लावित चीखें घर की दीवारो का भेद कर [illegible]। गोमा ने उस बडे अचरज से देखा। एक

विचित्र सी मन स्थिति म पड गए। आर गन्य आखा की स्तम्भित दृष्टि बालक के चारो ओर कु डली मार कर बठ गए। बालक रोन के साथ साथ अपने हाथ पाव चलाने लगा जिनका प्रहार गोमा की छाती पर और कधा पर होने लगा। देखते देखते उसके हृदय म ममता की अजस्र धारा सी फूट पडी। भावावेग में उसे छाती से लगा लिया। अब वह उसकी मा था और दीरू उसका बेटा।

यह दृश्य कितना ममस्पर्शी था। यद्यपि भोला दूर ही रहकर देखता रहा। अब वह भी आश्वस्त हो गया। गोमा अब दीरू को सगे बेटे के समान प्यार करेगी—इसमें कोई सशय नहीं है। चिंता दूर हुई भगवान न उसकी सुन ली।

भोला मुह अधेरे ही दीरू को लेकर खेत चला गया।

गोमा यत्रवत् घर का सारा काम काज करती रहा। घडी भर के लिये भी चैन से न बैठी। परिणाम स्वरूप ठीक समय पर सब समाप्त हो गया। अब खेत में बाप बेटे के लिये रोटी ले जाने की तयारी कर रही है। उसने ज्वार की मोटी मोटी रोटिया और एक कटोरे म बथुए की सब्जी रख ली। छाछ की हाडी भी टोकरी म रखना वह न ही भूली।

फिर उठकर उसने लहगा बदला और एक साफ सुथरी धुली हुई ओढनी। ये दोनों मोटी खादी की है मगर उसके गठीले बदन पर बडी अच्छी फब रही है। उसने एक छोटा-सा आईना उठाया और अपना मुख जोहने लगी। माथे पर रखडी है मानो म चाँदी की हसली है। आखो में सुरमे की हल्की सी लकीर खींच ली। अब उसने आईना उठा कर पुन देखा तो चकित सी रह गई। सचमुच उसकी मा। मोटी आखों में जादू का सा असर है। वह खुद अपने रूप पर मोहित हो गई है।

निगोडी, इतनी खूबसूरत बनकर निकलनी तो मार खान।
—गोमा मन ही मन बडबडाई।

उसने अधिक शृंगार करने का विचार त्याग दिया । होठों पर लगाने वाली लाली वापिस सन्दूकचा में रख दी । पाजेब पहनना तो उसने एक अरसे से छोड़ रखा है । क्या करे मजबूर है भूखे मर्द हड्डी को प्यासी नजरों से घूरते हैं ।

वह खड़ी हो गई । उसने सरसरी निगाह अपने लहंगे और आंगी पर डाली । फिर हल्का सा हाथ फेरकर उसकी सलवटें ठीक कीं । अन्तिम बार उसने आईना उठाया और कंघी लेकर अपने बाल सँवारने लगी लेकिन बालों की एक नालायक लट ने तो जैसे चोटी के साथ न गुंथने की कसम सी खा रखी है । गामा उसकी इस शरारत पर बिगड़ गई ।

जा मर । मेरी बला से हुँह !

उसने लट छोड़ दी । ललाट से लटक कर बायें गाल तक वह लट मस्ती में थिरकने लगी ।

और थोड़ी देर में ही घर के कुंडी लगाकर बाहर निकल गई ।

इस गजभर के साथ गोमा को आते इस गांव के उन मनचले देवरों के मुंह में ठंडी उसासें निकलने लगीं। कुछ तो इतना चिढ़े कि आज आटा बजाकर कुलित स्वागत करें। न रही चूक। उस जब गीत की कड़ियां गुनगुना कर अपनी उपस्थिति की सूचना भी देने लगे। राम राम अभिवादन के साथ भाभी शब्द का उच्चारण आज नये अंदाज में किया गया है जिसमें एक प्रकार की अश्लीलता की गंध आ रही है। ओह! आज इनके लिये के समुख इस पवित्र नाम के साथ-साथ इनके द्वारा बनने वाले सम्बंध को भी अपमानित और लांछित कर लिया है।

गोमा बुरी तरह कुढ़ गई।

भला गांव की बहू बेटी के साथ यह व्यवहार किया जाता है! क्या यही यहां की रीत है? न इज्जत न लाज! बस गिद्ध दृष्टि से घूरते रहते हैं। इनकी नीयत से तो साफ जाहिर है कि ये पराये घर की बेटी को तो केवल एक ही नजर से देखते हैं। कैसा बुरा जमाना आ गया है। एक समय था जब गांव की एक बेटी पूरे गांव की बेटी थी और एक बहू सारे गांव की लक्ष्मी समझी जाती थी।

गोमा ने फिर कर उपेक्षा से मुंह घुमा लिया। उन्हें अनजान की गरज से थोड़ी मटक कर चलने लगी।

जलते हैं तो जला करें अपनी बला से। मेरी जूती तक परवाह नहीं करती।

अतःकरण में बढ़ते हुए आक्रोश को रोक कर वह आगे बढ़ गई।

थोड़ी दूर चलकर उसे गांव के सम्मानित ठाकुर साहब रघुनाथ सिंह जी मिले। चितकबरी घोड़ी पर सवार हैं। बिच्छू के डंक के समान मूछें खड़ी हैं। वही रौबीला चेहरा—वही अक्खड़ स्वभाव! ये गांव के पुश्तैनी मालिक हैं। यद्यपि उनकी जागीर समाप्त हो चुकी है और मुआवजे की रकम भी किश्तों के रूप में उन्हें धीरे धीरे मिलने लगी है, तथापि ठकुराई की शान अभी तक बाकी है। परस्पर मुकद्दमबाजी एवं सुरा सुन्दरी का दौर भी चलता रहता है, परन्तु दिन प्रति दिन उसकी गति धीमी पड़ती आ रही है। इसमें वे बहुत कुछ बर्बाद कर चुके हैं फिर भी प्यास नहीं बुझती। भोग लिप्सा की मनोवृत्ति इस वृद्धावस्था में भी कम नहीं हुई है। जब कभी किसी सुन्दरी के दर्शन कर लेते हैं तो उनकी आंखों के गुलाबी डोरे तन जाते हैं। मुंह में लार टपकने लगती है। कभी कभी तो यह उत्तेजना इतनी अधिक बढ़ जाती है कि अपने आप को नियन्त्रित रख पाना कठिन हो जाता है।

ठाकुर साहब ने गामा के रूप की प्रशंसा सुन ली थी मगर आंखों से देखने का अवसर उन्हें आज ही मिला है। सचमुच एक ही झलक में वे लुट गये। वे एकटक निहार कर अपने मन के चक्षुओं की प्यास बुझाने लगे। लेकिन तभी मुख पर घूंघट खिंच कर आ गया।

उन्हें एक झटका सा लगा—जैसे किसी निष्ठुर ने उनके सीने में करारा आघात किया है। क्षण भर के लिये ताव से उनका चेहरा तमतमा उठा। हाथ की मुट्ठियां बंध गईं। आवेग का तीव्र झोंका सा अचानक उनके मन में उठा और सांसें बाहें फड़कने लगीं।

अभी इस सुन्दरी को घोड़ी पर बठा कर उठा न लाऊं तो सारा घमंड चूर चूर हो जायगा।

बस उसे यह आभास पाया था सब हो गया गया । वे अती
ति गानत है कि उनके व विद्वान स्त्र के । वे दूर गए हैं—जिनस व
र मिले गे । दव भी गया क गया गए बस्ती तर पान मिर का
रहता है।

धनीभूत निराशा तब धमाम उ मानता म व एकदम बुझ ग
गए । गुपट नौकर का नामों न उनके प्रति ना तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया
है उनका कोई नाक उधर उतर पान लगा है। लेकिन इसस मा उनक
वर्तमान स्थानीय व्यवस्था के प्रति एक उग्र गहन मना चुनौती भी अ
निहित है जो शूल की तरह उनके कलेजे म चुभ रहा है ।

व तब हार पीट कुत्ते की तरह दुम दबाकर चल गए ।

कुछ ब्राम गए ना उस पंडित राम जी सामन स आते मिल गए ।
बदन पर राम नामी था र । गले म रुद्राक्ष की माला एक हाथ म गोमुखी
माला का जाप बराबर चल रहा है । मुह ही मन म कुछ बड़बड़ा भी
रहे है।

पंडित जी बड़ नम धम वाले व्यक्ति है । हमेशा पूजा पाठ जप
तप एव ध्यान ध्यान म अपना समय व्यतीत करते हैं । आस पास के गावों
म कथा भागवत बांचने जाते हैं और पूर्ण दक्षिणा यजमान स प्राप्त किए
बिना उसका पिंड नहीं छोड़ते । इसम किसी भी प्रकार का लिहाज न ।
किया जाता । अक्सर व कहते सुने जाते है भाई पोथी पाठ स योगी
करेगा तो खायेगा क्या ?

उनका कथन सर्वथा सत्य है ।

दूर दूर गावों म भी इनके श्रद्धालु भक्त जन जनम मरण शादी
ब्याह तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों मे इन्हे बड प्रेम स बुलाते हैं । बड़ी आव
भगत करते हैं । पूरी मिठाई खिलाकर भर पूर दक्षिणा भी देते हैं । खान म
इनकी बराबरी कोई बिरला ही कर पाता है । एक घूट म पढाई भर खीर प

जाए और डकार भी न लें चालीस लड्डू मोतीचूर के खा जाए तो पता ही न चले और ऊपर से कहे कि अभी भूख है। हलुवा में मन आ जाय तो पूरे तीन का हाँड़ भर चट कर जाए। ऐसे पेटू पंडित जी को कोई कलेजे वाला ही निमन्त्रण देता है।

पंडित जी के नेत्र मदन विमोचन भाव लोक में खोय रहते हैं परन्तु स्त्रियाँ पीसनी वाला की पद चाप सुनते हैं तो बिल्ली की तरह तत्क्षण ही उनकी दृष्टि बदल जाती है। बस यह एक ही कमजोरी है उनमें। कभी कभी मदन के प्रभाव में आकर प्राय विवेकशून्य हो जाते हैं और सारी ऊँच नीच भूल जाते हैं।

पिछले कई वर्षों में इस एक कमजोरी के पीछे इन्हें बहुत मार खानी पड़ी है। कभी घाट, कभी खेत कभी मंदिर—जहाँ भी इन्हें मौका मिला—ये अपना काला मुँह करने से नहीं चूके। अभी कुछ ही मास पहले मंदिर के पिछवाड़े भगत की छोकरी को पकड़ बैठे लाख लालच देने पर भी नहीं मानी और शोर मचाने लगी अवस्था में छोटी और अकल में मोटी। उस नीच ने पंडित जी की रही सही प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया। उस बार गाँव वालों का प्रकोप अधिक उग्र रूप धारण कर गया और इसके फलस्वरूप पंडित जी को कई महीनों तक खाट सेवनी पड़ी।

गाँव के पंचों ने एक स्वर में निर्णय करके इन्हें मंदिर से निकाल दिया बचाने बड़े हाथ पाँव मारे मगर किसी ने इनकी एक न सुनी। अब उनकी हालत पतली है।

मामा के भारी नितम्बों को मटकते देख पंडित जी के चन्दन रचित ललाट की सलवटें तन गईं। उनकी उदास और धुँधली आँखों में नई चमक आ गई। जब वह पास से कतराकर निकलने लगी तो वे अपने आप को न रोक सके और अपने होठों पर जीभ फेरकर बोले—'मामा जी बड़ी है ना! वाह जैसा सुना—वैसा ही पाया। धन्य धन्य घरों के औरत।

पंडित जी आगे भी कुछ कहना चाहते थे किन्तु घूंघट के एक कोने से झांकते गोमा के आग्नेय नेत्र उनके क्षुद्र प्राणों को तीर के समान चुभ गये। उनकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। इसके अतिरिक्त भोला का वह क्रोधित स्वभाव स्मरण हो आया। भगत आगे सामने से दूर ने था बस कर घोंस जमाए कि सारा नशा हिरन हो गया। इस बदमाश ने कभी भोला नाम को सार्थक नहीं किया। हरामजादा भोला क्या है—बिल्कुल गजब गाला है।

पंडित जी ने शिव शिव का उच्चारण किया और मन मार कर अपने मार्ग पर चल पड़े।

गली के मोड़ पर आकर गोमा जब दूसरी गली में जाने के लिए घूमी ही थी कि किनारे पर महामक्खीचूस महाजन गरीबदास की दूकान पर नजर पड़ गई। ये भी सारे गांव में अपना किस्म के एक अनाथ प्राणी हैं। आज से बीस बरस पहले ये एक मुरिया डार लेकर इस गांव में आए थे। एक छोटी सी परचून की दूकान खोलकर धंधा शुरू किया। संयोग से इनके भाग्य ने पलटा खाया और देखते देखते इनकी यह छोटी सी दूकान तो बड़ी हो ही गई। पक्का मकान भी बन गया। अब तो ये पूरे महाजन बन बैठे। इस विचित्र चमत्कार से हैरान हैं—जैसे किसी अद्भुत तिलस्म के प्रभाव से सब कुछ बदल गया है। यह अज्ञेय रहस्य भी कालान्तर में सर्वविदित हो गया। इन्होंने वही पुराना नुस्खा आजमाया। गांव के किसानों को अधिक सूद पर कर्ज देना आरम्भ किया बेचारे जरूरतमंद इनके फेर में पड़ गए और कोरे कागज पर अंगूठा लगाकर रकम उधार लेने लगे। गांव वालों की आंख तो तब खुली जब कर्ज की रकम समय पर अदा न हुई और उनके नाम से अदालत द्वारा कुर्कियां आने लगीं। किसी का घर किसी का खेत किसी का गाय किसी के बैलों की जोड़ी बिकने लगा। बेचारे किसान पैरों पड़ कर गिड़गिड़ाये सिर धुन कर रोए मगर सब व्यर्थ। इस हृदयहीन पर तनिक भी प्रभाव न पड़ा और वह निरसंकोच

होकर बेशर्मी से लूटता रहा और अपनी तिजोरी भरता रहा।

थोड़ा घास से यारी करेगा तो खायगा क्या ?"—वे भी पंडितजी की इस उक्ति को अक्सर खीस निपोर कर उद्धृत कर देते हैं।

कौन ? गोमा की बहू है ?

सेठजी ने अपनी गद्दी पर फैले शरीर को समेटा और अपनी छोटी छोटी आंखों को रहस्यमय ढंग से झपका कर बोले— बहू ! लाला हम पर बेकार में नाराज हैं। पिछले साल कर्ज की अदायगी में अगर हमने जोड़ी बिकवा दी तो उसमें मेरा क्या दोष ?"

गोमा के आग सी लग गई। वह उनकी कुकीर्ति से भली भांति परिचित थी।

तुम तो जानते हो कि कोई अपना रुपया फोकट में छोड़ने वाला नहीं है। लाला ठाकुर तो यह भी मुझ से रुष्ट है। तुम इन्हें थोड़ा समझा दो ।

गुस्सा तो ऐसा आया कि इस बेईमान का मुंह नोच ले। जोड़ी बिकवा कर इसने एक किसान के दोनों हाथ कटवा दिये। भगवान करे इस दुष्ट को मिरगी आये लकवा मार जाये नरक में सड़े। इन बद्दुआओं के साथ वह उसे घृणा से घूरती रही। सेठ के गाल पर तो जैसे थप्पड़ सा पड़ा।

बड़ा गरूर है इसको।—गरीब दास होठों ही होठों में बड़बड़ा कर इस अल्हड़ जवानी को अतृप्ति से निहारता रहा।

गांव के एक कोने पर चमारों और भंगियों की एक छोटी सी बस्ती है। पास ही तलैया है। बरसात का पानी भरा रहता है। फिर धीरे धीरे वह सड़ने लगता है। गर्मी की तपिश में ऐसी दुर्गंध उठती है कि पास से निकलना भी मुश्किल हो जाता है। चारों ओर कूड़े-कर्कट के ढेर लगे हैं। नंग धड़ंग-बच्चे बकरियां भैंसें, गायें, कुत्ते और पालतू सूअर

र आवारा घूमते रहते हैं।

अब यहा से खेतों की पत्तिया आरम्भ होकर बहुत दूर तक चली हैं। गेहू की सुनहरी बालिया बडी मस्ती म झूम रही हैं। अलसी के र फूल खिले हैं। इस बार शीघ्र ही वर्षा हो गइ अत बुवाई का काम ीक समय पर भली भाति सम्पन्न हो गया। इसके फलस्वरूप आज फसल हुत अच्छा खडी है—किसानों को इस पर बडी आशायें हैं।

खेतों के बीच में से जाने वाली पगडडी पर गोमा आ गई। लह लहाते खेत नाचती बालिया और हसते हुए फूल! भला, किसका मन मयूर प्रफुल्लित हो झूम न उठे। दिनकर की अरुण रश्मिया उनके होठ चूम रही हैं। भवरे और छोटी छोटी चिडिया अनुराग का कौन सा मीठा गीत उनके कानो म गुनगुना रही हैं।

राम राम भाभी।'

कौन?

गोमा घूमकर खडी हो गई।

ओह! देवरजी।'

हा भाभी।

शम्भू समीप आ गया।

ओह मैं तो भूल गई थी कि यह तुम्हारा ही खेत है।'

अच्छा। —शम्भू विस्मय से बोला— इधर से रोज जाती हो, फिर भी भूल गई। अजीब भुलक्कड स्वभाव पाया है तुमने।'

गोमा धीरे स हस दी।

इन दिना गोमा देवर शम्भू से खुलकर बातें करती है। लज्जा और झिझक का वह अव्यावहारिक आवरण यथा समय स्वत ही हट गया। अब वह अनावश्यक दूरी प्राय समाप्त हो चुकी है। वह गोमा का मुहबोल

देवर है। भाभी के सहज स्वाभाविक स्नेह का वह धीरे धीरे अधिकारी सुपात्र बन चुका है।

'देवर जी! खेती पाती करना तुम्हारे बस का काम नहीं। तुम तो खड़िया लेकर पाटी पर आड़ी तिरछी लकीरें खींचो।'

इन दिनों शम्भू ने पचायत की प्रौढ़ शाला में पढ़ना प्रारम्भ कर दिया है। खेतों में काम होने के कारण अधिकांश किसान पढ़ाई छोड़ चुके हैं, लेकिन उस जसे दो चार अभी तक टिके हुए हैं।

'पढ़ने में कोई बुराई है भाभी ?' —शम्भू ने पूछा।

'ना, बाबा ना!' —हाथ मटका कर मुह बनाते हुए गोमा ने उत्तर दिया।

'भला पढ़ने में क्या बुराई हो सकती है! फिर हम समझे मा क्या? तुम ठहरे गियानी धियानी और हम हैं बिल्कुल गवार अपढ़। तुम्हारी बराबरी थोड़े ही कर सकते हैं।'

फिर सिर को झटका देकर, चिबुक पर उगली रखकर विनोद पूर्ण मुद्रा बनाकर गोमा बोली— कहीं वकील वकील बन जाओ तो उस गरीब भाभी को मत भूल जाना।

इस मार्मिक कथन के अतराल में जिस निश्छल हृदय का परिचय मिला उसमे निहित ममता के रस में शम्भू आपाद मस्तक भीग गया। उसने गद गद कण्ठ से कहा— तुम्हें कभी भूल सकता [redacted] भाभी ?

सचमुच शम्भू अपने ही स्वर की ध्वनि से अचानक चौंक उठा। यह ध्वनि हृदय की अतल गहराइयों से निकल कर आई थी। वह मन्त्र मुग्ध सा जसे इसकी प्रतिध्वनि सुनता रहा—सुनता रहा।

"क्या सोचने लगे देवर ?

कुछ भी नहीं।'

प्रकृतिस्थ होकर शम्भू ने कहा और गोमा की हँसती आँखों में आँखें डालकर वह मृदु मृदु मुस्कराने लगा।

गोमा चलने के लिये मुड़ी तो शम्भू भी उसके साथ हो लिया।

उसने गोमा के पहनाव को देखा। बनाव सिंगार पर भी एक हल्की-सी निगाह डाली। परन्तु अब गोमा के सूने पाँवों ने उसे आश्चर्य में डाल दिया।

भाभी!

'हूँ!'

तुम्हारे पाँवों में पाजेब

शम्भू थोड़ा अँटककर आगे के न निगल गया।

अ । —गोमा की नाखी दृष्टि गो आकर शम्भू के मुख पर पड़ी — पहले अपना मन साफ करो ! फिर भाभियों के पगों का पाजेब सुनना।

शम्भू निरुत्तर।

यह न तथा कथित देखने पर जितना सरल और सीधा लगता है... जितना दृष्टिगत अत्यन्त सकुचित तथा निम्न है। नारी के ... र ... ना क कर ... है ... अत्यन्त ... ट और सोधा मनावृत्ति गहन अधिक ... है। ... वासनापूर्ण ... के ... सौन्दर्य की अभिव्यक्ति साधक है। ... हृदय के ... भाषा के माध्यम द्वारा उसका ... कर पाती। ... और मधुर ... मधुरता ... कर रह जाती है।



"जीजी जीजी !"

गोमा जब खेतों को पार कर रही थी—तब पीछे से अचानक रूपा ने पुकारा। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि रूपा गोमा की अंतरंग सखी है। यद्यपि दोनों की जाति भिन्न है— आयु में भी अन्तर है तथापि इस थोड़े से समय में ही दोनों में हार्दिक मैत्री भाव उत्पन्न हो गया है। वे परस्पर एक दूसरे के मन की बातें सुनती हैं—समझती हैं। किसी विशेष समस्या या उलझन पर अपनी बुद्धि के अनुसार विकल्प पेश करती हैं। वे शीघ्र ही एकमत भी हो जाती हैं। इस अल्प समय में इस प्रकार का संबंध हो जाना प्रायः कोई आश्चर्यजनक नहीं है। परन्तु यह एक संयोग अवश्य है। मानव मन में विशेष गुण है। वह समान प्रकृति वाले व्यक्तियों को पहचान कर उन्हें समीप लाने में सहायता प्रदान करता है।

रूपा गोमा के सम्मुख आकर खड़ी हो गई।

जीजी ! तुम तो बिल्कुल बहरी हो गई। बड़ी दूर से पुकार रही हूं।— और तुम हो, जो सुनती ही नहीं।'

उसकी उखड़ी हुई सांस से वाक्य का क्रम क्रमशः टूटता चला गया। इससे प्रकट हो रहा है कि वह भागती सी उसके पीछे पीछे चली आ रही है।

गोमा ने उसकी आंखों में झांका तत्पश्चात् अपनी पुतलियों में जिज्ञासा का भाव जगाए मृदु स्वर में पूछा— ऐसी क्या खुशखबरी है?

"कुशलबरी नहीं है पर सोचा कि दोनों बातें करती चलेंगी तो रास्ता सहज ही में कट जाएगा।" रूपा ने हंसकर उत्तर दिया।

ओह ! यह बात है।

दोनों धीरे धीरे चलने लगीं। रूपा भी अपने ससुर के लिए मत में रोटी लेकर जा रही है। भोला के खेत के पास ही उनका अपना खेत है।

दो स्त्रियों का चुपचाप चलना प्रायः सम्भव नहीं है अतः बातचीत का सूत्र किसी न किसी प्रकार आरम्भ तो हो।

'जीजी।'

'हूं।'

"आजकल पाजेब पहनना कैसे छोड़ दिया।'

'ऐसे ही। कोई खास बात नहीं।

गोमा टाल गई।

बस बात जैसे खत्म हो गई। रूपा को लगा कि इस असह्य मौन से तो रास्ता कटना मुश्किल होता जा रहा है।

एकाएक रूपा के अधरों पर दुष्ट हंसी की खामोश थिरकन आकर बैठ गई। उसके अंतराल में किसी मीठी शरारत की परछाई झांकने लगी। अंत उसने पूछा—'एक बात पूछूं ?'

'पूछो। रोकता कौन है।"

एक क्षण के लिये रूपा ने रहस्यमयी दृष्टि डाली तो गोमा उसे एक शांत और उद्विग्नहीन मूर्ति सी दिखाई दी जिसके हृदय में आनन्द की मंदाकिनी मंद मंद गति से बह रही है।

'सुना है जीजा जी तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।'

गोमा के दोनों कपोल सहसा अरुण हो उठे। उसकी मोटी मोटी आंखों की गहराइयों से निकलकर एक नि:शब्द मुस्कान सलज्ज उषा की

भाति जसे क्षितिज पर फैलती चली गई। सारा मुख मडल अपूर्व सुख एव अ यक्त हर्ष की मनोहर आभा से उद्भासित हो गया है। चचल लट गाल के तिल को छूकर बडे अन्दाज मे झूमने लगी है। कभी कभी वह उसकी खमदार भृकुटि को चूम कर मस्त हो जाती है।

इसमे अचरज की कौन सी बात है। हरेक मरद अपनी लुगाई स प्यार करता है ।

इसके साथ गोमा के चेहरे पर नटखट चमक आ गई।

"पर तुम्हारी बात न्यारी है।'— रूपा रस लेकर बोली – जीजा जी और तुम्हारी उम्र मे फर्क है, सो कहा फूल सी तुम और कहा वे ।

'अरी चुप। उम्र का कोई फर्क नही होता।'

रूपा अब फिर मे हस पडी।

गोमा उसकी चाल समझ गई, निगोडी ने छेडने की गरज से कहा है। वह तनिक झेंपकर चुप हो गई।

रूपा की बन आई। शरारत पर उतर आई और गोमा की बगल में चिकुटी काटी। उसके मु ह से हल्की सी चीख फूट पडी। धीरे धीरे सारा वातावरण मधुर हसी से मुखरित हो उठा।

'क्यो तू भी उन्हें खूब प्यार करती है ना।'—रूपा ने पुन कचोटा।

गोमा की नस नस व नाजुक सी झुकी झुकी पलको से निकल कर प्यारी सी मुस्कान पुन उसके रसीले अधरो पर बिखर गई। अपने हृदय के असीम आनन्द को दबाकर वह विह्वल कण्ठ से बोली— ऊहू ! पगली जब मन का मीत मिल जाए तो नरक भी सरग हो जाता है।'

अच्छा।'

रूपा खिलखिला पडी। गोमा फिर लजा गई। ॰ ॰ ॰ त भी इधर

उधर देखती रही।

तभी खेत म से चरती हुई एक भैंस निकल कर पगडंडी पर था गई। दोनों रुक गई। रूपा की हंसी का प्रवाह भी थमा। हल्का हुक्का मार कर भैंस को वहा से हटाया तब कहीं जाकर आगे बढ़ी।

प्राय कुछ ही क्षणों का यह अनायास मौन कुछ खलने लगा। अब गोमा भी सम्भल गई। उसने कुटिल हास्य के साथ रूपा को छेड़ा—

तू तो दूसरे की बातें खोद खोद कर पूछती है, पर कुछ अपनी भी कह।

'क्या ?'—रूपा बड़ी भोली बन कर पूछ उठी।

'अच्छा जी जैसे कुछ बेचारी जानती ही नहीं। —गोमा ने एक हल्की सी चपत रूपा के गाल पर जड़ दी— जरा अपने छोटे से बलमा के हाल चाल सुना।'

अब तो रूपा लाज से एकदम गुलाबी हो गई। उसकी आँखें धरती मे धसती चली गई। गोमा क्यो कसर रखती ? वह इस सुअवसर को कैसे जाने देती ? बस खूब चटखारे लेकर उसे चिढ़ाने लगी— छोटे से बलमा मोरे आगन म गिल्ली खेल आगने म गिल्ली खेल छोटे से बलमा मोरे आगने म गिल्ली खेले।'

रूपा इस अप्रत्याशित व्यवहार के लिए कतई तैयार नहीं थी। उसका सारा उत्साह ठडा पड गया और चेहरे पर तो जैसे हवाइया उडने लगी।

'मान भी जाओ जीजी। —भर्राये गले से रूपा गिडगिड़ाई।

नहीं तो रो देगी।'—गोमा ने जीभ निकाल कर कहा।

रूपा रामू गूजर की बेवा है। उसके पति को मरे लगभग पाच साल हो गए हैं। उसकी मृत्यु के समय रूपा की आयु केवल तेरह बरस की थी। परन्तु गूजर जाति म अपना एक विशेष रिवाज है, जिसके अतगत बडे

भाइ की वधा को छोट भाद को चूडी पहनाकर घर म बैठा लेत हैं। बस इसी स्थिति म रुपा है। रूपा का दवर छोटा है। अभी व्याहने योग्य उसकी उम्र नही हुई है। रुपा इस पर आस लगाए बठी है। आशा है माल दो साल मे वह उस पति रूप म ग्रहण कर लेगी।

विषण्ण मुख लटकाए डबडबाइ सी आखे लिये रुपा को जब देखा तो गोमा को तनिक सा खेद हुआ। अब तो सहसा उसके मन म दया और सहानुभूति भर आई।

'रूपा ! मैं ता ममखरी कर रही थी और तू है जो बुरा मान गई। अच्छा चल, अब नही कहूगी।

मधु स मीठे न ने तत्काल ही प्रभाव डाला। रुपा का मुख विकार रहित अम्लान एव हृदयग्राही मुस्कान से खिल उठा, जस सुबह की नम, ताजी और प्यारी सी धूप धरती पर उतर आई है।

'रूपा।

हा।

'मैं एक सवाल पूछू ?'

'पूछो।'

'जिस पर तू आस लगाए बैठी है अगर कहीं पर निकलने हा वह पछी की तरह उड गया तो क्या होगा ?"

'कसे ? —रूपा आशकित हो चौंक पडी। सम्भवत इस प्रश्न या जिस समस्या पर उसने कभी विचार नही किया है।'

'अरी, किसी नई चिडिया के पर म पडकर तुझे अगूठा बता जाए तो ?

रुपा तनिक घबराई। यद्यपि उसने पूण आत्म विश्वास के साथ कहा— न जीजी ! ऐसा कभी नहीं हो सकता।

जरा ध्यान हा रखना जमाना बडा खराब है।'—गोमा न मुस-

उधर देखती रही।

तभी खेत में से चरती हुई एक भैंस छिटक कर पगडंडी पर आ गई। दोनों रुक गईं। रूपा की हंसी का प्रवाह भी रुका। हल्का हांका मार कर भैंस को वहां से हटाया तब घड़ी जाकर आगे बढ़ीं।

प्रायः कुछ ही क्षणों का यह अनावश्यक मौन रूपा को खलने लगा। अब गोमा भी सम्भल गई। उसने कुटिल हास्य के साथ रूपा को छेड़ा—तू तो दूसरे की बातें खोद-खोद कर पूछती है, पर कुछ अपनी भी कह।

क्या ? —रूपा बड़ी भोली बन कर पूछ बैठी।

"अच्छा जी, जैसे कुछ बेचारी जानती ही नहीं। —गोमा ने एक हल्की सी चपत रूपा के गाल पर जड़ दी— जरा अपने छोटे से बलमा की भी हाल चाल सुना।

अब तो रूपा लाज से एकदम गुलाबी हो गई। उसकी आंखें धरती में धंसती चली गईं। गोमा क्यों कसर रखती ? वह इस सुअवसर को कैसे जाने देती ? बस खूब चटखारे लेकर उसे चिढ़ाने लगी— छोटे से बलमा मोरे आंगन में गिल्ली खेलें ... आंगने में गिल्ली खेलें ... छोटे से बलमा मोरे आंगन में गिल्ली खेलें ...।

रूपा इस अप्रत्याशित व्यवहार के लिए कतई तैयार नहीं थी। उसका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया और चेहरे पर तो जैसे हवाइयां उड़ने लगीं।

'मान भी जाओ जीजा।'—भर्राये गले से रूपा गिड़गिड़ाई।

' ... नहीं तो रो देगी ...।'—गोमा ने जीभ निकाल कर कहा।

रूपा रामू गूजर की बेवा है। उसके पति को मरे लगभग पांच साल हो गए हैं। उसकी मृत्यु के समय रूपा की आयु केवल तेरह बरस की थी। परन्तु गूजर जाति में अपना एक विशेष रिवाज है जिसके अन्तर्गत बड़े

भाद की बवा को छोट भाई की चूडी पन्नाकर घर म बठा लेत है। उम इमा स्थिति म रूपा है। रूपा का दजर छोटा है। अभी ब्याहने योग्य उसका उम्र नही हुई है। रूपा इम पर आस लगाए बैठी है। आशा है, साल दो साल मे वह उम पति रूप म ग्रहण कर लेगी।

विवण्ण मुख लटकाए ग्राई सी आखे लिये रूपा का जब देखा तो गोमा को तनिक-सा मद हुआ। अब तो सहसा उसके मन म दया और सहानुभूति भर आई।

'रूपा ! मैं तो मसखरी कर रही थी और तू है जो बुरा मान गई। अच्छा चल, अब नही कहूगी।

मधु मे मीठे शब्दो न तत्काल ही प्रभाव डाला। रूपा का मुख विकार रहित अम्लान एव हृदयग्राही मुस्कान से खिल उठा जसे सुबह की नम ताजी और प्यारी सी धूप धरती पर उतर आई है।

रूपा !

हा।

"मैं एक सवाल पूछू ?

'पूछो।

जिस पर तू आस लगाय बैठी है अगर कही पर निकलने हो वह पछी की तरह उड गया तो क्या होगा ?'

कसे ? —रूपा आशंकित हो चौंक पडी। सम्भवत इस अप्रत्याशित समस्या पर उसने कभी विचार नही किया है।"

'अरी किसी नई चिडिया के फेर म पडकर तुझे अगूठा बता जाय तो ?

रूपा तनिक घबराई। यद्यपि उसने पूर्ण आत्म विश्वास के साथ कहा— नही जीजी ! ऐसा कभी नहीं हो सकता।

जरा ध्यान हो रखना जमाना बडा खराब है। —गोमा न गुरु

गम्भीर वाणी में उसे एक सान्त्वना दी।

रूपा की आँखों में नई चमक आ गई। उसने दृढ़ स्वर में कहा—'काकी! मैं भी एक गूजर की बेटी हूँ। अगर यह मुझे धोखा देगा तो मैं भी उसे ऐसा मजा चखाऊँगी कि बच्चू जिन्दगी भर याद रखेगा।'

रूपा का यह प्रखर कठोर स्वर उसके अन्तिम निश्चय की स्पष्ट अभिव्यक्ति है। गूजर जाति स्वभाव से स्वाभिमानी है। वह किसी का दबा कर न जीना। उसे तो अपने भुजबल पर अटूट विश्वास है—भरोसा है। वही रक्त आज भी रूपा की धमनियों में बह रहा है। यदि किसी ने उसके विश्वास के साथ छल किया तो उसके परिणाम भयंकर होंगे। वह चुप नहीं रहेगी—यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

अब वे खेत के समीप आ गईं। अब गोमा अपने खेत में और रूपा मसरू के खेत में घुस गई। जाते-जाते केवल मैत्रीपूर्ण मुस्कान का परस्पर आदान-प्रदान हुआ। कल मिलने का एक दूसरे को परस्पर वचन भी दिया गया।

हा… हो… हो।

भोला हाथ में गोफण लिये पत्थर फेंक कर चिड़िया उड़ा रहा है। मचान के किनारे पर बैठा गेरू खेल रहा है। यद्यपि मौसम शरद है तथापि धूप में पर्याप्त गर्मी है। हवा की गति भी तीव्र हो गई है।

गोमा मचान पर चढ़ी। टोकरी उतार कर वह बैठ गई। अपनी ओढ़नी से पसीना पोंछा और तनिक सुस्ता कर अपनी थकान मिटाने लगी।

'माँ आ गई… माँ आ गई!'—एकाएक बालक चिल्लाया और दौड़ कर गोमा से लिपट गया। फिर वह उसकी गोदी में धम कर बैठ गया।

गोमा ने उसे अंक में भरा। उसके गालों को बड़े दुलार से चूम

नया रूप देख रहा हूं।

"नया रूप ?'—गोमा हैरत में पड़कर बोली।

हो! —भाव भीने स्वर में भोला ने कहा। परन्तु इसे परिहास का नया रंग देकर पूछ लिया— गोरी! आज यह बिजली किस पर गिरेगा ?

ओह! —गोमा के चेहरे पर एक रंग आ रहा है और दूसरा जा रहा है। इसकी जीभ तो जैसे तालू से चिपक गई।

बोल ना ? —भोला ने अतर्भेदी दृष्टि डालकर पुनः पूछा।

अगर ऐसी उल्टी मुल्टी बातें करोगे तो तो।

तो भाग जाएगी। —भोला बीच में बात काट कर गया।

भाव विभोर हो उसका स्वर अंतर की गहराइयों में फूट कर निकल गया—'अब भागना मुश्किल है। पैरों में मोटी मोटी जंजीरें जो डाल दी हैं।

ओह।

और भोला रस भरकर हंसने लगा। उसकी थकावट बेचैनी और बोझ पल भर में समाप्त हो गई। वह प्रसन्न चित्त हो चारों ओर देखने लगा।



संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे भी उत्पन्न होते हैं जिनके हाथ में भाग्य ो रेखा नहीं होती। मध्य रात्रि के निविड अंधकार में जब वे अपनी आंख ोलते हैं तो उनके प्रथम रोदन के साथ सारा घर करुण-क्रन्दन करने लगता । उनको जन्म देने वाली मां प्रसव काल में ही स्वर्गवासी हो जाती है। योग का बात ! मरने वाला अपनी मौत मरता है परन्तु तिरस्कार का ात्र यह अबोध और अकिंचन बालक ही बनता है।

यदि उसका पिता भी अचानक असमय में ही मृत्यु की गोद में सो ाय तो इस नन्हें से जीव पर दुर्भाग्य की परछाईं घनीभूत हो जाती है। य लोग इसे घृणा एवं अवरोधभरी दृष्टि से कोसते हैं। कालान्तर में यह परित कीड़े-मकौड़ों के संग गन्दी नालियों और गुमनाम गलियों में पलता । यद्यपि इसे चारों ओर से दुत्कारें, गालियां और फटकारें मिलती हैं थापि यह उन कटूक्तियों के बीच भी निर्बाध गति से बढ़ता चला जाता ।

यही बचपन की कहानी है इस बदनसीब शम्भू की। कभी किसी र की रिश्ते की बुआ ने रखा, कभी बड़ना बनिये की झिड़कियां खाता हा, कोई काका इस घर का नौकर बना कर बगार में रगड़ता रहा। लेकिन यह हंस-हंस कर सब सहन करता रहा। और एक दिन सबने विस्मय ा देखा कि यही शम्भू आज अपने उजड़े घर और वीरान खेती को नये ढंग े संवार रहा है। उसके कष्ट-सहिष्णु स्वभाव एवं कर्तव्य परायण बुद्धि ने ब को मुग्ध कर दिया है। धीरे धीरे उसके प्रति बनी पुरानी मान्यतायें

बन्दने लगी हैं और हृदय में बनी घृणा भी मिटने लगी है। उसकी दृष्टि में एक नया शम्भू बस गया है जो आदर सम्मान का सुपात्र है और वह पुराने शम्भू से सर्वथा भिन्न है।

इसमें सन्देह नहीं है शम्भू हँसमुख मिलनसार और विनोदप्रिय है। उसके होंठों पर सदैव सहृदयतापूर्ण मुस्कान खिली रहती है। चेहरा उसका अपेक्षाकृत सरल और सात्विक है। रंग साफ हल्का सांवला है जो आकर्षक है। उसकी आंखों की चुप चुप दृष्टि किसी अज्ञात भावलोक में डूबी रहती है। उसकी गहराइयों में ऐसी मार्मिकता छिपी पड़ी है जो अनायास ही दिल पर गहरी चोट करती है। एक तीखी प्यास है—एक ऐसी भूख है जो उसके अंतस के पर्दों को चीर कर फूट पड़ी है उसकी काली पलकों के घेरे में चिर स्थायी रूप से छा गई है। कभी-कभी अस्फुट तड़पते हुए शब्द उसके मुंह से अनचाहे बिखर जाते हैं मगर उन्हें ध्वनि नहीं मिलती है। कैसी विवशता है। कैसी विडम्बना है।

उसकी आत्मा की सूनी घाटियों में एक प्रकार का सूची भेद्य अंधकार परिव्याप्त है। गुम सुम और अन्यमनस्क दृष्टि कुछ खोजती रहती है।

खोज!

एक पवित्र प्रकाश की खोज जो इस सर्वग्रासी अंधेरे को मिटाकर नीरस और रूखे जीवन में हर्षोल्लास की वर्षा कर दे।

प्रकाश!

स्नेह का अलौकिक प्रकाश जिसके लिये उसका हृदय बचपन से तरस रहा है। उसके तनिक से स्पर्श से आज उसके सूने प्राण स्पन्दित हो सकते हैं। प्रत्येक लगने वाली ठोकर और विष से बुझे अपमानजनक व्यंग-बाणों ने घृणा तथा विरक्ति के अतिरिक्त उसे दिया ही क्या है! जब वह अपने अतीत के पृष्ठों पर सरसरी निगाह डालता है तो चहुँ ओर कटु स्मृतियों की कालिमा ही बिखरी दिखाई पड़ती है।

परन्तु कभी तो अभागे के दिन भी फिरते हैं। दर दर की ठोकर खाने वाले याचक की खाली झोली में भी कहीं से दान मिल ही जाता है। कोई कृपापूर्वक उसे स्नेहदान दे ही जाता है और गामा भाभी ऐसी ही निकली। पहली ही मुलाकात में उसे अपनाकर अपने हृदय का सारा वात्सल्य उस पर उडेल दिया है। वह तो जैसे निहाल हो गया। प्रथम बार उसे अनुभव हुआ कि उसका जीवन इतना निकृष्ट और निरर्थक नहीं है—जैसा कि लोग समझते हैं।

धीरे धीरे उसमें अप्रत्याशित परिवर्तन होने लगा है। आज जीवन के प्रति आस्था एवं श्रद्धा इतनी अधिक पहले कभी नहीं थी। उसके प्रत्येक कार्य में अब सुरुचि सम्पन्नता आ गई है और दिन प्रति दिन वह निखरती जा रही है। किसी अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत हो वह आज प्रौढ़ शाला में पढ़ने जाता है। गाँव की प्रत्येक गतिविधि में उसकी दिलचस्पी बढ़ गई है। वह स्वयं हैरान है अपने इस बदले रुख पर।

शम्भू ने दो टिक्कड़ सेंके और फिर रसोई पानी के बर्तनों को लेकर बैठा, जिन्हें धोकर रख दिया। उसने झाड़ू उठाई और नये सिरे से घर की सफाई करने लगा। आजकल दिन भर आंधी सी चलती रहती है धूल धूम से घर भर जाता है। चाहे दिन भर हाथ में झाड़ू रखो, फिर भी इसका अन्त नहीं।

सारा काम खत्म करके उसने दो लोटे पानी सिर पर डालने की सोची। इससे गंदगी और सुस्ती दोनों से मुक्ति मिलेगी। शीघ्र ही इस नये विचार को कार्य रूप में परिणत करने का उसने निश्चय कर लिया।

नई धोती के साथ उसने नया कुर्ता पहना। सरसों के तेल का हाथ मुँह और सिर पर फेरा। उससे ही हाथ और पैर भी मले। अब वह रोटी खाने की तैयारी करने लगा।

'काका काका—!"

इतना कहते हुए नेरू ने घर म प्रवेश किया। उसके पास छोटी सी पोटली है अत शम्भू ने उत्सुक होकर पूछा—'क्या है रे शेरू ?

'मा ने भेजा है।'

उसने पोटली शम्भू के आगे रख दी।

शम्भू ने चटपट पोटली खोली। उसमे दही की एक छोटी सी हांडी है और कटोरे म है बथुए की सब्जी। उसकी आखें एकाएक प्रसन्नता से चमक उठी।

'क्या कहा है रे मा ने ?' भावावेश म शम्भू ने पूछ लिया।

मा ने कहा कि भाग कर यह पोटली शम्भू काका को दे आ बस !' अनासक्त भाव से बालक ने उत्तर दिया।

शम्भू ने चटाई बिछाई। खाने का सामान पास रखा और बैठकर धीरे धीरे खाने लगा।

नेरू ! आज काका के साथ रोटी नहीं खायेगा ?

नही काका ! मैं खा चुका।

'झूठा कहीं का।

'नही। मैं सच कह रहा हू।

शम्भू ने लोटा उठाकर पानी पिया, फिर खखार कर बोला—नेरू ! एक बात पूछू ?

'पूछ।

तेरी नई मा कैसी है रे ?

'अच्छी है।

तेरा लाड भी रखती है ?

'हा।'

मारती तो नहीं ?

नही।'

"ा भू ने ग्रास चबाते हुए प्रश्न किया—'तुझे अपने हाथ से खाना खिलाती है ?"

'हां।'—बालक न तनिक लजाकर कहा— मुझे गोदी म बैठा कर खिलाती है।'

'अच्छा।'

ाम्भू ने ो चार ग्रास उल्टे सीधे लिय और फिर लोटा उठाकर पानी गटक लिया। आसन स उठा और हाथ धोकर माची पर बैठ गया। अब नटू उसकी गोदी मे है और काका भतीजे बडी आत्मीयता के साथ बातचीत कर रहे हैं। दोनों म खूब पट रही है।

'ओ शम्भू भा भा ।

तभी द्वार पर आकर रघुवा कोरी ने आवाज लगाई।

'क्या है रे ?'—प्रति उत्तर म शम्भू ने पूछा।

वह अदर आ गया।

आज हनुमान जी का 'जागण है सो याद दिलान आया हू।'

'वो तो मुझे खूब याद है। तूने बेकार म तकलीफ की —बडी लापरवाही स शम्भू बोला।

ना भइया तेरा कौन भरोसा कर ? पिछली बार भी भूल गया था।'

'अरे गलती एक बार होती है। कोई बार बार थोडे ही होती है। तू चिंता न कर। आज हनुमान बाबे के वो भजन गाऊगा—वो भजन गाऊगा कि लोग सुनते रह जाएगे।

बस-बस। अब विश्वास हो गया।'—रघुवा हस कर कहने

लगा—"क्या करूं, तेरी भौजी ने कहा कि शम्भू देवर को याद किया आयो। उनके बिना 'जागण' का रंग जमता ही नहीं।

'तो तू भी सुनले। आज भौजी से कहना कि तुम्हारा देवर भूल नहीं करेगा। ठठाई की लहर म वो चौकड़ी जमेगी कि बस ।

हृदय में उमड़ आए आनन्द के आवेग को रोक कर शम्भू ने कहा मगर अंतिम वाक्य अधूरा ही रह गया।

'अच्छा अच्छा ।

आश्वस्त हो रघुवा चला गया।

शम्भू उसे काफी देर तक अपलक ताकता रहा।

❀ ❀ ❀

'रानी ! शहर आकर मिल की नौकरी करने में क्या हर्ज है ?'

मन की मन की बात [illegible] आज फिर सिलसिला शुरू होते देर गोमा का चिंतित होना स्वाभाविक है। गोमा कई दिनों से हठ किये बैठा है, मगर गोमा है जो उसकी एक नहीं सुनती। अब ज्यों ज्यों वह इनकार करता जा रहा है त्यों त्यों उसका हठ भी दृढ़ होता जा रहा है। विचित्र दुविधा पैदा हो गई है जिसमें अनेक उलझनें हैं—व्यय की परेशानियाँ हैं।

रानी ने [illegible] से कहा—'मैं इसे ठीक नहीं समझती।'

'रानी ! समझ तो अच्छी है लेकिन [illegible] कब में उठ जाएगी। कुछ [illegible] में पड़ी जाएगा। बाकी सब [illegible] भर के पेट मजूरी भर [illegible] रहेंगे।'

'तो फिर कौन चिन्ता की बात है ! गांव के [illegible] सोने की चढ़ी लगा है।'

वह सब तो ठीक है पर मिल की नौकरी में [illegible] होगा और गुजारा भी क्या [illegible]। आराम से जिन्दगी बसर होगा।

यह सब स्वप्न है स्वप्न है और है मन का भरम !—गोमा का [illegible] विचित्र प्रसार हो गया— मुँह अंधेरे तड़के ही दो [illegible] जाना और [illegible] है। फिर वहाँ तक कोई काम होगा [illegible] है कि यहाँ कहीं [illegible]

रहती है। कभी कभी दुघटनाए भी हो जाती है जिसमे हाथ पाव तक कट जाते हैं। मा बाबा ना मैं नही जाने दूगी। अन्त पर भी यह इसी धुगी भरी।

मरी मरज है। इस तरह डरने मे काम कम चलेगा ! अगर मौत आना है तो वह यहा भी नहीं टलता।

ऐसी बात मुह से मत निकालो। —अनन्तर गोमा के होठ थरथरा उठे।

हमार दियाली ।

अब भोला जसे हार गया। वह गोमा के पास आ गया। उसे मनाने की गरज से बोला— अरी मैं तो ऐसे ही कह रहा था। मैं तुम्हारी मर्जी के बिना कुछ भी नही करूगा। समझी।

यद्यपि भोला ने आश्वासन तो दिया है तथापि गोमा के मन म आशका बनी हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि इन दिनो भोला की मन स्थिति अत्यन्त अशात एव अस्थिर है। वह आवेश म क्या कुछ कर बठे—कहा नही जा सकता।

जब फसल पक कर तयार हो गई और महाजन छाती पर आ धमके तो भोला का रहा सहा धय भी चुक गया। शेष बचे अनाज को देख कर उसका दिल बैठ गया। उदास निराश और चिन्तातुर भोला को रोकना अब उसके बस म नही है।

एक नेक पत्नी की भाति गोमा ने उसे समझाया—धीरज से काम लेने की सलाह दी परन्तु भोला पर तो जसे भूत सा सवार हो गया। वह तो खोया खोया सा रहता। उसकी सूनी सूनी आखो म एक प्रकार की आधी सी उठती नजर आती जो कभी भी गजब ढा सकती है।

लाचार गोमा ने एक दीघ नि श्वास खीचकर चुप्पी साध ली।

सब कुछ भाग्य भरोसे छोड़ दिया मगर उसका मन कैसे आश्वस्त हो ? आखों की नींद और दिल का करार तो जैसे सदा के लिए उससे रूठ गया अर्ध रात्रि के सन्नाटे में अक्सर चौंक चौंक पड़ती है। निश्चित होकर सो नहीं पाती।

एक रात उसकी आखें लग गईं। निरन्तर जागरण से उसके मन प्राण अत्यधिक थक चुके हैं। बोझिल पलकें नींद की परियों की हल्की हल्की थपकियों से बन्द हो गई हैं।

जब सुबह तेज धूप निकल आई और सूरज की किरणें छन कर खिड़की में से आने लगी तो गोमा सहसा चौंक कर उठ बैठी। पक्षियों की प्रभाती और गाय के रम्भाने का स्वर सुनकर उसने एक बार अपने पति के बिस्तर पर दृष्टिपात किया। वह धक सी रह गई—बिस्तर खाली पड़ा है। वह दौड़ कर द्वार पर गई। इधर उधर देखा लेकिन भोना का कहीं पता नहीं। उसने सोचा—शायद जंगल को गये हैं। वह काम में लग गई।

उसने दूध दुहा। नेरू को जगाकर उसके हाथ—मुह धोये और गरम गरम दूध पिलाया। गाय को सानी पानी किया और कण्डे पाथने बैठ गई फिर भी भोना नहीं आया तो गोमा की खोजती बेचैन दृष्टि सुदूर मार्ग पर बिछ गई।

दही मथा। अब रोटियां करने बैठ गई। नेरू हमजोलियों के संग खेलने निकल गया।

गोमा का मन आकुल है—और हृदय आशंकित। अब धीरे धीरे उसे विश्वास होता जा रहा है कि भोना शहर गया है। मिल में नौकरी करने का हठ वह पूरा करना चाहता है—इसी के लिए वह प्रयत्नशील है।

—पर वे कह कर क्यों नहीं गये ? गोमा का मन आक्रोश

स भर गया—उनकी इच्छा के विरुद्ध भला मैं कैसे रोकती !— फिर इस प्रकार कहीं चुपके से घर से बाहर जाना उचित है ? इसका तो यह अर्थ हुआ कि मैं उनके प्रत्येक काम काज में विघ्न डालने वाली ताड़का हूं।

गोमा की आंखों में बरबस आंसू छलक आए।

अगर गाव में उनके इस तरह जाने की खबर फैल जाय तो वह कैसा रूप धारण करेगी ?—गोमा अकस्मात् कांप उठी—अनेकानेक प्रकार की अफवाह फैलाकर परेशान करने लगी। कहीं कहने वालों की जुबानें भी पकड़ी जा सकती हैं। फिर लोग तो मुझे ही उल्टी सुल्टी सुनायेंगे—जी भर कर कोसेंगे और मगर मुझ व द हैं नाज स—नाम स ।

गोमा असह्य मानसिक व्यथा में तड़पती रही—उबलती रही।

थोड़ी देर बाद । कभी उस पति पर क्रोध आता है तो अगले क्षण उनकी नादान हठधर्मी पर तरस भी आता है। नहर जाने की यह घटना उसे दुःख भी देती है और दया भी देती है। दो विचित्र विरोधी भावनाओं का उसके मन में संघर्ष सा हो रहा है।

इसी प्रकार अनमने बैठे बैठे सारा दिन बीत गया। न तो स्नान में रुचि पैदा हुई और न किसी काम ही करने की इच्छा। बस चुपचाप वह चूल्हे के पास बैठी रही। रोटियां और तरकारी ठंडी हो गई। चूल्हा बुझ कर राख शेष रह गई। हवा के किसी भूले भटके झोंके से एकाएक किवाड़ भड़भड़ा उठते हैं तो उसे किसी के आने का भ्रम उत्पन्न हो जाता है। उसके दर्शनाभिलाषी नेत्र और उत्सुक कान तत्काल ही द्वार पर टिक जाते हैं मगर शीघ्र ही भ्रम दूर हो जाता है।

अचानक उसने बाहर किसी की पग रव सुनी। गोमा हर्षित होकर उठी और भावावेश में द्वार की ओर भागी। अपनी गर्दन बाहर निकाल कर जो देखा तो निराशा के महासागर में डूब गई। पास ही एक कुत्ता सूखी रोटी का टुकड़ा लिये इधर उधर घूम रहा है।

गाय रम्भाइ। गोमा धीरे धीरे चलकर उसके पास आ गई। मूक पशु ने उसे बड़ी आत्मीयता से घूरा। गोमा ने पुआल उठाकर डाली। गाय सिर धुन कर खाने लगी है। पता नहीं क्यों गोमा गाय की पीठ पर सिर रख कर फफक पड़ी। किसी अज्ञात मानसिक उद्वेग अथवा किसी अशुभ विचार की परछाई सहसा उसके दुःखी मान में झाक गई।

दिन ढल गया। गोधूलि की वेला भी प्राय समाप्त हो गई। गाव का सारा कोलाहल सिमट कर घरो म घुस गया और चारो ओर पूर्ण तथा शांति छा गई। आसमान नन्हे नन्हे तारों से भर गया, फिर भी भोला नहीं आया।

दिन भर की भूखी प्यासी गोमा से रहा न गया और वह बावली सी कभी घर में कभी बाहर बड़ी बेचैनी से चक्कर काटने लगी। वह ठिठक कर खड़ी हो जाती और बड़ी देर तक सुदूर अंधेरे में तकती रहती। बार बार उसकी व्याकुल दृष्टि को निराश होना पड़ता।

अकेली स्त्री घबरा गई। इधर नेरू ने भी अपने बापू के संबंध में पूरी जानकारी पाने के लिये रट लगाई। यू वह दिन भर उसके कान खाता रहा लेकिन वह बहाने बना कर उसे समझाती रही। अब तो हठ पकड़ कर रोने भी लगा। गोमा अजीब परेशानी में फस गई। सचमुच, वह भी रूआई सी हो गई। अब ता उसने घर म काम लेकर बालक की भोली जिज्ञासा को ठगा। बिल्कुल सफेद झूठ बोलना पड़ा। उसके अट पट प्रश्नों के उत्तर देकर किसी न किसी तरह उसे शांत किया। उसे ढेर सारे खिलौने और मिठाई का लालच देकर सुलाया।

ज्यों-ज्यों रात्रि की कालिमा गहन से गहनतर होती गई—गोमा का कलेजा दुश्चिन्ताओं से बैठता गया। शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के विचारों की लोल लहरें उसके उद्विग्न मानस-सागर के तट से टकराने लगी। अब तो उसका धीरज अपनी अंतिम पराकाष्ठा पर पहुच कर विस्फोटित



भोला शहर से लौट रहा है। आज उसके पैर बड़ी फुर्ती से उठ रहे हैं। तबीयत खराब का बहाना बनाकर वह जल्दी ही छुट्टी लेकर निकल आया। सीधा शहर गया। वहाँ अपने लिये एक नया साफा खरीदा। दुकान पर खड़े खड़े ही बड़ी बेसब्री से उसे बाँधने भी लगा। उस का यह उतावलापन दुकानदार से छिप न सका और उसने कौतूहलवश पूछा—'चौधरी! आज किस खुशी में इस तरह सज रहे हो? कहीं शादी में जाना है?

नहीं सेठजी!—भोला ने सरलता से उत्तर दिया—मेरे पास केवल एक ही साफा है जो फट चुका। आज नया खरीदा है।

अच्छा अच्छा।'—फिर दुकानदार ने एक शरारत भरी चुटकी ली—भई, चौधरन के लिये भी कुछ।

चौधरन।

भोला इस बार समझ गया अत बोला—सेठजी! मैं चौधरी नहीं हूँ, राजपूत हूँ।

ओह माफ करना भाई!

दुकान पर दूसरा ग्राहक आ गया। दुकानदार उससे बातचीत करने लगा। अब भोला भी अन्य सौदा खरीदने के अभिप्राय से आगे बढ़ गया।

अंधेरा झुक आता है—तब कहीं भोला लौटता है। अंधेरे में ही जाना और अंधेरे में ही आना ! कभी कभी उसे बड़ी खीझ उत्पन्न होती है। एकाध बार तो इतनी ग्लानि हुई कि इस मनहूस नौकरी को ठोकर मारने का इरादा तक कर लिया, लेकिन इस क्षणिक भावना पर भी बड़ी मुश्किल से संयम रखा। अब उसे पता चला कि गांव में ही अपने खेत में काम करना बड़ा अच्छा है। शीघ्र ही इस विचार को त्यागना पड़ा, चूंकि गोमा के लाख विरोध करने के बावजूद भी वह नहीं माना था तो अब नौकरी छोड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता।

सबसे बड़ी कठिनाई तो यह है कि मिल के भीतर का जीवन उसके अनुकूल नहीं है।

जीवन ! रूखा सूखा नीरस और कठोर ! जैसे तलैया का अवरुद्ध जल जिसकी गतिशीलता किनारों की बांहों में घिर कर प्रायः समाप्त हो जाती है। वहां का प्रत्येक व्यक्ति मशीनों के साथ रहने से एक प्रकार की मशीन सा बन गया है। पारस्परिक सद्भाव प्रेम एवं दया जैसे मानवीय गुणों का तो यहां एक प्रकार से अभाव ही है केवल ईर्ष्या द्वेष वैमनस्य, राग आदि अवगुणों का बाहुल्य है। झगड़े फसाद तो बड़ा साधारण-सी बात है। लगता है जैसे अपराध की प्रवृत्ति उनमें बढ़ती जा रही है।

बेचारा भोला देहाती उनके बीच में बुरी तरह फंस गया है। गांव के उन्मुक्त वातावरण में पला वह स्वतन्त्र जीवन ! उसकी हर सांस में खेतों की खुशबू है। उसकी प्रत्येक हंसी में निर्झर की सी निर्मलता है और स्वभाव में है झूमती हुई बालियों की मस्ती ! और दूसरी ओर है—ये लटके हुए चेहरे जैसे उन पर कालिख पुती है। खोई खोई उनींदी आंखें जिनकी ज्योति कभी की बुझ चुकी है। टूटा हुआ दिल जिसकी हसरतें कभी की मर चुकी हैं। सचमुच दूर से देखने पर डूंगर सभी सुहावने दिखते हैं मगर पास जाने पर बड़ी निराशा होती है।

आह ! —भोला के कण्ठ में फंसी फंसी सी एक नैराश्यपूर्ण आह

पूर निरानी।

भोलासिंह !

हो ।

अपने इस नय सम्बोधन पर उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ। अब वह पुकारने वाले को सशीतुः ताकने लगा।

राम राम भाई ! —पुकारने वाला बगल से घूमकर एकदम सामने आ गया।

पाई लागी पंडित जी !

जीते रहो—जीते रहो।

पंडित जी ने हाथ उठाकर उसे आशीर्वाद दिया फिर पूछा—सुना है आजकल तुम शहर में नौकरी करते हो ?

'हां पंडित जी ! —भोला ने उत्तर दिया— आपकी कृपा से मिल में लग गई है।

'बहुत अच्छा बहुत अच्छा।

क्षणिक रुक कर वे बोले—'जजमान ! कम से कम मुझ से पूछ कर तो नौकरी पर जाना था। मैं शुभ मुहूर्त निकाल कर बता देता। मगर तूने बिल्कुल ही भुला दिया। इतना पराया हो गया हूं मैं ।

पंडित जी के स्वर में एकाएक कम्प आ गया।

भोला सकपका गया। उसे कोई उपयुक्त उत्तर नहीं सूझा। इसके अतिरिक्त उनके अंतिम वाक्यांश ने तो उसके मर्म स्थल का स्पर्श कर लिया है। इन दिनों उनकी अवस्था अत्यंत शोचनीय है। अतः मोम की भांति द्रवित होकर उसने कहा— भूल हो गई पंडित जी ! बहुत बड़ी भूल हो गई। क्षमा करें। यह लीजिए आपकी ।

और उसने अपने कुर्ते की जेब से एक रुपया निकाल कर उन्हें

दिया।

पंडित जी की उदास आंखें चमक उठीं जैसे मुरझे पौधे को थोड़ी सी जल की बूंद अचानक मिल गई है।

'सुखी रहो लाला ठाकुर। सुखी रहो।' —पंडित जी ने तो गद् गद् कण्ठ से आशीर्वादों की वर्षा सी कर दी।

'पुत्रवान धनवान गुणवान ।

यह क्रम पता नहीं कहां तक चलता यद्यपि इसी बीच भोला ने जाना चाहने की गरज से हाथ नहीं जोड़ लिया—'पंडितजी अब चलता हूं।

इससे भी पंडित जी का उत्साह रत्ती भर कम न हुआ।

'जाओ। भगवान तुम्हारा भला ही करेगा।'

पंडित जी के इस थोड़े से सम्पर्क ने उसे प्रभावित किया है। उनके प्रति सहानुभूति उमड़ उमड़ कर उसके मन को भिगा रही है। अब तो उसे एक रुपया देना भी बुरा लगा। दान आ बैठे तो यह कंजूसी कैसी? कम से कम पांच का नोट तो देना था। उसे पछतावा सा होने लगा लेकिन अब क्या हो?

इस बार सेठ फकीर चन्द ने दुकान पर बैठे बैठे ही उसे आवाज लगाई— भोला ।

जय रामजी की सेठजी!

भोला ने खड़े खड़े ही उन्हें अभिवादन किया।

जयराम जी की भाई! —सेठ जी ने बड़ी आत्मीयता से उत्तर दिया तत्पश्चात् बोले— तनिक दुकान पर तो आओ। इस तरह सीधे ही चले जाओगे क्या?

भोला आज प्रसन्न है, अतः वह उनके आग्रह को टाल न सका।

'कहिए, सेठजी ! क्या बात है ?" —भोला ने बैठते हुए पूछा ।

'अरे !'—सेठजी की आंखें अभी फटी रह गई जैसे उन्होंने कोई अजूबा देखा हो ।

'भई तू तो आजकल फटाफट से बोलने लगा है । लगता है तुझे भी शहर की हवा लग गई है ।

सेठजी अब खुलकर हंसी हंस पड़े ।

अपनी हंसी के आवेग को रोक कर वे पुनः कहने लगे— पर बच्चू ! ध्यान रखना यह शहर की हवा बड़ी खराब होती है । अच्छे अच्छे चपेट में आकर चित हो गए है ।

वे पुनः खोखली हंसी हंस पड़े ।

भोला अब बुरी तरह झेंप गया ।

'नहीं सेठजी ! गरीब आदमी हूं । अब वह उम्र भी निकल गई है । क्या बेचारा हवा लगेगी ? बस पेट भरने के लिए मजूरी कर रहा हूं ।'

सेठजी अपनी गद्दी पर पसर गये । भोला के हाथ के पत्र को मदद करते बोले— यह तो बात समझ में आ गई कि तुम शहर में नौकरी करते हो, लेकिन इसका यह तो मतलब नहीं कि तुम सौदा सुलफ भी वहां से खरीद कर लाओ । भले आदमी हमने यह दुकान फिर मक्खी मारने के लिए खोली है ।

भोला चक्कर में पड़ गया । यदि कोई दूसरा समय होता तो वह सेठजी को मुंहतोड़ उत्तर देता । वह अभी तक भूला नहीं है—उसकी बर्बादी में उनका ही प्रमुख हाथ रहा है । परन्तु आज वह ऐसी मनःस्थिति में है कि किसी को भी कड़वी बात कहना मुनासिब नहीं समझता ।

ऐसी बात तो नहीं है सेठ जी ! कुछ जरूरी सामान हो खरीद

कर लाया हूँ।'

अपने कथन का अनुकूल प्रभाव पड़ते देख सेठजी बोले— 'देख भाया ! मैं तो पिछली सारी बातें भूल चुका हूं और तुझ से भी यही कहता है कि अगर तेरे दिल में कोई मलाल है तो वो निकाल ले। बेकार में खिंचे खिंचे रहने से भी क्या ?

'मेरे दिल में तो कुछ नहीं है।

'बस बस, अब भरोसा हो गया।'—सेठजी आश्वस्त होकर कहने लगे— किसी चीज वस्त की जरूरत हो तो बिना झिझक आ जाना। मैं मना नहीं करूंगा।'

'जरूर सेठजी जरूर।'

उनके इस सौजन्य पूर्ण व्यवहार से भोला श्रद्धा प्लावित हो उठा है। आज सेठजी उसके हृदय के उच्चासन पर अनायास ही बैठ गये हैं। उसकी दृष्टि में वे महान बन गये हैं।

आज जो कुछ हो रहा है वह सर्वथा अकल्पित है—अप्रत्याशित है। प्रथम बार आज उसे अनुभव हुआ कि गांव में उसका क्या सम्मान है ?

अचानक उसकी मन की चिड़िया ने फरफुरी ली।

गोमा तो बेकार में रोक रही थी। यह मिल की नौकरी का ही प्रताप है जो सब आदर करते हैं। एक समय था तब ये सीधे मुंह बात न करते थे और अब अब खुशामद करते हैं।''

इन्हीं विचार-तरंगों में डूबते उभरते उसने गांव पार किया।

गोमा रसोई में बैठी दाल बीन रही है। झुटपुटे में उसके बालों पर सूरज की अंतिम किरण का प्रतिबिम्ब इस प्रकार पड़ रहा है—जैसे कोई सोने का तीर। भोला उसकी तन्मयता को प्रेमातुर लोचनों से देखता रहा, तत्पश्चात् उसने थैले में से चुनरी निकाल कर चुपके से उस पर डाल दी।

❀ ❀ ❀

आजकल मिल में ओवर टाईम काम चलता है इसलिए भोला बड़ी देरी से छूटता है। सारा बदन थक कर चूर हो जाता है। जोड़-जोड़ दर्द करने लगते हैं। फिर दो कोस गांव का रास्ता तय करना पड़ता है बेचारे को नानी याद आ जाती है।

चारों ओर अन्धकार फैला है। भोला को लगता है जैसे एक महाशून्य उसकी असस की सूनीवादियों में घनी भूत होता जा रहा है।

अपने चन्द साथियों के साथ भोला जब मिल के फाटक से बाहर निकला तो उसके पर मन मन भर के हो रहे हैं। आंखों में जलन और मस्तक में हल्की हल्की पीड़ा आरम्भ हो गई है। मीठी मीठी खारिश के साथ गला अब सूखने भी लगा है। पपड़ी जमे होठों पर प्यास ऐसे चिपक गई है, जो पानी से भी बुझने वाली नहीं है।

भोला के साथियों ने परस्पर रहस्यपूर्ण ढंग से कानाफूसी की, फिर उसके पास आकर बोले— भोला ! आज तुम गांव मत जाओ।

'क्यों ?'—वह तो एकदम आश्चर्यान्वित होकर पूछ बैठा।

'यार, तुम बुरी तरह थक चुके हो, ऊपर से इतनी रात भी हो गई है। तुम्हारा जाना ठीक नहीं।

'अरे वाह आज कैसी बातें करते हो ? रोज ही जाता हूँ। आज कौन सी नई बात हो गई ?

"लेकिन आज जा नहीं पाओगे।' —किसी साथी का तभी दृढ निश्चय सुनाई पड़ा।

नही नहीं, मैं तो जाऊंगा।"

भोला घबरा सा गया।

"अब जोरू के मजूर !' —उनमे से एक हसकर बोला—'सीधी तरह चलता है या एक धोल जमाऊ।"

"नही नहा ।

"बेचारा अपनी नई लुगाई से बड़ा डरता है। एक दिन टाइम पर नही जाएगा तो वह झाड़ू मार कर घर से बाहर निकाल देगी। डरपोक कहीं का।'

फिक से हसकर सब ने उसका मजाक उड़ाया।

अब सबने उसे जबरदस्ती पकड़ा और घसीट कर ले जाने लगे। वह विरोध मे चीखता चिल्लाता रहा मगर वहा कौन सुनने वाला है।

आधी रात के बाद यह टोली एक ऐसे स्थान से निकली, जहा की फिजा म मदहोश बनाने वाली हवा निर्बाध गति से घूमती है। पैर डगमगाने लगते हैं। जीभ अनर्गल प्रलाप करती है। आखो के रक्तिम डोरे तन जाते हैं। उनमे जीवन की रंगीनिया गहरी होकर भर जाती हैं।

क्यों, भोला ! यार कैसा रहा ?'

'ब बडा म मजा आ आया राम कसम !

'तुम तु म तो आ आगे जा जा रहे थ ।

' मै मैं ग गधा था ।'

अब घर जाना था था था ।"

'अबे, गो गाली मा मार घर को। अपने रा राम तो य यहीं ।'

इतना कहकर भोला बीच सड़क म पर फलाकर पसर गया।

'गया ।'

इसका एक साथी बिद्रूप भरी हसी हसा।

बेटा! एकदम काम स गया।

उसके साथी उसे उठाने का प्रयत्न करने लगे।

'नहीं। ह ह हम तो यहीं सो यें ।

भोला ।'

तुम !'

उठ।

क्यों ?'

यह सड़क है।

किसी के बाप की न नहीं है।

अब व भोला का हाथ पकड कर खींचने लगे।

अरे हट्ट ।'

चलना है द ।

इस प्रकार धरपम धक्का और खींचातानी करत हुए वे अपने अपने घरा पर पहुँच। जिस आदमी क जिम्म भोला पडा—उसे थोडी परे शानी उठानी पडी। अन्त म वह भोला को एक खाटी पर सुलाने में सफल रहा।

सुबह जब आंख खुली तो रात की सारी घटनायें भोला के अन्त

मन में कटु स्मृतियां बनकर क्रमश: घूमने लगी। विषैले धुए के गोले से उठने लगे जिसमें दम सा घुटने लगा। धीरे धीरे बाहरी उदासी में पूरी तरह डूब गया।

दिन भर उसका मन न लगा। कोई कांटा है जो अन्दर ही अंदर चुभ रहा है। गोमा की वे तरसती आंखें जो सदैव उसकी अगवानी में पलक पावड़े बिछा देती हैं, आज रो रो कर सूज गई हैं। उसका वह स्नेह सिक्त हृदय, जो पति पर न्यौछावर होने के लिये हर घड़ी तैयार रहता है बार बार अनिष्ट की आशंका में डूब डूब रहा होगा और और।

'आह !''

अपनी इस हृदयहीनता पर उसे अत्यन्त क्षोभ उत्पन्न हुआ।

अब ?

समय खत्म होने से पहले ही उसकी अधीरता इतनी अधिक बढ़ गई कि उसे विवश होकर छुट्टी लेनी पड़ी। अब तो उसके भारी भारी पैर भी अपने आप फुर्ती से घर की ओर उठने से लगे।

घर पर पहुंचा तो वहीं पड़ौस की स्त्रियों का अच्छा खासा जमघट देखकर वह अचानक घबरा गया।

'ऐसी क्या बात हो गई है जो जो ?'

अनेकानेक दुश्चिन्ताओं से उसका बनाव मन परिवेष्ठित हो गया। कभी एक स्त्री निकलती है तो दूसरी अन्दर चली जाती है। सब व्यस्त हैं। किसी को भी क्षण भर ठहर कर बात करने की भी फुरसत नहीं है। आखिर यह सब क्या माजरा है ?

देहली पर उसका पांव रखना हुआ कि सामने उसे शम्भू मिल गया। उसका चेहरा विचित्र-सी थकनी और दुःख से निष्प्रभ हो रहा है।

भोला ने पूछा— क्या बात है शम्भू ?'

शम्भू की दृष्टि अचानक कठोर हो गई।

पहले यह बताओ कि तुम रात भर रहे कहा ?"

शम्भू ! बात दरअसल म यह है कि मै मैं मैं ।'

बस भोला की जीभ जसे ऐठ सी गई।

तुम इतने लापरवाह हो गये हो—यह मैंने कभी नही सोचा है। —शम्भू के होठो पर क्रूर व्यग उभर आया— भाभी घर पर बीमार है और तुम्हे तनिक भी फिक्र नही।

बीमार !' —मर्माहत हो भोला चीख पडा।

'हा, बीमार। —शम्भू कहने लगा— कल शाम को नदी पर उनका पर फिसल गया और और ।"

"हूँ !

भोला के प्राण ऐसे छटपटाए जसे निकलने वाले हो। एक पल का विलम्ब किये बिना वह घर मे घुस गया। कोठरी मे से निकल कर पड़ोसिन औरतो का एक छोटा-सा झुड सहसा उसके सामने पड गया। अब क्या था ? सब उसे कोसने लगीं।

"क्यो रात भर कहा रहे ?'

"मौसी ! शहर की हवा लग गई है।'

'दारू पी छला बना रात भर घूमता होगा।"

'अब लुगाई को कौन पूछे ? मरे या जिए।

"बेचारी का हमल गिर गया। रात भर तड़पती रही—रोती रही। इस जानलेवा पीडा मे भी वह इस निर्मोही को याद करती रही।'

"भला हो दाई मा का, जि हाने उसे बचा लिया।"

'इस भरतार के पीछे तो मरी ही समझो। यह तो किस्मत ही अच्छी है जो ऐन वक्त पर शम्भू आ गया, वरना बेचारी चीखती चिल्लाती वहा नदी किनारे ही प्राण तज देती।'

'ओह!"

इन निर्मम तीक्ष्ण कटाक्ष बाणों को सहन करना अब भोला के लिए दूभर हो गया है। उसकी साधारण-सी भूल और नादानी ने कैसा रूप धारण कर लिया है—यह अब स्पष्ट हो गया है।

आत्म ग्लानि और आत्म प्रताडना की तीव्र लहर उसके हृदय में दौड़ गई। उसका सिर अपने आप झुक गया। उसकी आखो मे वेदना साकार हो उठी। वे ऐसी हो रही थी, जैसे बरसते मुख बादल।

'गोमा!"

और वह माची मे पडी उस निर्जीव सी देह की छाती पर सिर रख कर सिसक पड़ा।

'मुझे माफ कर दो गोमा!"—भोला जैसे उद्विग्न और विक्षिप्त हो गया—मुझे छोड कर मत जाओ गोमा!

आश्चर्य!

तभी गोमा की बद पलकें खुली, निस्पद अधर थिरके, रक्तहीन सफेद मुख पर फीकी सी दर्दीली मुस्कान आ गई।

'चिंता न करो अब अब अब मैं ठीक ▮।

'हैं! गोमा! तुमने कुछ कहा!—भोला की कातर आखो की बरसात अकस्मात थम गई। हृदय के अधेरे कोने मे जैसे सहस्त्र आशा-दीप जल उठे।

"हम! मैं मैं अब ठीक ▮।—गोमा की वह मुस्कान

प्रेम की गुलाबी आभा से अधिक मनोहारी हो गई।

सच गोमा!

भोला अपने हर्षोन्माद को बरबस रोक न सका। वह उसके चेहरे पर गरम गरम चुम्बनों की पुष्प-वर्षा भी करने लगा।

❀ ❀ ❀

'देवर !"

हा भाभी !

तुमने मेरी रात दिन दग भाल करक मझे बचा लिया।'

'यह कोई ऐहसान थोडे ही है।'

ठीक है। अब तुम्हें तकलीफ उठाने की जरूरत न ी है।'

'वाह ! इसम तकलीफ कैसी ? अपने घर बठा नहो रहा और पास ही दा घडी बैठ गया तो क्या घर जाऊगा ?'

'कि तु अब इसकी भी जरूरत नही तुम्हे भी तो आराम मिलना।

'नही भाभी ! आराम हराम है।'

आज भी शम्भू हसकर टाल गया।

भाभा प रूप से गोमा स्वास्थ्य लाभ कर चुकी है, यद्यपि कमजोरी ाप है। घर के काम काज मे हाथ डालती है तो शम्भू आडे आ जाता है उसक हाथ म बतन छीन लेता है। एक मद रसोई पाना कर और र टुकुर देखती रह यह ला बडी शम की बात है। पर ■ वह कर भी उसका यह मु हबोला देवर माची पर स उठने ही नही देता।

कभी विनाद की मुद्रा में वह कहती है—लगता है मुझे अब

देवरानी की खोज शुरू करनी होगी।'

'क्या मतलब?'

'मेरा यह अनाथ देवर अपने हाथ से टिक्कड़ सेक सेक कर खाता जा रहा है।

'भाभी!'

शम्भू एकदम बुझ गया। अपने हाथ के काम को छोड़ कर वह गोमा के समीप चला आया। उसकी आखों में दृष्टि गड़ा कर संजीदगी से कहने लगा— भाभी! मेरी आखों में झाक कर कहो कि मैं अनाथ हू।

गोमा तो सन्न सी रह गई। उसकी साधारण सी हसी की बात इस तरह चोट भी कर सकती है—उसे स्वप्न में भी आशा नहीं थी। अब तो उसे खेद है—पछतावा है।

शम्भू भी समझ गया कि वह आवेश में अर्थ का अनर्थ कर बैठा है, बात पलटने की गरज से होठो पर जबरन हसी खींच लाया।

'भला मैं तुम्हारे रहते अनाथ कैसे हो सकता हू?'

गोमा ने गहरी और विश्वासपूर्ण निगाह डाली।

'हा भाभी! तुमसे अधिक मेरा अपना कौन है!'—अधिकार पूर्ण स्वर में शम्भू ने कहा।

'हिश, ऐसे भी कोई कहते हैं।'

गोमा के मुख पर चमक आई अनुराग की वह मोहक अदा शम्भू को भा गई। वह तो जैसे निहाल हो गया।

'सच भाभी! ओह ।

'पगले कहीं के ।'

अब गोमा खिलखिला पड़ी। उसके अधरों के बीच सफेद दंत

पंक्ति मोतियों की लड़ी के सदृश चमक उठी है।

× × ×

शराबी का पग एक बार बाहर पड़ कर फिसल जाता है तो फिर उसका सम्भल पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है। उसकी मित्र मंडली इसमें हार्दिक सहयोग प्रदान करती है और उसके वापिस लौटने वाले पगों में एक मोटी बेड़ी डाल देती है। इसके अतिरिक्त बुराई में भी एक ऐसी आकर्षण शक्ति होती है जो अपनी ओर ललचाई दृष्टि से देखने वाले को तत्काल ही आगोश में समेट लेती है। पहले पहल उसका दम घुटता है, गला सूखता है आखों में कसैला धुआं सा भर जाता है, फिर भी उसके होठों पर ऐसा स्वाद लग जाता है कि नित चाह कर भी छोड़ा नहीं जा सकता। उसे चखने के लिए मन आतुर रहता है।

यही हाल भोला का है।

गोमा जब तक बीमार रही उसने कुछ दिन की छुट्टियां लीं फिर नौकरी पर भी जाता तो समय पर लौट आता। लेकिन इधर ज्यों ज्यों वह ठीक होती गई—त्यों त्यों भोला की लापरवाही बढ़ती गई। कुछ मौके ऐसे भी आए कि गोमा ने सारी रात आशा में काटी और वह सुबह तक गायब। लौट कर आया तो रूठी गोमा की लगा करने खुशामद! मित्र शिकायत के बाद अक्सर समझौता हो ही जाता है। मानव स्वभाव है। भोला कान पकड़ कुसूर के लिये माफी मांगता है और आइंदा गलती न करने की कसमें खाता है।

परन्तु फिर भी कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी।

गोमा अब गम्भीर रहने लगी है। पति के नये व्यवहार से वह आतंकित है—भयभीत है। रह रह कर अज्ञात दुश्चिन्तायें उसे सताती रहती हैं। अब उसका मौन विरोध मुखर होने लगा है। आए दिन झगड़ा कर बैठती है। इसका दुष्परिणाम यह निकला कि अब भोला छक कर पीता है।

सकोच का वह झीना सा व्यवधान कभी का फट चुका है। अपने ही गाव में पियक्कड़ों की टोली म बडे शौक से शरीक हो गया है। एक अजीब मस्ती के आलम म उसकी जिंदगी गुजर रही है। न उसे कल की चिंता है और न आज का सोच। बस उसके सारे गम तो बोतल की नशीली गध म घुल मिल गये हैं।

गोमा जलती है तो जला करे। रोती है—रोया करे। यहा किसे परवाह है! यदि गालिया बकती है तो उलट मार खानी पड़ती है। आजकल उसकी आखों के आसू भी सूखने नही पाते। दुर्भाग्य की अशुभ छाया उसके जीवन पथ पर काली घटायें बन कर छा गई है जिसके गर्भ म उसका वर्तमान और भविष्य धीरे धीरे डूबता चला जा रहा है।

लोग हसते हैं—ताने कसते हैं। फिर ऊपर गाव की अपढ गवार स्त्रियों म ईर्षा का भाव अत्यंत तीव्र होता है भला वे कहने से कब चूकती? किसी का घर जलता है तो उनकी बला से। वह तो चटखारे लेकर अनावश्यक बातें बनाने म आनन्द ले सा जाता है। किसी का कलेजा छलनी होता है तो हुआ करे? किसे चिंता है!

उनम से बस रूपा ही एक ऐसी है जो उसके रिसते घावों पर ठण्डा लेप लगाकर हिम्मत बधाती है। उसके बहते गम्म गरम आसुओं को अपने आचल से पोछ कर सहानुभूति प्रकट करती है— रो ना जीजी! सुबह का भूला अक्सर शाम को घर लौट ही आता है।

'नही रूपा नही। अब तो तकदीर ही फूट गई है।

गोमा के मुह से दर्दनाक चीत्कार सी निकल पड़ती है।

'ऐसी खोटी बात मत निकाल।'—रूपा का मन संवेदना से भीग भाग जाता है— मर्द की जात है कभी पर उल्ट सुल्टा पड ही जाता है।'

'अरी, बहिन ! उन्होंने तो ब्रह्मचर्य धारण करली है।'—गोमा की हिचकी बंद हो जाती है।

शेष सारे शब्द आंसुओं के आवेग में बह गए। वह सिर धुन कर रोती रही और रूपा उसे समझाती रही।

इन दिनों आशा का केन्द्र बिन्दु तो है शम्भू! गांव में वही एक अकेला व्यक्ति है जो गोमा के दिल के दर्द को भली भांति जानता है। इसका भोला पर भी प्रभाव है। लेकिन जब आदमी की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो अपने भी पराये लगते हैं। भोला ने उसकी नेक सलाह का निरादर ही नहीं किया बल्कि साथ ही उसका भी तिरस्कार किया और स्पष्ट चेतावनी देकर उसने कहा कि मेरे मार्ग में आने की कोशिश न करें। वह अपना भला बुरा खूब समझता है।

इस अप्रत्याशित दुर्व्यवहार से वह बहुत दुखी है।

शराब ने धीरे धीरे अपना दुष्प्रभाव डालना आरम्भ किया। अच्छा खासा व्यक्ति अंदर से खोखला होता चला गया। उसकी अंदर धंसी सूनी सूनी आंखें उस वीरान खण्डहर के समान बड़ी भयानक लग रही हैं जिसकी आबादी कब की उजड़ चुकी है। उसके टूटे कंगूरों पर बैठ कर तो उल्लू अपना मनहूस आवाज में अर्ध रात्रि के सन्नाटे में चिल्लाते हैं—जैसे ये आने वाले विनाश की पूर्व सूचना दे रहे हैं।

फिर जैसी सम्भावना थी—वही हुआ। बीमारी ने अचानक भोला पर हमला बोल दिया और देखते देखते वह माचो पर पड़ गया।

गोमा ने अपना सिर पीट लिया।

❀ ❀ ❀

गोमा ने पानी की मटकी उतारी। उसे यथा स्थान रखकर अपनी भीगी ओढनी को निचोडा। बिखरे बालो को जिनम नन्ही नन्ही पानी की बूद उलझी हैं गीले हाथो स उन्हे पीछे किया और फिर लहगे की सलवट ठीक करने के लिये उसे फटकारा।

सुबह बीत चुकी है यद्यपि धूप म पर्याप्त गर्मी आ गई है। हवा थमी सी साफ और मौन। उमस से जी घुट रहा है। पेडो की छाया सिकुड गई है।

भोला बीमार है। कई माह हो गय हैं। माची पकड कर पडा है। बुखार चलता है। जुकाम बराबर बना रहता है। छाती मे खासी घुटती रहती है। पहल कुछ दिनो तक लापरवाही म वह काम पर जाता रहा मगर जब बीमारी न जोर पकडा तो विवश हो खटिया से लग गया।

गाववालो के दो ही सबस बडे शत्रु हैं एक निधनता और दूसरी बीमारी। जब दूसरे शत्रु का प्रबल आक्रमण अपने पति पर हुआ तो गोमा का चितित होना स्वाभाविक है। गाव के हकीम वद्य आए नई बीमारी क नाम सुने और महगी दवाइया आने लगी। अधिक वर्षा के कारण खेती भी उजड गई। दुर्भाग्य न उन्हे चारो ओर से घेर लिया परन्तु गोमा ने हिम्मत न हारी और वह सागर तट की चट्टान क समान अडिग खडी है, जिसस सिर मार मार कर उद्दाम लहरे बिखर बिखर जाती हैं।

मेहू अपने बापू के लिये चिलम भरकर ले आया। गोमा भी

उसके पीछे-पीछे चली आई।

भोला चादर ओढ़े माची पर खामोश बैठा है। उसकी दृष्टि कहीं खो जाती है। वह इन दिनों दुबल हो गया है। बीमारी और कमजोरी से उसका सारा मुख मंडल निष्प्रभ हो गया है। प्रौढ़ता की हल्की हल्की रेखायें उभरने लगी हैं, जिनकी ओट से दीनता, विवशता और अव्यक्त मार्मिक पीड़ा स्पष्ट झाँक रही है। यद्यपि वह मंद मंद मुस्कराया तथापि उसका उल्लास तो जैसे कभी का मिट चुका है। उसकी जीवनदायिनी गुलाबी आभा निस्तेज हो गई है—करुणा भाव की दयनीय कुरूपता उसकी प्रत्येक रेखा में भर सी गई है।

यह बात नहीं कि गोमा कुछ समझती ही नहीं है। वह तो सहसा उदासीन हो उठती है। कभी कभी हृदय में ऐसी दर्दीली टीस उठती है कि उसकी थरथराहटें अधरों पर मौन हो जम जाती हैं।

'आओ बैठो।'

भोला के इस प्यार भरे निमंत्रण को वह अस्वीकार न कर सकी और नई दुलहिन की तरह लजीली शर्मीली बन कर माची पर बैठ गई।

भोला के होठों पर अचानक सूखी सी मुस्कान खेल गई। धीरे धीरे वह रंगीन होने लगा। वह गोमा के मुख पर झूमती एक नटखट लट को छूकर स्नेह सिक्त स्वर में बोला—रानी! आज बड़ी देर लगा दी नदी पर।

गोमा का सम्पूर्ण आनन एकदम अरुण हो गया। मुरझाई कली इस प्यार भरे स्पर्श से खिल उठी।

'देखो दीरू बैठा है।'

बस पल भर में वह लजाकर भाग गई। भोला खिलखिला पड़ा।

'पगली कहीं की!

गोमा चूल्हे के पास बैठी है। इस कमरे का रसोईघर बना रखा है। वह रोटियाँ सेंक रही है। शम्भू ने [illegible] लिया तो एक कौर उतार कर [illegible] में भी डालकर गुस्सा [illegible] लिया। ऊपर से कुछ [illegible]—कौर हो गया। बाहर मुदित मन से गाने लगा।

'भाभी [illegible] भाभी !

अचानक शम्भू ने आकर शोर मचाया।

गोमा के हाथ रुक गये।

क्या बात है ? —उसने पूछा।

तुम यहाँ बैठी हो और बाहर बछड़ा खूँटे से खुल गया।

गोमा हड़बड़ा कर उठी। जल्दी से बाहर चली गई।

शम्भू मुँह भींच कर हँसी रोकता हुआ खड़ा।

शाम थोड़ी देर में गोमा बाहर का काम निपटाकर आ गई। लेकिन इस समय मुखाकृति बिल्कुल बदल गई है। उसकी आँखें रोष से लाल हैं। उसके हाथ में झाड़ू है। उसने कहा— मैं सब जानती हूँ। यह किसकी [illegible]।

अपने मनमाने कार्य को अधूरा छोड़कर गोमा झाड़ू लेकर बढ़ी। समझ गया शम्भू उसका लक्ष्य। वह दूर ही से चिल्लाया—'भाभी ! मैंने कुछ नहीं किया है।'

यह तो अभी पता चल जायेगा।'

शम्भू उठकर भागा। वह सीधा भोला के पास चला गया।

'क्या बात है रे शम्भू ?' —भोला ने पूछ लिया।

इतने में गोमा आ गई।

"देखो, भइया ! आज फिर भाभी झाड़ू लेकर पीछे पड़ी है।"

भोला हँस पड़ा।

'अरी भागवान! क्या बेचारे के पीछे पड़ी है हाथ धोकर।'

'ये बेचारे नहीं हैं।' —गोमा तड़ाक से बोली—'अभी बछड़े को खूँटे से खोल कर आए हैं और कहते हैं कि वह अपने आप खुल गया है।'

'नहीं भइया। ये मेरा झूठा नाम लेती हैं।'

'नहीं भइया, ये मेरा झूठा नाम लेती हैं ...हूँ!'—गोमा ने मुँह बिगाड़ कर चिढ़ाया—'हिं! झूठे कहीं के!'

'अरे भई तुम कोई अपनी आँखों से देखा थोड़े ही है।' —भोला ने बीच-बचाव करते हुए कहा—'बेचारे को बेकार में तंग क्या करती है ...?'

गोमा ने एक तीखी दृष्टि पति पर डाली।

'तो मैं झूठ कहती हूँ ...?'

बस प्रश्न पूछकर गोमा एक झटके के साथ घूम गई। फिर तेजी से कदम उठाती हुई बाहर चली गई।

भोला पुनः हँस पड़ा।

'नन्नू!'

'हाँ भइया!'

'तूने अपनी भाभी को नाराज कर दिया।'

'कर तो दिया है पर अब ...?'

'अब क्या। जाकर मना।'

'अच्छा।'

शम्भू उठा और सीधा रसोईघर में चला गया। गोमा ज्वार की रोटिया सेक रही है। लेकिन उसका मिजाज अभी तक बिगडा हुआ है। शम्भू समझ गया थोडी सावधानी से काम लेना पडेगा।

'भाभी!'

गोमा चुप।

'भाभी—!'

गोमा ने दृष्टि निक्षेप तक नहीं किया। बस, अपना काम करती रही।

'भाभी! तुम नाराज हो गई।

गोमा ने तो न बोलने की कसम खा रखी है। शम्भू ने समझ लिया कि भाभी को मनाना मुश्किल है अत फौरन उसने कान पकडे और उठ बैठ करने लगा।

भाभी! क्षमा चाहता हू।

गोमा शम्भू की यह हरकत देखकर अपने आपको रोक न सकी और वह हस पडी। वास्तव म शम्भू नौटकी के मसखरे की तरह बडा ही परिहासपूर्ण अभिनय कर रहा है।



"भइया ! मेरा कहा मानो तो फिर खेती शुरू करदो। यह मिल की नौकरी का झंझट ठीक नहीं।"

नहीं रे शम्भू ! यह खेती का काम मेरे बस का नहीं।

'वाह ! इसमें परेशान होने की ऐसी क्या बात है ?

'इसमें बरकत नहीं । अपना खेत रेहन पड़ा है। दूसरे का खेत किराये लेकर जुतवाई कराता हू तो लोग कस कर पैसे लेते हैं। फिर दो साल से ऐन वक्त पर भारी बरखा हो जाती है और सत्यानाश कर देती है। ना बाबा ! मैं इस चक्कर में पड़ने वाला नहीं।'

भोला का सहज स्वाभाविक कण्ठ-स्वर एकाएक कुण्ठित हो गया।

"भइया ! चिंता क्यों करते हो ?'—शम्भू कहने लगा—'अगर तुम्हारा खेत नहीं है तो कोई हर्ज नहीं। मेरा खेत पड़ा है। अगली फसल तुम उसमें जुतवा लेना।

भोला की आंखों में एक नई चमक आ गई—एक नये उत्साह से उसका चेहरा खिल उठा। पास बैठी गोमा भी यह प्रस्ताव सुनकर एक बार चौंक पड़ी। फिर उस पर विचार करने लगी। आज शम्भू उसकी दृष्टि में बहुत ऊंचा उठ गया है। मुसीबत में काम आने वाला व्यक्ति ही अपना होता है। अपने पराये का भेद तो उसी समय जाना जाता है।

गोमा अच्छी तरह जानती है कि शम्भू के खेत में गेहूं और चने खूब होते हैं इसलिए गांव के कई लोगों की ललचाई दृष्टि उस पर लगी

है। यद्यपि गामा को पता है कि आजकल शम्भू सड़क बनाने वाले ठेकेदार के यहां काम करता है और अगली फसल जुताने का कोई इरादा नहीं रखता है। तभी तो गांव वाले उसके खेत को ठेके पर लेने को तैयार हैं। इसके इस प्रस्ताव को एकदम ठुकराना तो सम्भव नहीं है लेकिन कहे भी कैसे? अतः अपने हृदय-गत भावों को छिपा कर उसने कहा—'देवर जी! ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हारे ऐहसान हम पर बहुत है।'

कहने को तो गामा कह गई मगर जब अपने शब्दों के पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन किया तो धक् से रह गई।

यथार्थ में इससे शम्भू को बड़ा दुःख हुआ "कभी किसी की मदद कर देना एहसान नहीं होता भाभी! आदमी आदमी के काम आता है।"

अब बात को सम्भालने का दायित्व भोला पर आ गया है।

हां रे शम्भू! तू ठीक कहता है।

लेकिन जब एक बार बात उखड़ गई तो बस उखड़ गई। उसका वापिस जमना मुश्किल हो जाता है।

'अच्छा भइया मैं चलता हूं।"

शम्भू उठ गया और अभिवादन करके चल दिया।

पति पत्नी दोनों मौन साधे बैठे रहे।

एक लम्बी सांस खींच कर भोला स्वतः बोला—'शम्भू शायद बुरा मान गया है।'

'हूंम!—गामा ने केवल हुँकार भरा।



राजस्थान की सर्वोपयोगी, सब प्रिय और सब सु दर ऋतु वर्षा है। विशषत श्रावण मास में इस प्रान्त की छटा निराली होती है। स्त्री पुरुषो के मन उल्लास एव हर्ष से भरे रहते हैं। इधर उमडी हुई बादली—उधर उमडा हुआ हृदय! फिर गीतों की मनोहारी बहार। छोटे बडे का भूल कर स्त्रिया और बालिकायें सामूहिक रूप से गाने लगती है—

मोटी मोटी छांट्या ओसरयो ए बदली आमरयो ए बदली!

(कोई) जोडा ठेलमठेल।
सुरंगी रुत आई म्हारे देस।
भली रुत आई म्हारे देस।
ओ कुण बीजे बाजरो ए बदली।
बाजरो ए बदली।
ओ कुण बीजे मोठ मेवा मिसरी।
सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रुत॥

भली रुत।

नीम की बडी डालों पर झूले पडे हैं। कु वारी लडकिया एक दूसरे को ठेलती हसी मजाक करती खूब झूला झूल रही हैं। गीत के मधुर स्वर उनके कण्ठो से अपने आप फूट रहे हैं

परन्तु अब विवाहित स्त्रियो का एक समूह झूले के चारों ओर मडराने लगा। लडकिया दूर हट गईं। स्त्रियों म से नव विवाहिताओं को

पहने झूलन के लिये मजबूर किया गया। वह बचारी नरमाती हुई झूने पर बठी। शेष गीत गाती हुई उस पेंगे देने लगी। लेकिन अब तो उस नव युवती की वह झिझक खतम हो गई और वह खड़ी होकर पेंगे पर पेंगे लका झूलने लगी। उसकी ओढ़नी हवा म लहरा रही है।

थोडी देर क बाद झूला रुका। गाती हुई स्त्रियां उसे घेर कर खड़ी हो गइ और नीच उतरने से पहले अपने पति का नाम बताने के लिए तग करने लगी। वह बेचारी लजाती झिझकती किसी मन-गढ़ त लोकोक्ति के साथ कहने लगती है।

परन्तु गोमा उग्दास है। आज उसके कण्ठ म वह लोच नही है—स्वर म माधुय नही है। गीत की कडिया बीच मे छूट छूट जाती हैं। शेष स्त्रिया उसकी इस प्रशात एव क्षु ध मानसिक स्थिति से थोडी हैरान हैं।

गोमा जल्दी ही उठ गई और घर की ओर चल पडी। उसे किसी ने नही रोका। सब जानते है कि घर मे लम्बी बीमारी चल रही है।

रात अधिक हो गई है। आकाश घटाटोप बादलो से आच्छन्न है। माग सूझना भी कठिन हो गया है मगर गोमा के अभ्यस्त सधे हुए पर अविराम गति से आगे बढते जा रहे हैं।

गोमा की यह धारणा कि शम्भू सम्भवत मन्दिर म गया होगा निमू ल सिद्ध हुई। सदव की भाति वह अपने घर क आगे खड़े नीम तल माची डाले पडा है।

देवर !

अन्धकार के इस निस्त ध सन्नाटे म गोमा का स्वर अजीब सा ध्वनित हुआ। अलस भाव स पडे शम्भू का ध्यान एकाएक भग हो गया ता नहो किन विचारो के ततु जाल मे उलझ गया है।

भाभी !'

शम्भू चकित रहकर माची पर बैठ गया।

तुम इस वक्त ?'—प्रश्नवाचक दृष्टि उठकर उस अंधेरे में गोमा के चेहरे को टटोलने लगी।

मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि मुझे सड़क पर मजूरी दिलादो।

गोमा के स्वर में कम्प। आंखों में आर्द्रता। शम्भू ने अनुभव किया और गहरी चिंता में डूब गया। यद्यपि उसने दृढ़ स्वर में विरोध करते हुए कहा—'भाभी! तुम्हें यह हठ छोड़ना पड़ेगा। मेरे रहते मजूरी नहीं कर सकती।'

वही चिर परिचित उत्तर को सुनकर गोमा चीख सी पड़ी—'देवर! तुम नहीं जानते कि कि आह! आखिर समझते क्यों नहीं ।

गोमा उसके समीप आ गई। उसने भर्राये कण्ठ में पुनः कहा—'तुम मदद कर रहे हो देवर! वह सब ठीक है। लेकिन कभी यह भी सोचा है कि बगैर हाथ पैर हिलाये कैसे काम चलेगा?

'भाभी!'—शम्भू ने गोमा की आंखों में झांक कर कहा—क्या मेरा घर तुम्हारा नहीं है? क्या मेरे ऊपर तुम्हारा तनिक सा स्नेह नहीं है ।'

अंतिम प्रश्न तक आते आते शम्भू का प्रखर कण्ठ स्वर धीमा पड़ गया।

गोमा तो सुनकर हर्ष विह्वल हो उठी।

'है, देवर है !'—गोमा गद्गद् होकर बोली—सारे गांव में एक तुम्ही तो सगे हो। तुम्हारा ही तो आसरा है।'

शम्भू का मन अपूर्व आनन्द से छलक आया, जैसे इन्हीं शब्दों को सुनने के लिए उसके कान तरस रहे हैं।

तुम्हे फिक्र करने की जरूरत नही। सब अपन आप ठीक हो जायगा।

इस अधिकारपूर्ण स्वर को सुनकर गोमा चुप हो गई। शम्भु ने एक प्रकार से सब समाप्त कर दिया। वह हताश होकर लौट पड़ा। बस उसकी छाती म घुटी घुटी आह निकल पड़ी।

❀ ❀ ❀

गोमा ने आसमान की ओर देखा। उसे विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी रात बीती है। चिन्ता की कोई विशेष बात नहीं है। हवा तेज है। उसमें हल्की हल्की शीत की नमी है। उसने फुर्ती से पैर बढ़ाये।

मंदिर में कीर्तन हो रहा है। ढोलक और मंजीरे की तान छिड़ गई है। आज जागरण है और गांव की मंडलियां बैठी हैं। कालियो गूजरों और बामनों की मंडली में बड़ी स्पर्द्धापूर्ण होड़ चल रही है। सारी रात गाना बजाना होता रहेगा।

क्षण भर ठहर कर वह आगे निकल गई। इधर गूजरों की बस्ती घनी है। बाड़े में खड़ी उनकी गायें और भैंसें रम्भा रही हैं। गोबर और मूत्र की दुर्गन्ध सर्वत्र व्याप्त है।

तभी दूर से उसे एक लम्बी चीख सुनाई पड़ी जो उस निस्तब्ध वातावरण में बड़ी भयंकर लगी। एक औरत अपने घर से भागकर निकली। पीछे कई आदमी भी दौड़कर आए। उनमें से एक ने आकर उसकी बांह पकड़ ली।

'भाभी! लौट चलो। बेकार में जग-हंसाई होगी।'

'छोड़ दो मुझे।'

औरत एक पागल की तरह उसकी बांहों में छटपटाने लगी। साथ ही अनर्गल प्रलाप भी करती जा रही है।

गोमा अपने कौतूहल को बरबस रोक न सकी । उसके पांव अपने आप ठिठक गए ।

अब तक परों में न कुछ मालूम भी आ गई । प्रकाश में गोमा ने जो देखा तो दंग रह गई । कहीं पहचानने में भूल तो नहीं हो गई है ?— अपनी पुतलियों में जिज्ञासा का भाव भरकर उन्हें पुनि ध्यान पूर्वक देखा तत्पश्चात् सारा भ्रम दूर हो गया ।

हाँ ! यह तो अपनी ही रूपा है । अभी परसों ही घर पर आई थी । कली की तरह खिल रही थी और फूल की तरह हँस रही थी । उसका नवीन अपूर्व आन उल्लास की मनोहर छवि से दीप्त हो रहा था । कभी अधरों पर समुज्ज्वल मुस्कान पसर जाती थी और कभी स्वप्नों में खोई खोई आंखों में हृदय की चमक भर भर जाती थी ।

जीजी !

हाँ !

जी जी !

अरी चिल्लाती क्यों है ? —यह गोमा का अस्पष्ट कण्ठ स्वर है— बोल ना क्या बात है ?

गोमा का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट न होते देख रूपा तनिक असमंजस में पड़ गई । अब वह समस्या बन कर उसके आगे चुपके से आन खड़ी हुई । बड़े सोच विचार के बाद उसने धीरे से कहा— अब वह सोलह साल का हो गया है ।

अरी कौन ?

वोह वोह ! तुम्हारा देवर !'

और रूपा के आनन पर ऊषा की गुलाबी आभा बिखर गई । वह

अपने आप झुक गया ।

"अच्छा ।"

गोमा दौड़ कर उसके पास आ गई । बड़े प्यार से आग्रह पूर्वक पूछने लगी— 'अरी बता लो सही क्या बात हुई ?

"ससुर जी जल्दी ही मुहूर्त निकलवा कर लाने की रस्म पूरी करने वाले हैं ।

है । ऐसी बात है ।'

गोमा की आंखें अचानक विस्मय से फैल रह गई ।

अब वह जम कर उसके पास बैठ गई । एक उड़ती हुई निगाह रूपा पर डालकर उसने मीठी चुटकी भरी— 'वह भी तुझे चाहता है या नहीं ?'

'बस जीजी ! तुम तो वही बनी हो ।

रूपा का मुंह फूल गया, हालांकि गोमा अच्छी तरह जानती है कि उसके दिल में लड्डू फूट रहे हैं ।

अरी इसमें ऐसी-वैसी की क्या बात है ! —बड़ी सयानी बन कर गोमा बोली— वह तो मन से धन से, करम से खरा मरद है । बोल, है कि नहीं ।

यह मान की बात रूपा के मन को भा गई । उसने गर्दन हिला कर धीरे से हां भरी ।

'फिर बता ना ।

'जीजा ! वह तो हारमाना है ।'

क्या मतलब ?'

मैं वही हूं ना ।

'अच्छा ।

मन की गुप्त गांठ सुलझी देख गोमा को भी रस आने लगा। उसने पूछा— क्यों री कभी मीठी मीठी बात भी करता है या नहीं ?

'बस, जीजी ! तुम तो ऊंहूं ।

ठनक कर रूपा ने गोमा के गले में अपनी बांहें डाल दीं। गोमा ने दुलार से एक चपत उसके गाल पर लगाई और शरारत भरी हंसी के साथ उसे छेड़ने लगी।

बता ना।

क्या ?'

यही कि एकांत में बैठकर बातें भी करते हो।

जीजी ! वह तो मेरी छाया से ही भागता है। —सुदूर शून्य में दृष्टि गड़ाकर रूपा कहने लगी— मगर अब भागकर कहां जाएगा ? ऐसा कसकर बांधूंगी कि ।

'अच्छा ।

'हां। —भावावेश में बहकर रूपा कहती गई— एक बार मैंने उसे पकड़ कर ।'

बस अब गोमा अपने उमड़ते हुए हास्य के प्रबल प्रवाह को रोक न सकी और वह वेगवती लहर की भांति फट पड़ा। बेचारी रूपा बुरी तरह झेंप गई।

बस जीजी ! तुम तो ऊं हूं ऊं हूं हूं ।

और रूपा ने अपना लजीला मुख गोमा के आंचल में छिपा लिया ।

'छोड दो मुझे ।"

इस चीत्कार को सुनकर गोमा स्वप्नाविष्ट सी जाग पडी । उसने देखा—रूपा अपना हाथ छुडाकर भाग रही है । एक अज्ञात अनिष्ट की आशका म वह सिर से पाव तक सिहर उठी ।

कूए की मुडेर पर पहुचकर रूपा तनिक रुकी । फिर उस पर बढाए तभी किसी न आकर उसका हाथ पकडा ।

भाभी ! यह क्या नादानी है ?

उस भय प्रद वातावरण में पुरुष का कठोर स्वर तैर गया ।

छोड दो मुझे ।'—क्रोध म गरज कर रूपा बोली ।

'हरगिज नही !

इस दृढ और अधिकारपूर्ण स्वर ने रूपा को एकाएक उत्तेजित कर दिया । उसने झु झला कर हाथ छुडाने का प्रयत्न किया तो पुरुष न उसकी इस कुचेष्टा को बेकार कर दिया । अब वह उसे बलपूर्वक घसीट कर कूए से काफी दूर ले गया ।

' मैं कहती हू हाथ छोड दो । —क्रोधोन्माद में रूपा गला फाड कर चिल्लाई ।

'नहीं छोडू गा ।'

पुरुष का इतना कहना था कि रूपा ने अपने तीक्ष्ण दात उसकी बाह में गडा दिये ।

इस धृष्टता ने पुरुष के रोष को सहसा भडका दिया । उसने आव देखा न ताव और खींच कर रूपा के गाल पर थप्पड जड दिया ।

यह क्या किया देवर ?

अचानक अधेरे मे से निकल कर गोमा आगे बढ आई और उसने

घबराकर शम्भू (पुरुष) को बांह पकड़ कर झकझोरा।

अब शम्भू को भी अपनी स्थिति का आभास हुआ। सचमुच उसका यह आवेग एक प्रकार से मर्यादा का उल्लंघन है। औरत पर हाथ उठाकर उसने अपना ही अपमान किया है। अब ? ग्लानि और लज्जा ने उसे शीघ्र ही ग्रस लिया। अपनी ही तिरस्कारपूर्ण दृष्टि उसे कचोटने लगी।

और रूपा तो हतप्रभ रह गई। इस आकस्मिक व्यवहार के लिए वह कदापि तैयार नहीं थी। उसका वह उन्माद बिल्कुल ठंडा हो गया। तीव्र उत्तेजना में जलता उसका हृदय इस चोट को सहन न कर सका। एक भयंकर प्रतिक्रिया हुई। नारी सुलभ दुर्बलता ने आ घेरा। अब वह धरती पर बैठकर फूट फूट कर रोने लगी। उसका करुण क्रन्दन अब हवा की लहरों के साथ दूर दूर तक जाने लगा।

सोमा और शम्भू स्तम्भित। वे ऐसे जड़वत् होकर धरती में गड़ गए– जैसे पाषाण के दो खण्ड।



त्रिया हठ की प्रसिद्ध कहावत अवश्य सुनी है, मगर प्रत्यक्ष देखने का अवसर बहुत कम लोगों को मिला है।

कोई विश्वास करे चाहे न करे, लेकिन रूपा सारी रात उसी जगह पर वसी की वैसी बैठी रही। न खाना न पीना। न उठना न सोना। गोमा ने समझाया उसके ससुर भी आए अन्य सम्बन्धियों ने भी इस प्रकार कुल को अपमानित न करने की सलाह दी, फिर भी रूपा ने एक की नहीं सुनी। वह टस से मस तक नहीं हुई।

यद्यपि गाव के अधिकांश व्यक्ति इस समय शम्भू को पानी पी पीकर कोस रहे हैं—उनका क्रोध स्वाभाविक है—किसी के घर की बहू पर कोई गैर मर्द हाथ उठाए—यह वास्तव में सहन करने योग्य नहीं। यह तो अपने ही गाव का आदमी ठहरा। यदि दूसरे गाव का होता तो खून खराबा हो जाता।

लेकिन रूपा के इस दुराग्रह तथा स्पष्ट अवज्ञा से अब उनकी सहानुभूति क्रमशः घटती जा रही है। उनकी प्रकोपभरी दृष्टि रूपा पर जम गई।

'बड़ी हठीली है।

'किसी की सुनती ही नहीं।"

ऐसा भी क्या मान, जो बड़ो की सीख का निरादर करे!

सारे झगड़े की जड़ तो वह खुद ही है।'

शम्भू और गोमा के सामने अब एक ही प्रश्न है - अब क्या होगा ?—और इसके समाधान की सामर्थ्य किसी में भी नहीं।

आशा निराशा के झूले मे झूलते हुए गोमा रूपा के समीप आई। अत्यधिक कोमल स्वर मे उसने पूछा— रूपा ! क्या बात हुई ? मुझे बता दे।

जड़वत् रूपा नि श द रही। गोमा ने बहुत आग्रह किया। मिन्नतें की और हर प्रकार से ऊंच नीच भी समझाया। रूपा निश्चल और नि न्द रही।

फिर तो वह हार गई। कारण न बताय तो एक बात हुई मगर उसने तो इस स्थान स न उठने की कसम खा रखी है। अब ? यहा एक आख से दया बरस रही है, वहा दूसरी से रोष की चिनगारियां भी निकल रही हैं। ऐसा भी क्या हठ ? सचमुच आज तो रूपा ने कमाल कर दिया। उसके प्रति गोमा के हृदय मे जितने भी सद् भाव थे—व एक एक करके नि शेष होने लगे।

उसने आस पड़ोस की ो चार स्त्रियों को बुला लिया। शम्भू के भी कुछ मित्र आ गए। अलाव जला कर वहीं बैठ गये। शेष सारी रात आखो में जाग कर काटी। बातचीत और गप शप का बाजार गर्म रहा मगर शम्भू तो गुम सुम ही बैठा रहा।

सुबह तड़के ही गाव के कुछ लोग रूपा के ससुर को समझाने के लिये गये। वे प्रत्युत्तर म बोले— मैंने न तो उसे घर से निकाला है और न बुरा बर्ताव ही किया है। वह अपनी मर्जी से गई है। तो भी मैंने उसे समझाया, पर वह नहीं मानी और उल्टे मेरी बेइज्जती की। अब मैं उसे लेने नही जाऊगा।

"चौधरी ! बहू नादान है। उसका बुरा नही मानते। —गाव के एक बुजुर्ग न थोड़ी नर्मी से कहा।

विवाह की आठ घड़ी चौधरण भी घूंघट में से बोली— अब आप ही निपटाव कर । अगर लड़का बोला की छोकरी का लफर कहीं भाग गया तो इसमें हमारा क्या कसूर ? हमने तो उसे भगाया नहीं । इस पर भी वह मरना चाहती है तो शौक से मरे । हम रोकने वाले नहीं ।'

' एक तो लड़का कपूत निकला और दूसरे यह बहू भी मुंह पर कालिख लगाने पर तुली है । फिर उसे भी मैं मना कर लाऊं । ऐसा हरगिज नहीं हो सकता । —चौधरी अपना सन्तुलन खोकर पुनः बोला ।

'सो तो ठीक है ।'—कण्ठ स्वर को अत्यंत संयत करके वह बुजुर्ग कहने लगा— 'बच्चों की नादानी हमेशा माफ करदी जाती है । कलेजा थोड़ा बड़ा रखो ।

थोड़ा ऊंच नीच समझाने के उपरान्त चौधरी की मोटी बुद्धि में कुछ घुसा । उसने सहमत होकर कहा— ठीक, अगर आज वह चुपचाप घर चली आए तो मुझे कोई एतराज नहीं है ।

वे आश्वस्त होकर अब रूपा के पास गए । परन्तु यहां तो कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी । लाख सिर मारा मगर उसने तो एक बार ना' करने के बाद हां करने का नाम तक नहीं लिया । अब उनके पास चुप्पी साधने के अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प न ही है । उन्होंने उसे अपने भाग्य के भरोसे छोड़ कर विदा ली ।

इधर शम्भू की हालत पतली होती जा रही है । वह गले में कैसा जंजाल आ फंसा ? सचमुच, आज तो उसकी अक्ल भी गुम हो रही है ।

उनींदी, थकी और व्याकुल आत्मा को देख गोमा ने उसकी आंतरिक शोचनीय अवस्था को अनुभव किया । ज्यों ज्यों समय गुजर रहा है — उसका मानसिक तनाव भी बढ़ रहा है । —दुश्चिंताओं की काली घटाएं चारों ओर छा गई हैं जिससे उबरना दुष्कर हो गया है।

गोमा ने पुन प्रयत्न किया। इस बार आशातीत सफलता मिली। रूपा ने मुँह खोला— जीजी ! जिसने मुझे धोखा देकर मेरा यह जीवन बिगाड़ा है उसके घर में पैर तक न रखूंगी। बस मैं इतना ही जानती हूँ।"

'पागल हुई है ?'

कुछ भी समझ लो।'

'रहेगी कहाँ ?

'इसी गाँव में अलग झोपड़ा बनाकर।

खाएगी क्या ?

'मजूरी करूंगी।

इस दुस्साहसपूर्ण निर्णय को सुनकर तो गोमा दंग रह गई। यह औरत किस धातु की बनी है—परमात्मा ही जाने !

'देख रूपा ! यह सब ठीक है। —गोमा ने कहा— लेकिन तू चौधरियों के घर की बहू — ।

वह कभी की मर चुकी। —बीच में बात काटकर रूपा बोली— अब उसका नाम ही भूल जाओ।'

उसकी आँखों में एक विचित्र प्रकार की ज्योति चमक उठी। गोमा तो सहम कर चुप हो गई। उसने आगे कुछ भी कहना व्यर्थ समझा।

सोना की तबीयत अब मुश्किलों में सम्भली है। वह भवन घर के
भाग वाले पीतल के मोरे वाली हाथ कर पड़ा रहता है। दोस्त नन्दू बारात म
प्राग्गाहुन मामर गांव की पाठशाला में पढ़ने आता है। सोना दिन भर घर
के कामकाज में व्यस्त रहती है।

आज सवाय से ठाकुर साहब दफ्तर पर निकले। अभी तक इनका
दबदबा है। गांव वाले इनका सम्मान करते हैं। सलाम भी करते हैं और
गोमी शेखाला मुजरा भी करने जाते हैं। छोटा मोटा काम भी कर आते
हैं। औरतें रावले (रनिवास) में ठकुराइन सा के पास जाती हैं और उन्हें
उचित आदर प्रदान करती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी के परम्परागत सम्बन्ध हैं जिन्हें
समय के प्रवाह ने अभी तक नहीं तोड़ा है।

एक जमाना था, जब इनकी मर्जी के बगैर पत्ता तक नहीं हिलता
था। इन्होंने जुल्म और अत्याचार भी कम नहीं ढाए, मगर वे अब केवल एक
कहानी भर रह गये हैं। लोग भूलते जा रहे हैं। घृणा, कटुता और असमा
नता का वह विष अब समाप्त हो गया है। पुराने सम्बन्ध टूट गए हैं
और नये बन रहे हैं। सम्बन्ध! मधुर, मानवीय और सुखवर्द्धक! इस
सौहार्दपूर्ण वातावरण में नई मानवता पल रही है।

मुआवजे की रकम अधिकांश कर्ज चुकाने में चली गई। अब तो
खुद अपने हाथ से खेती करते हैं। वह अत्यधिक भोगलिप्सा एवं ऐश्वर्याकांक्षा
का घृणित जीवन प्राय समय के थपेड़ों से खत्म हो रहा है।"

"खम्मा अन्नदाता !"

भोला ने खड़े होकर बड़े अदब से सलाम बजाया।

'अरे, बैठ भी जा। खड़े रहने की जरूरत नहीं है।"—ठाकुर साहब ने कोमल स्वर में कहा।

'नेरू की मां ! जल्दी से एक दरी तो ला।'—भोला उतावली में चिल्लाया—'भागवान देख अपने घर कौन आया है ?'

जैसे भूचाल सा आ गया। भोला व गोमा इधर उधर भाग दौड़ करने लगे। उनका उचित स्वागत करने हेतु घर में नई दरी नया पाला नया गिलास लोटा इत्यादि लाने लगे

ठाकुर साहब ने हंसकर कहा—'अरे भोला रहने भी दे। मैं तेरा मेहमान थोड़े ही हूं।'

'अन्नदाता ! मेरे भाग जाग गये जो आपके चरण मेरे घर पर पड़े। मैं तो निहाल हो गया।"

भोला की चापलूसी को देख ठाकुर साहब फूले नहीं समाये। वे अपनी रोबीली मूंछों में हंसते रहे।

माची पर दरी बिछ गई और ठाकुर साहब उस पर इत्मीनान से बैठ गये। भोला जमीन पर उनके पैरों के पास उकडू जम गया।

'आज इस गरीब के घर कैसे पधारना हुआ है ?"—भोला ने पूछा।

'अरे यूं ही चला आया।'—यह चलती बात कहकर ठाकुर साहब टाल गए।

भोला का ठाकुर साहब से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। उस के दादा या परदादा ठाकुर साहब की दादी जी के विवाह के अवसर पर दहेज में प्राप्त हो कर यहीं आ गये। अन्य रजवाड़ों की भाँति यह प्रथा यहाँ भी खूब प्रचलित थी। प्रत्येक जागीरदार दहेज के रूप में सामान के साथ अधिक से अधिक दास-दासियों का देना अपने लिए गौरव का विषय समझते थे अतः ये अपवाद कैसे रहते!

भोला का परिवार यहाँ रहने लगा और ठाकुर साहब की चाकरी में लग गया। घर की स्त्रियाँ प्रायः रावले में काम करती हैं। यह गुलामी की प्रथा पुश्त दर पुश्त चलती रहती है इसलिए अपने पिता का एकमात्र वारिस होने के कारण भोला को भी यह ताबेदारी मिली। स्वाभाविक है कि उसे कोई शिकायत नहीं है—गिला नहीं है।

जैसा कि आम रिवाज है बचपन में ही भोला की शादी हो गई। बचपन बीता और जवानी की बहार आई। इसके साथ रंगीन सपने और मधुर उमंगें अंगड़ाइयाँ लेने लगीं। परन्तु भोला की बहू! ठकुराइन-सा का कठोर स्वभाव और ऊपर से ढेर सारा काम। बेचारी फूल सी बहू यह सब बर्दाश्त न कर सकी। वह पति के सामने रो पड़ी।

भोला की भी चढ़ती उम्र। नया जोश—नया उत्साह! नारी के इन आँसुओं ने तो घी का काम किया। उसकी भागी नसें फड़क उठीं। बस झगड़े का सूत्रपात हो गया। विद्रोह के अंकुर फूट पड़े। एक दिन अपनी पत्नी को लेकर वह भाग गया।

पीछे से ठाकुर साहब ने भी कार्यवाही आरम्भ की। सर्वप्रथम उन्होंने उसकी जमीन जब्त कर ली, तदुपरान्त उसका धान पेटिया जो उसे हर माह कुटुम्ब के भरण पोषण के लिये बतौर भत्ते के रूप में मिलता था, बन्द कर दिया। ठकुराइन-सा के पास जो जेवर उसकी पत्नी के रखे हुए थे,

उह भी हजम कर लिया गया । अभिप्राय यह है कि उसकी चल और अचल सम्पत्ति पर ठाकुर साहब ने पूर्णतया अधिकार कर लिया ।

दो साल के बाद भोला जब वापिस गांव में लौट कर आया तो नौ माह के नेन्हे के अतिरिक्त उसके साथ कोई नहीं था। उसकी पत्नी एक लम्बी बीमारी में चल बसी । अब वह मादक उन्माद कभी का उतर चुका था। निराश, खिन्न और व्यथातुर भोला सीधा जाकर ठाकुर साहब के पैरों में पड़ गया । गिड़गिड़ा कर अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा। एक बार तो ठाकुर साहब बड़े नाराज हुए परन्तु भोला की यह शोचनीय अवस्था देख उनका दिल पसीज गया व अचानक करुणा के सागर बन गये । उन्होंने उसकी जमीन जायदाद वापिस लौटा दी ।

भला भोला इस ऐहसान को कैसे भूल सकता है !

बताइये सरकार ! आप कैसे पधारे ?' —अपनी असीम जिज्ञासा को दबाकर उसने पुनः पूछ लिया ।

ठाकुर साहब चिंतित हो उठे ।

भोला ! आजकल कुंवर के रंग ढंग अच्छे नहीं लग रहे हैं। उसे शहर की चमक ने चकाचौंध कर दिया है । उसमें वह अपनी मान मर्यादा और धन को भी फूंक रहा है। जिस राह पर चलकर हमारा सत्यानाश हुआ है—वह उसी पर चलना चाहता है। समय रहते उस नासमझ पर काबू नहीं किया गया तो कहीं के नहीं रहेंगे ।'

'यह तो बुरी बात है ।"

'हां भोला ! —ठाकुर साहब ने एक सर्द आह खींची । उनके रौबीले मुख पर चिन्ता की रेखायें गहरी हो गईं ।

थोड़ी देर के बाद वे कहने लगे— मैंने तय किया है कि मैं खुद कुंवर के पास जाकर रहूंगा तो उसे शायद कुछ शर्म पड़े ।'

'गर्मी तो पड़ेगी हुजूर !'

'हां । इसीलिये जाने की तयारी कर रहा हूं । लेकिन यहां का फिर भी कुछ कम नहीं ।'

'वह क्या है ?'

'ठकुरानी को रावले में किसके भरोसे छोड़कर जाऊं ?'

'इसके लिये आपका यह पुराना सेवक हाजिर है ।' —बड़े उत्साह से भोला ने यह प्रस्ताव रखा ।

'सच !' —ठाकुर साहब एकदम चिन्ता मुक्त हो गये प्रसन्न भाव से बोले ।

उन्हें विश्वास न था कि भोला इतनी जल्दी मान जाएगा ।

'आप खुशी खुशी शहर जाकर रहें । बाकी यहां मैं सब सम्भाल लूंगा ।'

'इसमें तेरी बहू की भी मदद मिलेगी ?'

'जरूर !'

निश्चय हो गया । भोला चौकीदारी करेगा और उसकी बहू रावले में ठकुराइन सा के पास रहेगी ।

कुछ देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं । कुछ घर की— कुछ बाहर की । वर्तमान दशा पर भी थोड़ी सी चर्चा चल पड़ी । इसी बीच ठाकुर साहब ने पूछ लिया— भोला ! मैंने सुना है कि तू अब दारू भी पीने लगा है ?'

भोला सिटपिटा गया । उसने एक भीरु दृष्टि घर के दरवाजे पर डाली जिसकी ओट में खड़ी गोमा सारी बातें सुन रही है ।

'हुजूर ! धीरे बोलिये, वरना वह सुन लेगी ।'

ठाकुर साहब हस दिय ।

"वडा डरता है ।

खोसें निपार वर भ ला वोना— लोडी जी (दूमरी पत्नी)
है ना ।'

ठाकुर साहब पुन हम दिय ।

अब उठने हुए बोले— अच्छा नायन मैं कल ही चल दू गा । तू और तरी बहू थोडी देर में आ जाना ।

'हा । आ जाउ गा ।'

भोला की खुशी के तो पख लग गये । वह एक पक्षी के समान आकाश की गहराइयो में बधडक उडन लगा ।

❀ ❀ ❀

गोमा ने टोकरी सिर पर से उतारी और उसमें से रोटी, सब्जी और खाने की अन्य सामग्री निकाल कर रखने लगी।

रात झुक आई। दूधिया चान्दनी में नहाकर गगन महल जगमगा रहा है। छोटे छोटे तारों के साथ सुन्दर सलोना चन्द्र भी खिलखिला रहा है।

शम्भू मचान पर अकेला लेटा है। उसकी दृष्टि विस्तृत आकाश पर बिछ जाती है। एक अजीब सा सूनापन उसके मन में भर आता है। खेत ऊंघ रहे हैं। कभी कभी जंगली जानवरों की भयावनी आवाज गूंज उठती है।

शम्भू उठा। इस मनहूस ऊब और तनहाई को दूर धकेल कर वह स्वस्थ होने लगा।

'आज तो देर हो गई, देवर!' —गोमा ने कहा।

'कोई बात नहीं है भाभी!'

शम्भू हाथ धोकर थाली पर बैठ गया और धीरे धीरे खाने लगा।

रावले में काम करने के कारण गोमा आजकल कम ही बाहर निकल पाती है। ठकुरानी-सा ने सारा काम उस पर डाल रखा है। रसोई-पानी से लेकर धोना पीसना तक करना पड़ता है। कुछ वे अपने स्वभाव से लाचार हैं। दिन भर पुकारती रहती हैं। कभी तो उसे रोष आता है—साथ भी उत्पन्न होती है लेकिन नौकरी है—सिर झुका कर सब सहना

पडना है अब तो आदत सी पडती जा रही है।

ये देवर भी एक हैं।—स्नेह सिक्त दृष्टि शम्भू पर डालकर गोमा मन ही मन मे बोली।

बस हाथ धोकर पीछे ही पड गए।

भाभी! आधा खेत तुम जुतवाला।

गोमा ने कहा— देवर! हमारी नौकरी लग गई है।

'तो क्या हुआ?' —शम्भू अपनी बात पर अड गया— हमा बाप दादा किसान थ और उनकी औलाद हम भी किसान हैं। फिर नौकरी म कोई बरकत भी नहीं है।

तुम नौकरी क्यो करते हो?'— गोमा ने हस कर पूछा।

क्या करू भाभी? अकेला जीव हू।'

इस प्रश्न का सीधा कोई उत्तर नहीं। यद्यपि गोमा ने शरारत भाव लेकर रसपूर्ण स्वर में कहा — तो लुगाई ले आओ लाला! मैं त खुद अपनी देवरानी की बडी बमत्री म बाट जोह रही हू।'

शम्भू शरमा जाता है। गोमा खिलखिला उठती है।

'लो एक रोटी और लो।'

थाली खाली देखकर गोमा ने आग्रह पूवक कहा।

नही भाभी! मैं बहुत खा चुका।

तुम्हें मेरी कसम।'

और गोमा ने दो रोटिया थाली में डाल दी। साथ ही तरकारी और कढी भी परोस दी।

अरे बस बस बस।

क्या बस—बस!' —गोमा नटखट स्वर में बोली— देखो

भाभी ! यदि भूखे रह गये और आधी रात को पेट में चूहे दौड़ने लगे तो फिर मैं पकड़ने नहीं आऊँगा।"

नहीं भाभी ! आज तो तुमने डटकर खिला दिया।

तनिक ठहर कर उसने आहिस्ता से कहा— 'तुम्हारे हाथों में क्या नहीं ऐसा असर है कि एक ही रोटी में ।

भावावेग में वह वाक्य अधूरा छोड़ गया।

बस बहाने बनाना छोड़ो।"

बड़ा जुल्म है भाभी !"

जुल्म ! —बनावटी क्रोध करके गोमा ने कहा— देवर ! सदा से भाभियां जुल्म करती आई हैं। इसमें नई बात कौन सी कही तुमने ?

'सच !'

अचानक एक शब्द जीभ पर आकर रुक गया। शम्भू के होठों पर एक हृदयग्राही मुस्कान खिल उठी।

शम्भू खा चुका। उसने हाथ मुंह धोये और इतमीनान से बैठकर बीड़ी पीने लगा।

ढेर सारा धुआं उगल कर शम्भू ने कहा — 'भाभी ! रूपा भौजी को रावल में रखकर तुमने बहुत बड़ा उपकार किया है।'

'वाह ! इसमें उपकार क्या ?' —हठात् गोमा ने पूछा।

चौधरी घर की बहू है। बेचारी कहां मारी मारी फिरती।

गोमा हंस पड़ी।

बस एक औरत आकर तुम्हारे गले पड़ गई तो घबरा गये।"

ऐसी बात तो नहीं भाभी ! लेकिन लेकिन ।

सचमुच शम्भू सकपका गया।

"क्यों देवर ! भाभी से भी बनते हो ?"

गोमा पुनः हँस पड़ी। इस हँसी की मोहकता ने वातावरण को अत्यंत आह्लादपूर्ण बना दिया।

शम्भू लज्जालु मुस्कान लिये खामोश बैठा रहा।

अचानक चुप्पी का एक बोझिल सा टुकड़ा उनके बीच में आकर निःशब्द घूमने लगा।

गोमा ने इस चुप्पी को तोड़ा—

"देवर ! उपकार तो तुमने किया है।"

गोमा की मुद्रा अब क्रमशः गम्भीर हो गई।

'मैंने ? —चौंक कर शम्भू ने पूछा—'भला वह कैसे ?'

'हाँ। —गोमा ने कृतज्ञता से भरी एक निगाह डाली— तुमने हमारे लिये खेत जोता है रात रात भर जाग कर उसकी रखवाली करते हो। सर्दी, गर्मी और बरखा को बर्दाश्त करते हो। वह सिर्फ हमारे लिये —।

और देखते देखते गोमा की भाव विह्वल आँखें सहसा आर्द्र हो गई। सचमुच उसमें स्नेह की तरलता घनीभूत हो गई। थरथराते अधरों पर हृदय की समस्त सरसता और कोमलता थिरक उठी।

भाभी ! तुम्हारे सिवाय मेरा दूसरा कौन है ?

शम्भू ने यह वाक्य अनजाने ही बहती हवा में फेंक दिया, मगर गोमा ने उसे अविलम्ब ही पकड़ लिया। वह किंचित् मुस्कराकर बोली—'देवर ! कैसी बहकी-बहकी बातें करते हो ? तुम हमारे हो और हम तुम्हारे विश्वास नहीं करोगे कि मैं तुम्ह .

बीच ही में कण्ठावरोध हो गया। शम्भू का हाथ अपने हाथ में लेकर वह थपथपाने लगी।

शम्भू के सारे बदन में विद्युत सी दौड़ गई। गोमा के मुख से निकले इन शब्दों को वह तो मधु की तरह पी गया। और उसके स्वप्न की चाह! उसने गोमा की आँखों में झाँका और धीरे से पूछ लिया—'सच भाभी!'

हाँ! सच।

गोमा ने अपने धड़कते हुए हृदय को सम्भाला फिर उठते हुए बोली—'अच्छा देवर! अब मैं चलती हूँ।'

गोमा मचान से नीचे उतर कर वन की पगडंडी पर धीरे धीरे अग्रसर हो गई। शम्भू उसे अपलक देखता रहा, जब तक वह एक काला बिंदु बनकर दृष्टि पथ से ओझल नहीं हो गई।

चाँदनी अधिक उजला और सुहावना हो गई।

❀

मुह अधेरे ही रूपा उठती है। नित्यकम स निवत्त होकर लग जाती है। हवेली म गायें हैं भसें हैं और हैं बछड़ों की जोड़िया। सानी पानी करना पड़ता है। वह दूध दुहती है। गरम करती है मथती है और मक्खन गरम करके घी तैयार करती है। शेष दिन पापन पढ़न हैं।

यह काम भी थोड़ा नही है। ग्लन दमत सूरज छिप ज बड़ा व्यस्त जीवन है उसका। अब धीरे धीरे वह अभ्यस्त हो रही है।

तेजिया जात का नाई है। ठाकुर साहब का पुराना विश्वस्त सेवक है। बतन माजता है, कपड़ धोता है झाड़ू लगाता है। प्रौढ़ उमर को। सिर के बाल खिचड़ी हो गये हैं। कुछ आलसी काहिल और सा है। सनकी भी परले सिरे का है। रामदेव बाबा की सेवा पूजा है। कभी कभी काम निबटा कर आधी रात तक पूजा में लगा रहता दिन में भी कोई निश्चित समय नहीं है। जब फुरसत मिलती है टोकर वर धूप मन लाता है।

परन्तु उसका एक नियम ध्रुव की तरह अटल है। वह एक बार रुणिचा अवश्य जाता है और रामदेवर पर श्रद्धा पूर्वक लगाता है। प्रसाद चढ़ाता है और 'जागण' भी देता है। बाबा के प्रति भक्ति अटूट है – अगाध है।

हाश आता है। फिर वह उन गदे कपडों को दूर फेंकता है। उनमें से ऐसी दुगन्ध उडती है कि मिनली आन लगती है।

और रात को सोता है तो उन्हे पहनकर। ठाकुर साहब के उतारे जूने वह हर वक्त पहने रहता है। जब तक वे ऊपर स सिकुड कर सख्त नही हो जाते उनकी शक्ल बदल कर भद्दी न हो जाती और नीचे से तला घिस कर न निकल जाता तब तक वह उनका पीछा नही छोडता। बच्चा क लिये वह खिलौना है और हम जालियो के लिए हास परिहास का अच्छा खासा मसाला है।

जब स रूपा हैनी म आई है तेजिये मे थोडा परिवतन सा आगया है। यह स्वाभाविक है या अस्वाभाविक—कह सकना कठिन है। अलबत्ता, उसके बुझे हुए सूने मन में कुछ हलचल सी मच गई है। उसके सुस्त उठने वाले पैरो मे थोडी स्फूर्ति सी आ गई है। मुरझाये चेहरे पर सजीली मुस्कान का रग कभी आता है—कभी जाता है। गहन चिंता मे डूबी सी आखा म नइ चमक भर गई है।

उसके बाल छट गए हैं। तिरछी माग काढने लगा है। कपडे धुले हैं। अभी गाव के मोचा से नई जूती पहन कर आया है।

रूपा ! ला, मैं गाय मेल (दुह) दू।"

रूपा चकित सी उसे देखती है। तेजिया के रग ढग उससे छिपे नही हैं। उसके हृदय गत भावा से वह भली भाति परिचित है। उसे एक ओर गुस्सा आता है—तो दूसरी ओर हसी भी आती है।

"काका ! मैं ।"

बस रूपा इतना ही बोल पाती है और तेजिया बल उठता है।

'देख रूपनी ! खबरदार जो मुझे आइदा काका कहा। मुझसे बुरा कोई नही होगा।'

❀ ❀ ❀

साँझ का मटमैला अँधेरा झुक आया है। सूरज क्षितिज की रेखा पर आधा लटककर धरती पर जा लगा है। उसकी किरणें पेड़ों की शाखाओं में से आ आ कर आँखों को चुँधिया रही हैं। जगह जगह ज़मीन पर या पत्तियों में प्रकाश के नन्हे नन्हे धब्बे थरथरा रहे हैं, जैसे चारों ओर चिड़ियाँ उड़ते हुए अपने पङ्ख बिखेर गई हैं। चुप्पी साधे खड़े पेड़ों में से मिठास सी निकलती मालूम पड़ रही है।

आज पूरे खेत का चक्कर लगाने के बाद भोला बुरी तरह थक गया है। मुण्डेर पर बैठकर वह अपनी उखड़ी साँस को रोककर वापिस सामान्य होने की प्रतीक्षा में है। भाल पर आए पसीने को धोती के पल्ले से पोंछकर बड़े ध्यान से नई फसल की गुनगुनाहट सुन रहा है। सारा दृश्य कितना रमणीक और सुखदायक है।

ठाकुर साहब की हवेली पर चौकीदारी करते हुए उसे काफी समय हो गया है। इस बीच वह कम ही बाहर निकल पाया है। गाँव वाले वहीं पर आ आ कर उसकी कुशल क्षेम पूछ लेते हैं। एक चिलम तम्बाकू के पीछे उसे गाँव के सब समाचार विदित हो जाते हैं। दो घड़ी की गपशप में सारा कच्चा चिट्ठा खुलकर सामने आ जाता है।

आज बैठे बैठे जँच गई कि क्यों न खेत पर ही जाकर शम्भू से भेंट की जाय। उसके बड़े एहसान हैं। इस जन्म में उसका ऋण चुकाना तो यद्यपि सम्भव नहीं है, मगर मुँह से कहकर जी को बहलाया जा सकता है। निदान, वह लाठी लेकर चल पड़ा।

'भैया !'

शम्भू का तो विस्मय से जैसे मुँह खुला-का खुला रह गया।

धौंकनी की तरह फूल आई सांस को रोकने का असफल प्रयत्न करते हुए भोला ने कहा—'शम्भू ! बैठे बैठे जी उकता गया तो सोचा !''

अब धम से जमीन पर बैठ गया, ताकि थकान मिटा सके।

'तुम्हारा भी जवाब नहीं है भैया !'—शम्भू मचान से नीचे उतरकर बोला—'अगर मिलने की इच्छा थी तो मुझे बुला लेते।'

'तो कौन सा गजब हो गया शम्भू !'—भोला के चेहरे पर खिसियानी हंसी फैल गई।

'तू तो ऐसे गले पड़ रहा है कि कोई अनहोनी कर बैठा हूं।'

शम्भू गम्भीर हो गया।

"ऐसी लापरवाही कभी कभी बड़ी दुखदायी साबित होती है।

'जा जा ! तू तो बात ही तूल दे रहा है। भगवान की मेहरबानी से अब मैं ठीक हूं। ज्यादा वहम ना कर। ला चिलम पिला।

'भैया ! यह तुम्हारी ज्यादती है।'

चिलम तैयार करते हुए भी शम्भू जैसे समाप्त हुई बात की टांग को घसीट कर बोला—

'अच्छा अच्छा ! हमारी ज्यादती ही सही। अब तो पिंड छोड़। तू जीता मैं हारा। आइन्दा ध्यान रखूंगा।'

भोला ने इस सफाई के साथ पटाक्षेप किया कि शम्भू मन मारकर रह गया। आज उसका मन भुनभुना रहा था। भोला को देख अकस्मात् चिढ़ गया। सोचा—उनको आड़े हाथों लूंगा और कुछ खरी खोटी सुनाऊंगा

लेकिन उसकी मुराद पूरी नहीं हुई।

भोला ने बड़ी हसरत भरी निगाहों से उन झूमती हुई बालियों को देखा। एक विचित्र सा ममता का भाव उसके हृदय में भर गया—जैसे अपनी संतान को देख वह एकाएक आप्लावित हो उठता है। उनमें पलने वाली जिंदगी और किसानों के सौभाग्य की आशापूर्ण झलकों को निहारकर वह गद् गद् हो गया।

अचानक वह हर्ष विभोर हो शम्भू के गले में लिपट गया।

'शम्भू! तू मेरा भाई ही नहीं तू ता ।'

और उसकी आँखें नम हो गई। विह्वल स्वर कण्ठ में आकर फँस गया।

यह भावुकता अप्रत्याशित है—शम्भू तो सहमा स्तब्ध रह गया। फिर कहने लगा— भैया! तुम तो बेकार में ।'

बस, कण्ठावरोध हो गया। साथ ही वह समझ भी नहीं पा रहा है कि क्या कहा जाय?

इस मधुर मिलन के उपरान्त इधर उधर की बातें होने लगीं। उनमें कुछ घर की और कुछ बाहर की भी आकर शामिल हो गयीं। वहीं ज्ञात हुआ कि आजकल शम्भू की तबीयत थोड़ी नरम रहती है।

भोला ने चिंतित होकर कहा— रात में ठण्ड पड़ती है। कपड़े लत्तों से पूरी सावधानी रखने की जरूरत है। देख तेरी सेहत इन दिनों कितनी गिर गई है।

भइया! तुम भी एक हो।"—शम्भू के मुंह से निर्लिप्त हँसी फूट पड़ी— जरासा जुकाम क्या हो गया बस किसी महारोग का मुझ पर जैसे हमला हो गया है—ऐसा सोचकर बैठे हो। मुझे कुछ न होगा विश्वास रखो।

"तुम्हें तुम्हें कुछ हो गया तो तो ।

पता नहीं आज भोला इतना संवेदनशील कम होगया है ? शम्भू के प्रति स्नेह की धारा प्रबल वेग से उमड़ पड़ी है। इसके अतिरिक्त सारे गाँव में एक अकेला वही व्यक्ति है जो उसकी टूटी जीवन नैया का एकमात्र खेवनहार है।

शम्भू भी द्रवित होगया, लेकिन उसके शब्दों को ध्वनि न मिली। वह चुपचाप सा रहा।

अब उनके बीच में आकस्मिक मौन का बोझिल सा टुकड़ा आगया। दोनों खिन्न लिखित से गर्दन लटकाये बैठे रहे।

कुछ देर के बाद शम्भू ने आग्रहपूर्वक कहा— अब लौट जाओ।

नहीं रे थोड़ी देर बैठा ।

भइया ! गोधूलि की बेला है फिर संध्या पड़ जाएगी।'

अभी अभी चला जाऊंगा ।

फिर भी वक्त पर जाना ठीक रहेगा।

अच्छा ! जैसी तेरी मर्जी।

भोला ने अपनी लाठी संभाली।

शम्भू भी आगे मार्ग तक उसे छोड़ने आया। जब वे विदा होने लगे तो भोला ने कहा—'अब तू जा ! राम राम ।

'राम राम ।'

उसने चलते चलते फिर कहा— शम्भू ! अपनी सेहत का जरूर ख्याल रखना ।

'हाँ भइया जरूर ।'

यह प्रेमपूर्ण भेंट भोला के हृदय पर एक स्थायी प्रभाव छोड गयी है। उसके अन्तस का कोना कोना रस प्लावित हो गया है। शम्भू के साथ बीते इन सुखद क्षणो को वारबार स्मरण करके वह आनन्द के महासागर में डूबडूब सा जाता है।

अरे यह तो अपना भोला है खि खि खि ।—पीछे से आकर किसी ने बेतुकी हसी हसते हुए उसका कधा छुआ।

इतने में, उसके चारो ओर घेरा डालकर चार आदमी आकर बैठ गये।

'यार हम तो तुझे रोज याद करते हैं पर बेटा, तू तो ऐसा बिल में जाकर छिपा कि अतापता तक गायब।"

उनकी लडखडाती जीभ विकृत मुखाकृति और अनावश्यक बहकी बहकी हसी से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि वे अपने आप में नहीं हैं।

उन्होंने फौरन ठर्रे की बोतल निकाली। भोला के होश उड गये।

अब आयगा मजा।'

'अपना बिछुडा हुआ यार जो मिला है।

'जय दुर्गा ।'

बोतल खुली। एक एक ने मुह से लगाकर पीना शुरू किया।

भोला घबरा गया।

देखो भई! मेरी तबीयत ठीक नहीं है।"

'खि खि खि ।'—उनमे से एक वही चिर परिचित असयत हसी के साथ बोला— लो इसकी भी सुनो। फिर यह समुरी किस मर्ज की दवा है।

सबके सब एक साथ ठहाका लगा उठे।

इन शराबियों की संगत, हवा में पुन आई शराब की नशीली महक और सामने रखी ठर्रे की बोतल ! इन सबने मिलकर उन पर जादू का सा असर डाला । एक विचित्र-सा आकर्षण उनके मन में भर आया । एक अजीब सा हास्य उनके होठों पर लग गया । एक पागल बना देने वाला नशा उनके दिल व दिमाग पर बुरी तरह छा गया । यद्यपि उसने टालने के अभिप्राय से कहा—'माफ करो भाई मैंने अब छोड़ दी है ।'

छोड़े तेरे दुश्मन ! आज तो तुझे हमारे साथ पीनी ही पड़ेगी ।

नहीं नहीं ।

अरे यार । नहीं-नहीं का बच्चा । —एक बोतल उठाकर बोला —"गुलाम करता है तो ससुरा अकड़ता है । पकड़ो और पी— ।

बस, कहने भर की देर थी और बोतल की गर्दन उनके हाथ में आ गई ।



ठाकुर साहब के नाती पोते शहर से क्या आ गये हैं, बस गोमा के गले नई मुसीबत पड़ गई है। यूं ही सिर उठाने की फुर्सत नहीं मिलती है। काम से इतना परेशान नहीं होना पड़ता, जितना उनकी फरमाइशें पूरी करने से। कोई रोता है— कोई हंसता है। कोई किसी चीज के लिए तंग करता है। कई बार ऐसी चीज को हठ पकड़ बैठते हैं जिसकी उपलब्धि सम्भव नहीं है। कोई कहती है—दही रोटी खाऊंगी, तो दूसरा दूध के लिए चिल्लाता है। तीसरे ने कपड़े खराब कर दिये हैं और चौथे ने ।
इसी प्रकार गोमा एक फिरकनी की तरह उनके बीच दिन भर घूमती रहती है। यदि थोड़ी सी भी चूक हो जाय तो ठकुराइन मां भिड़क पड़ती हैं।

गोमा बुरी तरह थक जाती है। इस चीख पुकार से ऊब उठती है। कभी कभी तो झल्लाकर इस निकम्मी नौकरी को ठोकर मारने को तैयार हो जाती है, लेकिन उसका जाग्रत विवेक उसे इस सीमा तक आगे बढ़ने नहीं देता।

रूपा !'

एक दिन तनिक अवकाश पाकर गोमा ने पुकारा।

हां जीजी !'

हाथ का काम छोड़कर रूपा झट उसके समीप आई।

दोनों आमने-सामने आई तो गोमा ने आश्चर्य से देखा कि जैसे वह उत्साह और मोहक हंसी रूपा से रूठ गई है। उसकी मायूस आंखों में झांक

है। वह उत्साह तो जमे सदा के लिये विदा हो गया है। स्मृति मधर हमी का स्रोत तो असमय म ही सूख गया है। उसकी सदव चहकती जीभ को भी लकवा मा मार गया है। लहरो की सी चचलता तो मानो श्वेत हिम खण्डों क नीचे दब सी गई है। गिरि शृङ्ग की भांति वह शान्त और निर्द्वन्द्व दिखाई पडती है जिसके अतस का ज्वालामुखी अभी अभी फूटकर मौन हो गया है।

प्रति उत्तर न पाकर गोमा निराश होगई।

अच्छा। जान दे। मैं मैं

आत्म केन्द्रित रूपा अचानक चोक पडी। गोमा के इन श ो न उस पर गम्भीर प्रभाव डाला है। आत्म विस्मृति की केंचुली को छोडने का प्रयास करते हुए उसने कहा— जीजी! मैं तुम्हारा काम कर दूगी।

'हा SSS !'

गोमा को विश्वास नहीं आया। रूपा का यह विचित्र स्वभाव समझ सकना प्राय सम्भव नही है। धीरे धीरे वह एक पहेली सा बनती जा रही है। जो अपन मन की गाठे किसी क आग खोले नही तो क्या पता चले ? उसका चरित्र तो रहस्यमय बनता जा रहा है। एक ओर जिस मुह स इन्कार करती है—दूसरी ओर उसस हा भी भर लेती है कभी हो गई है रूपा ?

गोमा न पैनी निगाहों से घूरकर कहा— अच्छा आज शाम को चले आना।'

ठीक है जीजी! मैं चली आऊगी।''



|

रूपा जब हवेली के बाहर निकली तो उसे बड़ा अजीब सा लगा। वह जानी पहचानी जगह भी उसे बड़ी अनजान-सी लगी। ये टेढ़ी मेढ़ी गलियें ये सीधे-सपाट रास्ते उसे बिल्कुल नये नये से लगे। वह तो जैसे भूल से किसी अपरिचित गाँव में आ गई है। सचमुच हवेली का चहार दीवारी में कैद रहकर वह तो एक पिंजरे का पंछी बन गई है।

धीरे धीरे कुछ भूली बिसरी स्मृतियों के चित्र उसकी सुप्त अन्त श्चेतना से उतर कर आकाश गंगा के मानिन्द फैल गए।

स्वप्न !

स्वप्न तो स्वप्न हैं। अक्सर व्यक्ति उन्हें निद्रित अवस्था में देखा करते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी बिरले हैं, जो जाग्रत अवस्था में भी स्वप्न देखते हैं। स्वप्न कुछ मीठे तथा रसीले वे उदास व दुखी मन को पुलकित कर देते हैं। कुछ स्वप्न अप्रिय तथा कटु होते हैं जो मुदित मन को अवसाद शोक व चिंता से अभिभूत कर देते हैं। बड़े अद्भुत हैं ये सपने उनकी गति भी विलक्षण है।

इन्हीं विचारों के ताने बाने बुनती और उधेड़ती रूपा चली जा रही है। यह बात अवश्य है कि इससे रास्ता कटना सरल हो गया है। कभी कभी ध्यय के विचार भी बड़े सहायक सिद्ध होते हैं। बीहड़ और कटका कीर्ण मार्ग भी फूलों की सेज की तरह कोमल बन जाता है।

उसके पैर अपने आप शम्भू के खेत की मुंडेर पर पहुँच गए। वह क्षणिक ठिठकी। खेत के बीच में से जाने वाली सीधी पगडंडी पर वह आगे

बढ़ गई।

चारों ओर अंधकार छा गया है। खण्ड चन्द्र की मलिन चान्दनी उसी में लिपटी पड़ी है। हवा मौन है। यद्यपि उसमें खेतों की ताजी खुशबू बस गई है। धरती के धानी आंचल पर काली चादर भी बिछ गई है। साम एक मस्त अजगर की भांति निश्चिन्त तथा नीरव पड़ी है।

शम्भू के मचान को खोजने में उसे कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई। उसने कुप्पी के धीमे प्रकाश में आश्चर्य के साथ देखा कि शम्भू मचान के नीचे घास पर कम्बल बिछा कर पड़ा है। उसका सारा शरीर ढका है। वह कांप रहा है।

रूपा ने टोकरी नीचे रखी। फुर्ती से आगे बढ़ी। कम्बल को थोड़ा सा हटाया। ललाट पर हाथ लगाया तो ज्ञात हुआ कि बदन तवे की तरह तप रहा है। कंपकंपी इस कदर बढ़ गई है कि दांत बज रहे हैं। हाथ पैरों में ऐंठन सी हो रही है। आंखें सुर्ख अंगारों सी दहक रही हैं।

रूपा ने शम्भू का सिर अपनी गोदी में रखा। धीरे धीरे उसे दबाने लगी।

'देवर!'—रूपा ने व्यग्र कण्ठ से पुकारा मगर उसकी आवाज शम्भू की उस्सों में डूब गई।

उसने पुनः पुकारा— देवर!

'हूं ... !'—शम्भू ने दांत भींचे। वह अपनी धूमिल पलकों को झपका कर रूपा को देखने लगा।

'कौन? — शम्भू चौंक कर बोला— कौन ... कौन ... ?

रूपा ने मुंह खोल कर कुछ कहना चाहा मगर तभी शम्भू उन्माद ग्रस्त रोगी की भांति बकने लगा।

'भाभी! तुम ... तुम ... तुम ... । मैं ... मैं ... मैं बच न सकूंगा

रहा हू और तुम हो जो आई ही नही भाभी !

'है ! —रूपा के मु ह स हठात् निकला।

अब रूपा का हाथ शम्भू के हाथ म आ गया। अपनी छाती पर खीचकर बोला— भाभी! तुम्हारा यह स्वर अभागा है। तुम्हारी स्नेह भरी मुस्कान स तिर गया है।

रूपा को रोमाच-सा हो आया।

तुम तुम मैं मैं आह !'

शम्भू के कापन हाथ कुछ अजीब-सी हरकत करने लगे। हवा का तेज भोका आया और वह क्षीण प्रकाश भी बुझ गया।

रात का सन्नाटा ! धरती की गोदी म साथ पडे तन ! धडकते जवान दिल। गम गम उफनती नि श्वासें। ओह !

रूपा स्तम्भित रहकर सिर झुकाए बठी रही।

❀ ❀ ❀

सुबह जब गोमा की रूपा से भेंट हुई तो वह उसके सामने एक नये रूप में आई। यद्यपि उसकी आंखें लाल हैं तथापि उनमें उल्लास है—खुमार है। बासी मुख पर एक प्यारी सी मुस्कान खेल रही है जैसे मुरझाई कली वर्षा की पहली फुहार पाकर पुलकित हो उठी है। उसका हृदय गाढ़े रंग सा उसके अधरों पर मचलती आरजू बन कर खिल रहा है। उनींदी आंखों की गहराइयों में अभी तक रात के खामोश अफसाने सोये पड़े हैं।

गोमा को अचम्भा हो रहा है। यह परिवर्तन अप्रत्याशित है। वह भी केवल एक रात में। यह बाहर की हवा का प्रभाव है या उसके अतीत चरित्र का यह भी कोई रहस्य है। वह एकाएक कुछ निश्चय न कर सकी।

"तू रात को कब आई रूपा ?"—गोमा ने पूछा।

'जी जी !'—तनिक हकलाते हुए रूपा ने कहा—'मैं मैं तो आ गई थी।'

रूपा की यह भोली लजीली दृष्टि गोमा को भा गई।

'अरी आई कब ?'

गोमा की इस जिज्ञासा को शांत करना आवश्यक है अन्यथा अविश्वास तथा आशंका का मिथ्या विचार अंकुरित होकर कहीं स्थिति को और अधिक सन्देहास्पद न बना दे। इसके अतिरिक्त गोमा का इस प्रकार पूछना निष्प्रयोजन भी नहीं है अतः वस्तु स्थिति को स्पष्ट कर देना अनुचित नहीं होगा।

रूपा ने अपनी झुकी झुकी पलकें उठाकर कहना आरम्भ किया—जे जी ! देवर की तबीयत खराब थी सो मैं देर से लौटी।

देवर की तबीयत फिर खराब हो गई। कब कैसे ? मुझ से पहले क्यों नहीं कहा ?

'जी जी मैं।

रूपा सचमुच घबरा गई।

गोमा ने कहा — अच्छा मैं लुट देख आऊंगी।

गोमा इतना कहकर चली गई परन्तु रूपा के ललाट पर स्वेद कण चमक आए। अनायास ही उसके दिल की धड़कन बढ़ने सी लगी। पता नहीं किस अज्ञात भय की छाया उसके प्राणों पर छा गई और उसका प्रतिबिंब मुखड़े पर स्पष्ट झलकने लगा। उसके मुंह से सहसा एक ठण्डी सांस-सी निकल पड़ी।

प्रायः घण्टे भर के बाद गोमा लौट आई। उसे सुरेन्द्र न मिला। पूछ ताछ करने से पता चला कि वह दूसरे गांव में अपने किसी दोस्त के लड़के की आज सगाई है इसलिए वहां चला गया है। शाम तक लौट आएगा।

गोमा ने आते ही अपनी नाराजगी प्रकट की।

बाबो कैसे सिर फिरे आदमी है ? कल तक इनकी तबीयत खराब थी और आज चल दिये सगाई में। वहां उपद्रव होगा जिसमें उल्टा सीधा खान पान चलेगा। उससे सेहत को नुकसान नहीं पहुंचेगा ?

रूपा मौन रही।

आज शाम को मैं जाऊंगी और इसके लिए उन्हें खूब फटकारूंगी।

रूपा पूर्ववत् चुप और निश्चल रही। गोमा अपनी धुन में बकवास

बरती जा रही है। उसने रूपा की ओर विशेष ध्यान न दिया और जो आई थी—वैसे ही चली गई।

सूखे सरोवर की प्यासी धरती का हृदय दारुण व्यथा से फट पड़ा है। धूल मिट्टी हवा के साथ मिलकर आसमान की ओर जा रही है। सूखे पत्ते धूल और तिनके भी उड़ रहे हैं। जब गर्म लू चलती है तो उसके मन प्राण भुलस जाते हैं।

परन्तु आषाढ़ का पहली बदली उठती है और धीरे धीरे नीलाम्बर उसके श्याम आंचल में सिमटता चला जाता है। शीतल वायु के झोंके आते हैं और उसके स्पर्श में अपूर्व सुख मिलता है। छोटे छोटे जल सीकरों की धीमी धीमी रस वर्षा होती है और प्यासी झुलसी हुई धरती का कण-कण आनन्दोल्लास से खिला उठता है। उसके तृषित प्राण उल्लसित हो उठते हैं।

इस सुखानुभूति को विस्मरण करना प्राय असम्भव नहीं है।

रूपा !

व्याकुल रूपा थकी है निराश है प्यासी है तिरस्कृत है प्रताड़ित है अपमान की यन्त्रणा से पीड़ित है। परन्तु उसके रूप मृत प्राय जीवन में शम्भू ने जैसे अमृत रस सा उण्डेल दिया। उसकी निस्पन्द पलकें खुली। निष्प्राण अधरों पर मुस्कान थिरकी। निष्क्रिय हाथ पैरों में नई गति सचारित हो गई। कठोर, निर्जीव और स्थिर पड़ी देह में पुन प्राण प्रतिष्ठा हो गई। उसका जीवन के प्रति मोह प्रबल वेग से उमड़ पड़ा।

यद्यपि शम्भू की प्रत्येक अनधिकारपूर्ण चेष्टा को रूप सब प्रथम रूपा दंग रह गई। उसके स्पर्श में रोमांच है उसकी वाणी में उन्माद है और ज्वर पीड़ित तन में कम्प है। उसकी प्रत्येक क्रिया अपने आप में इतनी मोहक और लुभावनी है कि उसकी सुप्त मानसिक चेतना को जाग्रत कर रही है। शरीर से लिपटती बाहें अधरों का विकल स्फुरण और अधेरे में चलती श्वास प्रश्वास की तीव्र गति ने उस पर जादू का सा प्रभाव डाला है। उसके

मुने अ त करण म हलचल सी मच गई है। वीरान बगिया म बसत की नव बहार की छटा बिखर गई है। चारो ओर नये फूल खिले हैं। पक्षी गा रहे है। मद मस्त वायु अठखेलिया करती हुई बह रही है। वह अलौकिक आन द की गगा म सुध-बुध खोकर डूब गई है। अपनी वर्तमान स्थिति को भूलकर सपनों के ससार म विचरण करने लगी है। उस अभिशाप ग्रस्त जीवन की विडम्बना को विस्मरण कर आज नए सुख म पखो पर बैठ कर उड रही है ।

पक्षी की अतृप्त पिपासा बढ गई है और वह गगन-मडल म निष्प्रयोजन तथा दिशा-हीन भटकने लगा है। कहा ठिकाना है—कहा मजिल है ?—इसम वह सर्वथा अनभिज्ञ है। वह तो केवल इस समय उडना जानता है बस, वह आसमान की नीली घाटियों में निरुद्देश्य गोते खा रहा है

गाभ हुआ। स्निग्ध आकाश में तारों का रमणीक वैभव फैल गया। रूपा तैयार होकर आई।

आज उसने साफ-सुथरे कपड़े पहने हैं। गहने तो [illegible] फिर भी काजल टीकी लगाने का लोभ संवरण नहीं कर सकी है। सिर में सरसों का तेल डालकर सीधी मांग काढ़ी है। इन सबने उसके सारे सौन्दर्य को खूब निखार दिया है।

इस नये परिवेश में शोभा ने उसे अचरज भरी निगाहों से देखा। अपनी चिबुक पर उंगली रख कर उसने पूछा—

अरी रूपा! यह कहां जाने की तैयारी कर रही है?

रूपा तनिक लज्जा कर चुप चुप सी खड़ी रही।

लेकिन शोभा को कहीं अनुचित संदेह नहीं हो जाए अतः उतावली में बोल पड़ी— कहीं भी जाने का इरादा नहीं है। बस ऐसे ही पहन लिए हैं।

अंतिम वाक्य तक आते आते उसकी आवाज धीमी हो गई।

अच्छा, कोई बात नहीं। मगर बाहर मत निकलना, दबार में लोग बात का बतंगड़ बनायेंगे।'

अच्छा जीजी।

रूपा ने इस आज्ञा को सिर झुका कर मान लिया।

शोभा सोचने लगी—बेचारी विधवा है। सधवा औरतों की दशा

रखी इस भी आज उजले कपड़े पहनने का शौक हो गया है। बनाव सिंगार करने की स्त्री सुलभ आकांक्षा को दबा सकना कदाचित आज उसके लिए असम्भव हो गया है। वह रूठे हुए भाग्य को जैसे मनाने के लिए प्रयत्नशील है। उजड़े चमन का पंछी अपने भग्न हृदय को बहलाने के उद्देश्य से जैसे यथासाध्य उपकरण जुटा रहा है। उपेक्षित मन में जैसे कामना के नये अंकुर फूट रहे हैं।

गोमा एक सरल हंसी हंसी फिर बोली— अच्छा तू यहां बच्चों की देखभाल करना। मैं थोड़ी देर में लौटकर आती हूं।

'कहां जा रही हो जीजी?' —आश्चर्यित होकर रूपा ने पूछा।

'आज देवर को देख आने का विचार है। दिन में वे किसी लड़ाई झगड़े में गये हैं सो अच्छी खबर लेनी है। बस, थोड़ी सी ढील मिलते ही मन की करने लगे।'

हैं। —रूपा तो मानों आसमान से गिर पड़ी।

गोमा ने कोई ध्यान नहीं दिया और वहां से चली गई।

'ओह!' —रूपा के मुंह से एक सीत्कार-सी निकल पड़ी। वह सिर थाम कर बैठ गई। आहत पंछी के समान वह तड़प उठी। उसके समस्त अंतःकरण में जैसे ज्वाला-सी भड़क उठी।

थोड़ी देर में उसकी आंखों में आंसू आ गये। उदास निराश और खोई खोई सी वह अपने भाग्य को कोसने लगी जैसे उसका सर्वस्व उसकी आंखों के आगे समाप्त हो गया है।

गोमा का यह विचार कि शम्भू गाँव में ही मिलेगा—निराधार साबित हुआ। उसने इधर उधर ताका मगर गो-तीन गायों के अतिरिक्त उस सून सान खेत में बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। एक विचित्र प्रकार की ध्वनि सर्वत्र व्याप्त थी जिसमें भयभीत होना स्वाभाविक है। उसने आवाज भी लगाई किन्तु इसका परिणाम भी लाभदायक सिद्ध नहीं हुआ। घिरते हुए अंधेरे एवं खेत की अनन्त शून्य नीरवता ने उस पथिक को और देर ठहरने की आज्ञा नहीं दी।

गोमा हताश होकर वापिस लौट पड़ा। लेकिन उसकी समझ में नहीं आया कि आखिर शम्भू गया कहाँ? ऐसा तो हो नहीं सकता कि अभी वह दूसरे गाँव से आया हो नहीं हो। इस अन्तर तक रुकना प्राय सम्भव नहीं है। सोचते सोचते वह थक गई। अब तो उसके पाँव चलते चलते शम्भू के घर की ओर बढ़ गये।

देवर!

घर के द्वार पर पहुँच कर गोमा ने पुकारा। प्रति उत्तर न मिला। उसने भिड़े हुए किवाड़ों को ठेलकर अन्दर झाँका—शम्भू आँखें बंद किए खाट पर चित पड़ा है।

वह अन्दर घुसी। टोकरी एक ओर रख दी। कुप्पी के धीमे प्रकाश में घर की अस्त व्यस्त अवस्था को देखा। उधर से ध्यान हटाकर बोली—'देवर!'

"हैं ।'—शम्भू चौंक कर उठ बैठा।

"देवर ! सुना है कि तुम्हारी तबीयत ।"

गोमा के मुह म नेप ग्न्द जम जम से गए। शराब की तीखी गध उसके नाक म घुमकर दिमाग म कील सी गड गई। विस्मय म उसकी आख फटी रह गई।

दे व र ।

शम्भू उठा। उसकी हसती आखों म एकदम शरारत का भाव घनीभूत हो गया जिसे गोमा ने आज तक नही देखा। प्रथम बार उसकी हसी म आज गमी गध आ रही है जिसे कभी उसने अनुभव नही किया। आज उसकी दृष्टि मे मैलापन है। होठो पर जैसे प्यासी जीभ वही बकली से घूम रही है जिसने उसके मन की गदगी को बाहर उगल दिया है

'देवर ! तु तुमने दारू पी है ।'—गोमा ने अविश्वासपूवक कहा।

'भा भी ! दावत में दो स्तों ने पिला दी है पर पर तुम तुम मैं मैं तुम्हे प्यार करता हू ।'

शम्भू की यह उन्मत्त हसी इतनी कडवी है कि सुन कर गोमा स्त ब्ध रह गई। आज उसका प्रिय देवर एक भिन्न रूप में उसके सम्मुख खडा है। और इस रूप की कल्पना तो वह स्वप्न में भी नही कर सकती।

इस नित उज्ज प्रेम निवेदन को वह केवल नश की खुमारी समझे या ? वह एकाएक निर्णय न कर सकी।

मा नही गोमा ! तमने प्यार के साथ अपनाया है। सचमुच मैं मैं तो निहाल हो गया। ओह ! कल की वह नशीली रात ! तुम्हारा वह वह कोमल गा त । और और सि सि सि ।

वही उन्मादक हसी। गोमा सोचती रह गई। शम्भू का यह

प्रताप रगो भर भी मम र में नगी पाया ।—

मा नहीं माना । —दाम्पू गामा को प्यार बड़ा— ओह हिप् ।

इम हिमनी क साथ हर सारी वन्नु घम गई । सारा वातावरण इतना मधिक मम और स्पष्ट हो गया है कि गामा के लिए वहां मान लेना भी दूभर होता जा रहा है ।

गो मा !

दाम्पू न मर्यादा का अतिक्रमण कर आवेग म गामा की कलाई पकड़ ली ।

है है है ।

इस जहरीली हमी न उस डस लिया । गोमा सा महमा हत प्रभ सी रह गई ।

मैं ता कब स तुम्हे प्यार करता हू पर अब इन्त जार की घड़ियाँ खत्म हो गई है आओ आओ और मेरे धड़कते सीने से लग जाओ ओह हिप ।

इस प्रकार के अनधिकार प्रेम निवदन एव निरंकुश भावनाओं की अभिव्यक्ति स किसी भी स्वाभिमानी का क्रोधित हो जाना असम्भव नही है । उसका अंतमन आहत होकर चीख पड़ता है । हृदय में क्षोभ का दावानल प्रज्ज्वलित हो उठता है और वह प्रतिकार करने के लिए तत्पर हो जाता है ।

कदाचित् विस्फोट की वह घड़ी निकट आगई है । पहाड़ की कठोर छाती को चीरकर आग और धुए की लपटें निकलने क लिए बेताब हो उठी हैं ।

काम पिपासा से अन्धा नरापम सभल न सका । उसकी नगी

कामुकता अपने वीभत्स रूप में अट्टहास कर रही है। विवेक शून्य होकर वह एक मदान्ध पशु बनकर गुर्राया—'शोभा! मेरी शोभा!'

बलिष्ठ भुजाओं की नागपाश ने नारी के पवित्र गौरव का कलंकित करने के उद्देश्य से घेरा। परन्तु शीघ्र ही वह भ्रम दूर हो गया। वह दुर्बल नारी एक निडर शेरनी बन गई। उसकी आँखों से चिनगारियाँ बरसने लगीं। पल भर में वह एक लपलपाती ज्वाला सी बनकर तड़प उठा। उसने एक झटका मारा और दूसरे ही क्षण वह मुक्त हो गई।

पशु धूल चाट रहा है। घृणा और विरक्ति की जलती दृष्टि फेंक कर शोभा पाप की इस कलुषित छाया से दूर चली जा रही है।

❀ ❀ ❀

शम्भू आतुर है उद्विग्न है, विश्वासघात की भावना से ग्रस्त व पराजित है। अब तो उसके पास केवल खण्डित हृदय है जो स्वयं को ही छल जाता है। वह द्वन्द्व के भावों एवं अवाञ्छनीय विचारों का भण्डार है। उसकी अतल गहराई में झांकता है तो शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। बस असीम ग्लानि में डूब डूब जाता है।

आज उसके जीवन में अप्रत्याशित घटित होगया है। रह रह कर रात की घटना शूल सी चुभ जाती है। शोभा की प्रज्वलित दृष्टि तो मन के अन्तराल में जलती मशाल की भांति उतर जाती है। ओह! उन आंखों से बरसती अंगार घृणा और आक्रोशपूर्ण तिरस्कार! अधरों पर फड़कती वह मौन अभिशापपूर्ण दुत्कड़िया ओह!

उसकी समस्त आशाओं पर तो जैसे तुषारापात हो गया यही तो दुःख की बात है। वह तो समझता था कि शोभा के हृदय में उसके प्रति केवल सद्भाव ही नहीं अपितु प्रेम और आकर्षण भी है। यदि निरपेक्ष दृष्टि से देखा जाय तो उसके भावोद्वेग का कारण उसकी वह स्नेहपूर्ण भंगिमा थी जिसके सहृदयतापूर्ण निमन्त्रण को अस्वीकार करना प्रायः सम्भव नहीं है। उसके मृदुल स्पर्श में अनोखी आत्मीयता और वात्सल्य था जो तुच्छ, नीरस और अनावश्यक जीवन को सुखी तथा सार्थक बना सकता है। उसकी चंचल प्रवृत्तियों का प्यार भरा प्रोत्साहन मिला। उसके सम्पर्क से अपूर्व स्फूर्ति मिलती थी जिसमें प्रेरक संजीवनी एवं विद्युत शक्ति का सा प्रभाव है।

यद्यपि यह उसका भ्रम मात्र ही निकला। शोभा ने तो केवल उसे अपनाया भर—देवर का मधुर स्नेहदान देकर उसे अनुगृहीत किया। कई बार सजगता द्वारा उसने अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करने की चेष्टा भी की मगर उसकी आँखें न खुली। उसके सामीप्य की सुखद अनुभूति से वह आत्म विस्मृत हो गया और मायाजाल में दुराग्रह कर बैठा जिसका दुष्परिणाम आज भुगतना पड़ा है। वह भूल जिसने एक ही क्षण में उसके अतीत, वर्तमान तथा भविष्य को कलंकित कर दिया है।

आह! आज उसका प्रेम मर चुका है—रह गई है केवल वासना—जो प्रेम के शव को उठाए उठाए फिर रही है। जिस नैतिक धरातल पर वह आज तक खड़ा था, वहाँ से अचानक उसका पैर फिसल गया है और वह अपार मरणक पाप पंक में डूब गया है। अब अब! रात के उस सन्नाटे में उसके असफल प्रेम की आहें चीत्कारें खामोश दीवारों से टकरा-टकरा कर सिर पीट रही हैं। उसके उल्लसित हृदय के कामनाओं के फूल मुरझा गए हैं। और उसकी मृदुल कल्पनाओं के पंख तो झुलस गए हैं।

परन्तु वह प्रायश्चित्त करेगा उस पाप का जो तिल तिल कर अपनी प्रचण्ड अग्नि में जला रहा है। वह पाप जो शीघ्र ही उसकी यह जीवन लीला समाप्त कर देगा। शान्ति! मानसिक तनाव बढ़ जाने के कारण उसकी शान्ति मिट गई है। क्षोभ की चिता धू धू करके जलती रहती है। अब तो शोभा के सम्मुख अपराध के लिए क्षमा याचना करने से ही मन का वह चैन लौट सकता है। कदाचित् वह उसके इस गुरुतर अपराध को क्षमा कर दे और उसे वही प्यार सम्मान तथा देवर का पूरा अधिकार देकर उसके सूने वीरान जीवन में आनन्द उल्लास का अमृत भर दे।

कुछ आशा बंधी तदनुसार सुबह जब शोभा मंदिर से लौट रही थी तो उसने साहस करके पुकारा— भाभी।[15]

गोमा ने उसे देखा भी लेकिन बोली कुछ नहीं। उसकी आँखों में अभी तक आहत अभिमान और होठों पर कुचले हुए विश्वास का क्रूर भाव विद्यमान है।

एक बार सहानुभूति दिखाकर उसे स्नेहपूर्वक अपनाया तो उसके प्रतिदान में अच्छा ही पुरस्कार मिला है। अब वह कभी ऐसी भूल कभी न करेगा। सच है दुर्बल मनुष्य के प्रति की गई प्रीति सदैव हानिकारक होती है।

इस बार शम्भू दीवार बन कर गोमा के मार्ग में खड़ा हो गया। विवश हो गोमा को रुकना पड़ा।

गोमा ने कठोर स्वर में कहा— दूर हट जाओ।

"भाभी! मुझे माफ कर दो।

विगलित कण्ठ से निकले उन शब्दों के साथ शम्भू ने अपने हृदय का समस्त कलुष गोमा के चरणों में उड़ेल दिया।

लेकिन गोमा चुप रहकर आगे बढ़ गई। स्पष्ट है कि उसने शम्भू की प्रार्थना को निर्ममतापूर्वक ठुकरा दिया।

भाभी!'—निराश और दुःखी शम्भू चिल्लाया—'अगर तुम माफ नहीं करोगी तो तो मैं मैं घुट घुट कर मर जाऊंगा।

शम्भू की आंखें छलछला आईं।

एक क्षण के लिए गोमा ने तीखी नजरों से घूरा, फिर उसने इस भावुकता पर निर्मम चोट की।

'उस समय तुम मेरे प्रेम में दीवाने हो रहे थे और अब घुट घुट कर मर रहे हो।

गोमा के होठों पर विद्रूप भरी मुस्कान फैल गई।

'नीचता की हद हो गई।'

शम्भू ममाहत हो गया।

"वाह रे छलिया ! धोखेबाज !"

गोमा ने इन तिरस्कारपूर्ण शब्दों के साथ जैसे एक निष्ठुर ठोकर मारी। शम्भू तिलमिला उठा।

चुप हो जाओ, भाभी ! वरना वरना मैं पागल हो जाऊंगा।

शम्भू का चेहरा एकदम कुरूप और विकृत हो गया।

'और अब पागल ! हा हा हा।

गोमा का क्रूर हास्य तो शम्भू के अंतरतम को चीर कर निकल गया।

'भा भी !

शम्भू का स्वर कांप गया।

गोमा की आंखों में प्रतिहिंसा का भाव गहरा हो गया।

तुमने मुझे ही नहीं मेरे विश्वास को छला है। मेरी भावनाओं को ठगा है। दूर हो जाओ मेरी नजरों से।

शम्भू पर जैसे वज्र प्रहार सा हो गया। वह कातर स्वर में गिड़गिड़ाया—'नहीं भाभी, नहीं। तुम मेरी सब कुछ हो। इस संसार में मेरा तुमसे अधिक अपना कोई नहीं है विश्वास करो भाभी ! विश्वास करो !

'अच्छा !'—गोमा के क्रोधित नेत्र खिंचकर विस्मय से कपाल पर चढ़ गए।

क्षण भर ठहर कर वह पूछ बैठी—तुम मुझसे प्रेम करते हो ?'

कैसा प्रश्न ?—शम्भू की निरीह आंखें अकस्मात फटी रह गईं।

बोलो ! —गोमा चिल्लाई— इसके पीछे क्या कीमत दे सकते हो ?'

गोमा ने निर्मम कटाक्ष किया।

कीमत ?

शम्भू चौंक पड़ा। सहसा उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

'बोलो। क्या कीमत दे सकते हो ? —आवेश में गोमा चिल्लाई।

उत्तेजना का एक प्रबल झोंका सा आया और वह शम्भू के अंतकरण में आंधी बन कर घूमने लगा। उसके साथ विचित्र सा अंतर्द्वन्द्व छिड़ गया। थोड़ी देर तक घात प्रतिघात करती हुई विरोधी लहरें अबाध गति से बहती रहीं। धीरे धीरे उनकी गति मन्द पड़ती गई और एक समय ऐसा आया कि सर्वत्र शान्ति छा गई। एक अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित हो वह स्थिर कण्ठ से बोला —' मैं अपनी जान तक .

'बस बस, —आवेश में गोमा बीच ही में उबल पड़ी— बन्द करो बकवास। जानते हो लाला ! जो गरजते हैं—वे कभी नहीं बरसते। हा हा ऽ ऽ ऽ !'

इतना कह कर गोमा अन्तिम रोषपूर्ण दृष्टि फेंकती हुई चली गई। शम्भू खड़ा रहा मौन—निश्चल !



सारी रात आंखों में कट गई। नींद को सपनों की परियें उड़ाकर ले गई। सपने—जो टूटे हुए दिल के दर्दनाक अफसाने हैं—काली छाया बनकर मस्तिष्क में छा गये हैं। हृदय की सारी खुशी शबनम की तरह रात की भारी पलकों में करुण क्रन्दन कर रही है।

रूपा की बेचैनी बढ़कर छाती में घुमड़ने लगी है। मुदित मन से अपनी नई सुनहली और रमणीक प्रेम की डगर पर पांव रखा है, मगर लगता है कि किसी ने उसे पीछे से खींच लिया है।

आज वह तड़प रही है।

गोमा कब आई?—उसे ज्ञात नहीं। सुबह उठकर वह काम में लग गई। गोमा उसके सामने पड़ी तो वह चुपचाप निकल गई। कुशल मङ्गल के अतिरिक्त कोई विशेष बात नहीं हुई। सदैव की भांति वह प्रसन्न नहीं लग रही है—यह उसकी भङ्गिमा देखकर निश्चित रूप से कहा जा सकता है। आज वह उदास है—अन्यमनस्क है।

पता नहीं कैसे उसे यह विश्वास होता जा रहा है कि गोमा ही वह दीवार है जिसकी ओट में कामना का मधुर फल छिपा पड़ा है। धीरे धीरे उसका मन खिंचता है और खिंचता चला जाता है।

अस्थिर अशान्त तथा अव्यवस्थित मन स्थिति लेकर उसने जैसे-तैसे सारा दिन काटा। परन्तु ज्यों ज्यों दिन ढलने लगा—त्यों त्यों उसकी अधीरता तीव्र होती गई। किसी भी काम में जी न लगा—जैसे सारी हवेली उसे काटने को दौड़ती है। एक अजीब सा पागलपन सवार हो गया है।

मोहाछन्न एवं यन्त्रचालित की तरह उसने अपने कपड़े पहने। सिर में तेल डालकर बालों को सवारा। ललाट पर बिन्दी लगाई और काजल की हल्की सी रेखा नयनों में फेर ली।

नथ पहने और ओढ़नी में वह एक नववधू सी खिल उठी है। कावली कुर्ती भी नई पहन ली है। पैरों में पायलों के लिए उसका हठीला मन मचल मचल उठा है। उसकी झंकार तो हृदय में मधुर रस भर देता है मगर खेद है कि वे उसके पास नहीं हैं।

आज गांव वाले चाहे टोकें तीखी निगाहों से घूर कटु-ताने में मसला करें पर तु वह अपने मन की मुराद पूरी करेगी। प्रलय भी आ जाय तो यहां किसको चिन्ता है। आज वह अपने प्रीतम से अभिसार करने जाएगी। उसका निश्चय अटल है—अमर है।

अंधेरी गलियें कंटकाकीर्ण मार्ग और उस घटाटोप डरावनी रात में रूपा हेली के बाहर निकल गई। कुत्ते भौंके दूर कहीं गादड़ों की मनहूस आवाज भी सुनाई पड़ी। लेकिन अविराम बढ़ने वाले पैरों को रोकना तो सम्भव नहीं है।

तेज हवा चलने लगी है। बादलों की धीमी धीमी गड़गड़ाहट प्रारम्भ हो गई है। रात का सन्नाटा अचानक सिहर उठा है। पेड़ों पर विश्राम करने वाले पक्षी भय त्रस्त स्वर में चीख पड़े हैं। बस धुन की पक्की लगन की सच्ची रूपा अपने निर्दिष्ट पथ पर धीरे धीरे अग्रसर हो रही है।

प्राय कुछ ही देर में रूपा अपने अभीष्ट स्थान पर पहुंच गई। भिड़े किवाड़ों की दरार में से कुप्पी का धीमा प्रकाश झांक रहा है। शम्भू के अन्दर होने का पक्की साखी है। किवाड़ों को ठेलकर वह अन्दर गई।

शम्भू दोनों हाथों में सिर थामे विषण्ण मुख लटकाये चुपचाप

है। उसकी चिंतातुर आकृति पुष्पी के कपकपाते प्रकाश में स्पष्ट दिख रही है।

देवर! —रूपा ने अपने स्वर में मधु सा घोलकर पुकारा।

'कौन? —शम्भू जैसे अर्ध-सुप्त अवस्था में से सहसा जागा।

शम्भू की आंखों में अपनी दृष्टि गड़ाकर रूपा मुस्कराई। उस मोहक मुस्कान का जादू उसकी काली गहरी पलकों में भर गया जैसे उषा की सलज्ज गुलाबी आभा हंसने लगी है।

शम्भू चकित—विस्मित!

'देवर!'

इस बार रूपा का स्वर भीग गया—जैसे उसमें प्रेम की पर्याप्त नमी घुल गई। अतस की विकल थरथराहटें एक अनोखे रंग में रंगकर मधुर गीत की मूक स्वर लिपि की भांति अधरों पर बिखर गई। उसमें से मानो धीरे-धीरे हृदय ग्राही रस की लहर सी फूट रही है।

शम्भू को हठात् विद्युत लहर सी छू गई।

उसे लगा कि आकाश का भोला भाला दुबल चद्र पूनम के दिन अपनी समस्त कलाओं से आव्रत हो सब सुन्दर एवं सब प्रिय बन सागर की विशाल छाती पर अठखेलियां करने लगा है कृष्ण सागर भी चंचल हो गर जन के लिये बेचैन हो जाए और उसकी उद्दाम यौवनपूर्ण तरंगें उसे अपने बाहुपाश में भरने के लिये अधीर हो जाए बस उसका उद्देश्य एकमात्र यही है।

लेकिन इसमें कहीं सफल भी होगा—सदेह है।

रूपा कहने लगी— तुमने मुझे उबार लिया है। तुम और मैं दोनों मिल कर प्रेम की एक नई कहानी......।'

तड़ तड़ तड़ाक तड़ाक तड़।

दुद्ध प मेघ गरजे। दुनिवार वज्र के प्रहार से प्राकाश का हृदय विदीर्ण हो गया। निदारुण भय एव प्रातक से प्रकृति का रोम रोम सिहर उठा।

'नही!' — शम्भू चीख पडा।

देवर ! —रूपा स॰सा थरू-सी रह गई जैसे उसके सपनो के मधुवन म प्राग सी लगा दी है।

'हा भाभी! यह सब झूठ है। मैंने तुम्हे कभी प्रम प्रे म नही किया है। तुम्हे यह धोखा हुआ है ओह!

शम्भू ज्वर पीडित व्यक्ति की भाति कापने लगा।

रूपा पर तो भयकर गाज गिर पडा। क्षण भर के लिय उसकी चेतना लुप्तप्राय सा हो गई। यह आघात कितना दारुण और निर्मम है। दुर्भाग्य ने आज एक और ठोकर मारा है।

उसने उमडने प्रासुप्रो का घूट पीकर भर्राये कण्ठ से पूछ लिया— 'तो तो उस रात तुमने मुझे अपनाकर छल किया था?"

है ! —शम्भू क नेत्र विस्फारित हो गये— तो तो उस रात तुम थी तुम थी।'

'हा।'

यह मरा सा उत्तर उस दम गया।

'ओह!' —शम्भू जसे प्रार्तनाद कर उठा।

एक भयकर व्यथा! एक घातक उत्पीडन! विषैले धुए की घुटन म उसका दम घुटने लगा।

अब?

भ्रम भ्रम भ्रम।

रूपा की आँखें खुल गई — भ्रम की काली यवनिका उठ गई है।

कैसी हास्यास्पद विडम्बना में पड़ गई है वह ! कैसा धोखा खाया है उसने ! उस विश्वास की कैसी निष्ठुरता पूर्वक हत्या हो गई है ! आह !

परन्तु अब वापिस लौटना सम्भव नहीं है। अब अब ?

आवेश का एक झोंका सा आया जिसमें वह अपना मानापमान भूल गई। नयनों में नीर भर कर वह एकाएक कातर बन गई। नारी के उस गौरवशाली स्वाभिमान का परित्याग कर वह एक साधारण परित्यक्ता की भांति गिड़गिड़ा कर प्रेम की याचना करने के लिये विवश हो गई। बस, उसे प्यार चाहिए जिसके पीछे बड़े से बड़ा त्याग करने को भी प्रस्तुत है।

उसने अंतिम प्रयास किया — मैं वापिस लौटना नहीं चाहती अब तो तुम ही सब कुछ हो मेरे अंतरयामी ।

चिल्लाकर शम्भू अपने उद्भ्रान्त मस्तक को थामकर घर के बाहर निकल गया।

तभी भयंकर गरज के साथ मोटी मोटी बूंदें टपकने लगीं। कुछ ही देर में भीषण वर्षा आरम्भ हो गई। धरती और आकाश जैसे एकाकार होकर उस तिमिराच्छन्न रात्रि में डूब गये। उनका ओर छोर पाना भी कठिन हो गया है। केवल चारों ओर लोमहर्षक स्वर सुनाई पड़ रहा है। लगता है मानों इस चेतन जगत का सारा अस्तित्व समाप्त प्राय हो जाएगा।

रूपा खड़ी रही निराश, निःसम्बल और निस्सहाय। कुछ देर लिये तो उसके प्राण देह से मुक्त हो गये और वह पत्थर की प्रतिमा बन कर जड़ हो गई।

अचानक रुलाई का तीव्र आवेग छाती में घुमकर रह गया। हृदय टुकड़े टुकड़े होकर बिखर गया। और उसका सौभाग्य लुट चुका है—जल चुका है। रह गई है केवल मुट्ठी भर राख जिसे उड़ाने के लिये हवा व्यग्र है।



'तेजा !'

''

'तेजा !'

'हुम् हां हुम् !

तेजा उठ।

कौन है ?'

तेजा आंख मलते हुए उठा। अंधेरे में ढूंढ ढांढ कर माचिस से कुप्पी जलाई। एक मुस्त उबासी लेकर इस असमय में जगाने वाले को वह थोड़ा गौर से देखने लगा।

"रूपली !"—तेजा मुस्कराया।

बाहर बादल गरज रहे हैं। मूसलाधार बारिश हो रही है। बिजली कौंध रही है। ठंडी हवा की लहरें बेधड़क मू स करके बह रही हैं।

रूपा !

एकदम भीगी खड़ी है। उसके शरीर व कपड़ों से रिस रिस कर पानी फर्श पर जमा हो रहा है। परन्तु उसकी आंखों में अद्भुत चमक है।

तेजा उठ।'—रूपा ने आग्रह कहा।

गाड़ ने अर्थपूर्ण दृष्टि डाली तत्पश्चात् गाम्भीर्य पूछा— क्या बात है ?'

रूपा की स्थिर और कठोर दृष्टि तेजा के मस्त पर जम गई। उसने दृढ़ स्वर ■ पूछा— तू मुझे प्यार करता है ना ?

हैं ! —प्रौढ आन्नि इस प्रश्न को सुनकर मचानक घबराया।

बोल ! —रूपा की कण्ठ ध्वनि प्रखर हो गई।

बेचारा नाई घबराया यद्यपि उसने थूक निगल कर बड़ी कठिनाइ से उत्तर दिया— हां ।"

तो उठ और चल मेरे साथ।

कहां ?'

'कहीं भी चल।

रूपा झल्लाकर बोली और उसने बाह पकड़ कर तेजा को झकझोरा।

तेजा का भयाकुल मन अज्ञात अनिष्ट की आशंका से काप उठा।

मैं कहती हू कि जल्दी कर ।' —रूपा ने झिड़का।

अच्छा अच्छा। मैं उठता हू।'

विवश हो तेजा उठा। अचानक भय की वह छाया उसकी निरीह आंखों में घनीभूत हो गई।

चलना कहां है ? —नाई ने सहम कर पूछा।

रूपा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

अरी भागवान, मेह बरस रहा है है!'

'कड़ड़ कड़ाक ।"

बादलों की इस अचानक गड़गड़ाहट में नाई का स्वर एकदम छिन्न भिन्न हो गया। भय व आतंक की एक प्रज्ज्वलित लहर उसके सारे तन में सनसना उठी।

हे शावा ।

'जल्दी चलो।"

हाथ पकड़ कर रूपा ने तेजा को बलात् खींचा।

भीगी बरसती रात! पानी से भरे रास्ते। रह रह कर चमकने वाली बिजली! इन सबने मिलकर वातावरण को अधिक डरावना और हीन दिन बना दिया है।

हे बा बा हे बा बा।'

तेजा का यह कण्ठस्वर फटे बांस के समान उस गरजते तूफान में ध्वनित होकर डूब गया।

'जल्दी चलो।'

रूपा चिल्लाई। तेज बौछार का पानी उसके चेहरे पर चाबुक सा पड़ा और लाचार हो वह चुप्पी लगा गई।

अरी मुझे कुछ दिखाई नहीं देता।'

लो। मेरा हाथ पकड़ो।'

अरी मुझ पर पर र द या मा क र।

और उस अंधेरी तूफानी रात में दो पथिक अनजानी डगर पर बढ चले। एक का शासित हृदय अपनी मूखता पर पछता रहा है और दूसरे के मजबूत पर निरंतर आगे बढ रहे हैं।

❀ ❀ ❀

एक भयानक विस्फोट हो गया है। रूपा का तेजा के साथ भाग जाना कोई साधारण घटना नही है। सारे गाव में खलबली सी मच गई है। चौधरी घर की बहू है; एक मामूली नाई उसे भगा ले जाए—बडे अपमान की बात है। बस गूजरो की तो नाक ही कट गई। उन्होने अपने लट्ठ सम्भाल और सरगर्मी से खोज प्रारम्भ कर दी।

ठकुराइन ने सुना तो तन बदन में आग लग गई।

गोमा गोमा !

जी जी ई ई !'

गोमा दौडकर आई।

आजकल ठकुराइन सा का स्वभाव चिडचिडा हो गया है। जरा जरा सी बात पर तिनक पड़ती हैं। आज तो उन्होने विकराल रूप धारण कर रखा है।

यह मैं क्या सुन रही हू ?"

क्या ?

तेरा सर !' —ठकुराइन सा भन्ना से बल उठी – 'ऐसी भोली बन कर पूछ रही है जैसे कुछ पता नहीं।

सचमुच मुझे कुछ ।'

चुप ! —ठकुराइन सा आखें निकाल कर भिड़क उठी—'तू झूठ बोलती है।

'नही। मेरी बात का भरोसा कीजिए।

भरोसा तुम् !' ठकुराइन मा का मु ह घृणा एव क्रोध से विकृत हो गया।

आप आप मेरा ।

गोमा का स्वर अचानक काप गया।

मैं खूब जानती हू कि यह सब तेरी कारस्तानी है।'

इस आरोप को सुनकर उसकी निर्दोष आत्मा सिहर उठी। उसकी आखें भर आई लेकिन ठकुराइन मा ने इन आसुओं की उपेक्षा कर दी।

'तेरे कहने से उस कलमु ही को मैंने रावल में रखा। काम दिया। खान-कपडे का प्रब ध किया। सिर छिपाने को ठौर दी, मगर इन सब का बदला उसने अच्छा ही दिया है। आखिर मल दी ना हमारे मु ह पर कालिख ।

गोमा सुबक पडी।

यह रोकर किसी और को डराना। मैं चक्कर में आने वाली नही। —ठकुराइन मा चिल्लाई —'बस अपना बोरिया बिस्तर बाधो और निकलो यहा से।'

'ठ कु रा इन मा ।

गोमा पर तो मानो गाज गिर पडा।

'अहा हा हा, क्या म ह बनाया है बिचारी ने ?'— ठकुराइन मा पुन गर्जी— म सब जानती हू। तुम नीच हो—कमीन हो। जिस थाली में खाते हो—उसी में छेद करते हो। दूर हटो मेरे सामने से ।

ठ कु रा इन मा SSS ।

गोमा की हिचरी बध गई, पर नु सब यथ । उम पापाण वक्ष पर लेदामाल भी प्रभाव नही पडा । व खडो रही लुटी लुटी सी ।

एक आसरा था—वह भी टूट गया । करे कोई—भर कोई । कसा दस्तूर है इस दुनिया का ! ओह !



जब यह समाचार शम्भू के कानों तक पहुँचा तो उसका रूप अत्यन्त उग्र व्यापक और विकृत हो गया है। कहने वाले ने खूब नमक मिर्च अपनी ओर से लगाई। उसका तो दिल ही बैठ गया। यह स्त्री के चरित्र का कौन सा रूप है—शम्भू की समझ में कुछ भी नहीं आया। स्त्री चरित्र की यह गूढ़ रहस्यमय पहेली सुलझाने में उसकी बुद्धि असमर्थ है।

उसका चिन्तित होना तो स्वाभाविक है। जहां तक जिम्मेदारी का प्रश्न है—अप्रत्यक्ष रूप से उस पर आती है। एक प्रकार से वह उसी के संरक्षण में रहती है। सारा गाँव जानता है। अब ?

चौधरी ने तभी आकर दरवाजे पर हांक लगाई।

'शम्भूआ ओ शम्भूआ।'

शम्भू के काटो तो खून नहीं।

'शम्भूआ ! आ बाहर निकल।"—चौधरी क्रोध में गरजा।

शम्भू अपने टूटते साहस और लड़खड़ाते पैरों को घसीटता हुआ बाहर निकल आया।

'क्यों बेटा !"—चौधरी चिल्लाया—"काट ली है ना हमारी नाक ? बोल, तूने किस जन्म का बदला लिया है '

काका ! मुझे कुछ पता नहीं।

शम्भू गिड़गिड़ाया।

'झूठ बोलता है! —चौधरी की आँखों से चिनगारियाँ बरसने लगीं— तूने मेरी इज्जत पर हाथ डाला है। आज तू नहीं या मैं नहीं।

'भगवान की सौगन्ध, काका! मुझे कुछ पता नहीं। शम्भू ने अत्यंत दयनीय बनकर करुण स्वर में कहा।

तो सम्भल जा।

चौधरी पर भूत सा सवार है। विवेक शून्य सा हो गया है वह। भले बुरे का ज्ञान प्राय लुप्त-सा हो गया है। वह अपने साथ कुछ सम्बन्धियों को लेकर आया है। सबके पास लाठियाँ हैं। उनकी क्रोधोत्तेजक भाव मुद्रा से स्पष्ट भान हो रहा है कि वे सब मरने मारने को तैयार हैं।

सब की लाठियाँ एक साथ तन गईं।

शम्भू के भय से प्राण सूख गये। वह एक असहाय और पंगु व्यक्ति की भाँति याचना भरी दृष्टि से चौधरी को तकता रहा।

काका! ठहरो।

अचानक भोला लाठी टेकता हुआ घटना स्थल पर आ गया।

कौन?

यह तो मैं हूँ भोला

अच्छा, तो तू भी इसकी हिमायत करने आया है।'

चौधरी ने दूर ही से ललकारा मगर भोला ने शान्त स्वर में उत्तर दिया— नहीं काका! तुम्हारे खिलाफ जाकर मैं स्वप्न में हिमायती नहीं कर सकता। तुम बड़े हो—मेरे बाप के समान ।

बस कण्ठावरोध हो गया।

कथन अपने आप में मार्मिक है। कहने वाले ने भी बड़े संयत स्वर में धैर्यपूर्वक कहा है। उसका श्रोता पर तत्काल ही अनुकूल प्रभाव पड़ना आवश्यक है।

चौधरी ने तिरस्कार पूर्ण दृष्टि शम्भू पर डाली जो उसकी भय ग्रस्त आंखों में खो गई। अपराधी का चेहरा छिप नहीं सकता। कहां वे कुटिल व घाघ आंखें—और कहां ये निर्दोष व निष्कपट आंखें! कहां वह दुष्ट और दुनिया का घृणित छद्म रूप—और कहां यह क्षमा और दया का पात्र।

चौधरी ने अपने दोष साथियों की ओर देखा। वे भी असमंजस में पड़कर कभी भोला और कभी शम्भू को निहार रहे हैं।

अनुकूल अवसर देख भोला पुनः बोला — 'काका! शम्भू तो खुद शर्म से मरा जा रहा है। इसमें कसूर भी उसका नहीं है।'

चौधरी कथन मौन हो मुंह जोहता रहा।

'इसने तो बहू को मरने से बचाया है, दुर्जन में रहने का ठिकाना दिया है, पर इस पर भी वह कुकर्म कर बैठी तो इस बेचारे का क्या दोष है?'

भोला की बातें तर्क संगत तथा न्यायोचित हैं अतः उन पर विचार किया जा सकता है। परिणाम स्वरूप चौधरी का आवेग धीरे धीरे समाप्त होता जा रहा है। वास्तव में शम्भू ने तो उसके साथ भलाई की है, उसकी मान मर्यादा की रक्षा की है और वह जो ...

चौधरी की गर्दन लटक गई। पराजय की ग्लानि जनक भावना उसके अंतस में भर गई। वह अत्यंत नैराश्यपूर्ण स्वर में बोला — 'भोला! इसमें किसी का कोई दोष नहीं है। मेरे दिन बुरे हैं। जैसी मर्जी भगवान की।'

क्षोभ की भावना से चौधरी एकदम खिन्न हो गया। वह लौट पड़ा। उसके साथियों ने भी उसका अनुसरण किया।

'भइया!' —शम्भू एकाएक दौड़कर भोला से लिपट गया— आज बचा लिया वरना...।'

नहीं रे, शम्भू! ऐसी कोई बात नहीं है।

शम्भू की आँखें कृतज्ञता से छलक आईं।

❀ ❀ ❀

बहुत दिन हो गए हैं। रूपा और तेजा ने अपनी छोटी-सी गृहस्थी जमा ली है। पास में कुछ जमा पूंजी है जिसे रूपा अपने साथ लाई है काम चल रहा है। नाई जल्दी में था इसलिए खाली हाथ चला आया। फिर हाथ पर हिलाए बगैर इस अनजानी ठौर में कैसे निर्वाह हो?

धीरे धीरे आर्थिक समस्या का प्रश्न विषम होता चला गया। वास्तविकता का अनावृत रूप उनके लिए चिंता का कारण बन गया। वह क्षणिक आवेश का सुंदर सपना जैसे बालू के महल की भांति ढहने लगा है।

अब ?

गांव के एक किनारे पर छोटी सी फूस की झोंपड़ी बना ली है और वे उसमें निश्चिन्त कर रहते हैं।

गांव कोई विशेष महत्वपूर्ण अथवा उल्लेखनीय नहीं है। साधारण-सा है। यद्यपि उसका वातावरण निर्मल है—शांत है। अधिकांश पिछड़ी जाति के लोग हैं जो खेती बाड़ी करके अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं।

सर्व प्रथम तो उन दोनों को देख कर गांव वालों ने बड़ा आश्चर्य किया। नाम धाम जात पात सब पूछी, लेकिन रूपा ने भी झूठ बोलने में कोई कसर नहीं रखी। जब परस्पर सम्बोधन के बारे में प्रश्न किया गया तो उसने निःसंकोच घोषणा कर दी कि ये मेरे काका जी हैं।

बेचारा नाई रूपा की इस धृष्टता से एकदम घुम गया। उसके अविश्वासी नेत्र फटे के फटे रह गए। स्त्री का यह कौन सा छलिया रूप है—

उसकी समझ मे नही आया। भवर म फसे काठ के टुकड़े के समान उसकी बुद्धि चक्कर काटती रही—काटती रही।

कुछ तरुण युवक युवतियां ऐसी भी हैं जिन्हें उसके कथन पर विश्वास नहीं हुआ। उनका सन्देह तो क्रमश बढ़ता ही गया। यह अवस्था ऐसी है। अवसर पाते हुए नये प्रेमी जोड़ पहले पहल भाई बहन अथवा चाचा भतीजी बन जाते हैं यह स्वाभाविक भी है। वे रहस्यमय कल्पना करके हम पढ़ते हैं।

दोनों सहसा झेंप जाते हैं।

झूठ के पैर नहीं होते। यद्यपि सब जानते हैं फिर भी झूठ बोला जाता है।

आवेग में जो काम किया जाय वह प्रारम्भ में ठीक ही लगता है मगर कालान्तर में जब उसके भयंकर परिणाम सामने आते हैं तो हृदय भर उठता है। सब प्रथम तो मान हानि का प्रश्न उठता है। रूपा गाव के सम्मानित परिवार की कुल वधू है। ससुर गाव के पच और चौधरी हैं। उनकी अच्छी साख है। उनका घर आदर्श समझा जाता है लेकिन उसने सब धूल में मिला दिया।

गाव गाव कर रूपा का मन आशंकित हो सिहर उठता है।

और जब ससुर सुनेंगे तो ?

क्षण भर के लिए रूपा सन्न सी रह गई। किसी ने उस उसकी अतश्चेतना को झकझोर दिया। परन्तु शीघ्र ही वह सम्भल गई। वह भाव जिस गति से आया था—अपना रत्ती भर प्रभाव छोड़ बिना ही चला गया। फिर उसके मन में अनुराग से विष व्याप्त गया।

ससुर ! दुनिया ! खानदान !

इन्हीं कटु शब्दों के साथ उसके अधरों पर वक्र मुस्कान की विकृत रेखायें बिखर गईं। अब तो वह इन व्यथ की परेशानियों से मुक्ति पाने के लिए प्रयत्नशील है।

तेजा एक अधजली बीडी के कश पर कश खींच रहा है। धुए के साथ लिपटी उसकी उदासी गहरी चिंता की सूचक है।

'काका !'—रूपा ने आहिस्ता से पुकारा।

" "

नाई ने तीक्ष्ण दृष्टि से घूरा। फिर भड़क उठा—'खबरदार रूपली जो मुझे काका कहा। हां ऽ ऽ ऽ।'

रूपा हठात् हंस पड़ी।

तो क्या कहूं ?

नाई चक्कर में पड़ गया। वह अचकचा कर बोला—क्या कहूं ? ऐं ऐं ऐं कुछ भी कह दे पर काका अच्छा नहीं लगता।'

'भगवान ने कुछ रिश्ता ही ऐसा बना दिया है कि मुझे काका कहना पड़ता है।'—बड़ी सरलता से रूपा कहने लगी—देखो, तुम्हारी यह ढलती उमर, ये सफेद बाल य सल पड़े गात। अगर तुम्हें अपना प्रेमी कहूं तो कौन अक्ल का अंधा विश्वास करेगा ? बोलो !'

"रूपली !—नाई चीख सा पड़ा।

और रूपा अपनी उफनती हंसी रोक न सकी—वह बरसाती झरने की भांति खिलखिला पड़ी।

बेचारा नाई इस जवान हंसी के नीचे दब सा गया।

उनकी समझ मे नही आया। भवर मे फसे काठ ; उसकी बुद्धि चक्कर काटती रही—काटती रही।

कुछ तरुण युवक युवतियां ऐसी भी हैं जिन्हें विश्वास नही हुआ। उनका सन्देह तो क्रमश बढता ही गया है। अवसर प्राप्त हुए जब प्रेमी जोड़े पति पत्नी न बन कर भतीजा बन जाते हैं यह स्वाभाविक भी है। य करत हम पडते हैं।

दोनो सहसा झेंप जाते हैं।

झूठ के पर नहीं होते। यद्यपि सब जानते हैं फिर भी ...

आवेश म जो काम किया जाय वह आरम्भ म ठीक ... मगर कालान्तर म जब उसके भयकर परिणाम आखों क आगे ... उभरता है। सब प्रथम तो मान शान्ति का प्रश्न ... सामाजिक परिवार का कुल वधू ... ससुर साथ ... है। उनकी सच्ची मान्य है। उनका पर ... समझा जाता ... सब पूरे से मिला लिया।

साथ साथ कर क्या का मन आन्दोलित हो ... उठता है

और अब दवर सुनेंगे ना ?

क्षण भर क लिये कथा मन मे रह गई। किसी न ... का सत्कार किया। परन्तु शीघ्र हा वह ... गई। व ... म छाया था—अपना रंगा भर प्रभाव छोड़ बिना ही ... गया। फिर उनके मन के अन्तराल म विष व्याप्त गया।

दवर ! दुनिया धन्यवाद !

मूल्यवान बना देनी है।

इस खतरनाक खेल की लम्बी रस्सी खुद रूपा के गले मे ही पड़ गई। दुर्भाग्य से वह उसमे बुरी तरह फस गई है अब अब ?

रूपा की आखो मे सूचा भेद्य अधकार छा गया।

रूपा झोंपड़े के अंदर सोती है और तेजा बाहर। वह सारी रात नीम तले पड़ा आकाश के तारे गिनता है। नींद कहाँ? अनचाहे दूषित विचार उसके मस्तिष्क में भर जाते हैं और शूल की तरह चुभते रहते हैं।

सुख चैन की ज़िन्दगी बसर हो रही थी। बैठे बिठाये सिर में खुजली चली जो बुढ़ापे में इश्क का शौक चर्राया। इस चंचल आवारा के फेर में पड़कर अब इस गंदे गाँव में सड़ रहे हैं ।

नाई सिर धुन कर अपनी मूर्खता पर पछताने लगा।

न तो दिन में आराम और न रात में चैन। मन बात-बात में घुटता है। सिर में दर्द है—आँखों में जलन। है कहाँ इसका? '

जब प्रेम का नशा चढ़ता है तो सागर के ज्वार की तरह। मचल मचल कर उसकी उत्ताल लहरें चन्द्र किरणों को अपने आगोश में समेटने के लिये अधीर हो उठती हैं। कालान्तर में जब उसका यह रोग रूप धीरे धीरे क्षीण हो जाता है तो किनारों की कीचड़ से भरी स्पन्दनीय अवस्था अत्यन्त करुणाजनक हो जाती है—मानो सागर का हृदय फट गया है और वह गहरी वेदना में सिसक रहा है।

तेजा?

एक दिन सुबह उठकर जब रूपा ने नीम तले खाली खाट देखी तो धक सी रह गई। नाई कदाचित रात में ही भाग गया था। थोड़ी देर तक वह अपने मन को बहलाती रही—कि शायद कर अन्तिम द्वार पकड़ कर दोपहर तक उसकी प्रतीक्षा करता रहा परन्तु वह निर्मोही गया हुआ समय की भांति लौट कर नहीं आया। जिसको आज तक केवल काम परितृप्ति का खिलौना समझ बैठी था—जो उसकी दृष्टि में केवल स्वार्थ मात्र था उसी के प्रति इतनी व्याकुलता? सच है समय और परिस्थिति नाचीज़ को भी

मूल्यवान बना देती है।

इस खतरनाक खेल की लम्बी रस्सी खुद रूपा के गले मे ही पड़ गई। दुर्भाग्य से वह उसमे बुरी तरह फँस गई है अब अब ?

रूपा की आँखों मे सूखी भेद अधकार आ गया।

दो वर्ष हो गये ।

गांव के सामान्य जीवन में कोई विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है ।

भोला की अवस्था इन दिनों बड़ी शोचनीय है । चिन्ताओं के बोझ ने उसकी असमय में ही कमर तोड़ दी है । एक साल तो उसने गन्ने की फसल में फसल पैदा की लेकिन दूसरे साल उसे छोड़ दिया । गोमा के आग्रह से ही यह सब कुछ हुआ था और अब उसी की उदासीनता का परिणाम है । बस भोला मूक दर्शक बन देख रहा है ।

पिछले दिनों फिर बीमारी ने उसे धर दबाया । दरअसल में वह अपनी आदत से मजबूर है । शराब की लत उससे छूटती नहीं है । थोड़ी भी तबीयत सम्भली नहीं कि उसने बोतल से मुंह लगाया । फलस्वरूप इन दिनों वह अधिक दुर्बल हो गया है । यह तो गोमा की सेवा टहल का सुपरिणाम है कि वह वापिस भला चंगा होकर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है ।

गोमा अपनी इस सूना निस्पन्द और दिशाहीन अवस्था से उबरने का भरसक प्रयत्न कर रही है । जीवन की इस धूप-छांह से वह टूटी नहीं है - बिखरी नहीं है बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों से साहसपूर्वक संघर्ष कर रही है । जय पराजय का एक सिलसिला सा है । लेकिन फिर कुण्ठा पर पराजय को स्वीकार करना तो एक प्रकार की कायरता है जिसे फिर उसकी आत्मा कभी भी गवारा नहीं देती । यद्यपि कभी कभी वह थक जाती

है — हट जाती है, तथापि पुन नई आशा, नया विश्वास तथा नई आस्था सम्बल बन कर उसे उबार रही है।

जिंदगी का 'यह' खेल आँख मिचौनी के साथ बराबर चल रहा है।

इस वर्ष मौन में भयकर बाढ आई हुई है। उसका प्रलय कारी आवाज दूर दूर तक सुनाई पड रही है। जल की उत्ताल भीमकाय लहरें दोनो किनारो से टकरा रही हैं। वे बालू की दीवार की तरह धमकते जा रहे हैं। *आस पास कटे पेड भी टूट टूट कर पानी में गिर रहे हैं।* बडा लोम हर्षक दृश्य है। चारो ओर जल ही जल जिसमें गाव खेत खलिहान और चरागाह डूबते चले जा रहे हैं। मवेशी बाढ के चक्कर में आकर बह गये हैं अथवा भयभीत होकर भाग गये हैं।

बाढ का यह विस्तृत और भयानक विस्तार देखकर प्राण सूख रहे हैं। चहुँ दिशा से हाहाकार का हृदय विदारक स्वर सुनाई पड रहा है। यद्यपि सहायता कार्य प्रारम्भ हो गया है मगर इस महा विपत्ति के सामने वह बहुत थोडी है।

जो गाव ऊँचे टीले पर बसे हैं, वे बाढ की विनाशकारी लहरों के विनाश से अभी तक सुरक्षित हैं। यदि यह कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह बाढ इन गावो के निवासियो के लिए एक वरदान बनकर आयी है। यह वरदान है— वह भारी भरकम लकडिया जिन्हें वे निकाल रहे हैं और उन्हें बेच कर खूब धन कमाते हैं। यह है जीवट का काम। अदम्य साहस के बिना इस भयंकर मृत्यु से खिलवाड करना प्रायः संभव नहीं है।

गाव के सारे लोग नदी किनारे के घाटो पर चले गए हैं।

गामा भी दूर एक घाट पर खडा छोटी मोटी लकडिया निकाल रहा है। इस पर भी बिल्कुल ही नहीं है गाव वाले इसके प्राण के घ ों पर राद है धन बहुत ही कम मात्रा में उसे लकडिया उपलब्ध हो रहा है।

लेकिन उसे पूर्ण सन्तोष है।

आज साथ में दर्द आ गया है और भोला भी। घर में अकेले पड़े रहना उसे मुनासिब नहीं लगा। वह बैठा बैठा ऊब जाता है। सब तरह के विचारों की उधेड़ बुन परेशान करती रहती है। तनहाई की उदास घड़ियों में तो जब उसका मन डूबने सा लगता है।

गोमा ने नाराज होकर टोका तो भोला के रक्तहीन मुख पर एक फीकी सी मुस्कान फैल गई।

"भगवान् मैं कौन सा तेरे सर पर चढ़कर बैठ रहा हूँ।"

"थोड़ी सी भी तबीयत सम्भली नहीं कि बस हो गये रवाना।"

"अरी जब तू साथ है तो डर किस बात का है?"

अनुराग की अरुणिम प्रभा गोमा के सांवरे मुख पर फैल गई।

'चलो हटो। तुम तो बड़े वैसे हो।'

गोमा एक लजीली हंसी हंस पड़ी।

गोमा लकड़ियां निकाल रही है और भोला उसे टकटकी लगा कर देख रहा है। वह सोचता है—गोमा स्त्री है और वह मर्द। लेकिन वह हाथ पर हाथ धरे बैठा है। वह काम कर रही है। काम जो उसे करना चाहिए।

पिछले कई वर्षों से वह गोमा पर पूरा आश्रित है। वह कमजोर है—बीमार है। कितनी लज्जा की बात है? सारे घर का दैनिक खर्च आज उसकी पत्नी के परिश्रम से चलता है। वह उसे एक प्रकार से पालती है।

'ओह!'—भोला का मन कुढ़बुड़ाहट से भर जाता है।

गांव वाले जब उससे मिलने आते हैं तो अक्सर गोमा

की प्रणमा करते हैं। उसके अटूट साहस अपूर्व धैर्य और अथक परिश्रम की भूरि भूरि सराहना करते थकते ही नहीं हैं। भोला को लगता है कि जस वे उस पर अप्रत्यक्ष रूप से व्यंग कस रहे हैं। उनकी हंसती आंखों से बरसती करुणा उसे उत्तेजित कर जाती है। उनके रहस्य मय संकेतों की मौन भाषा में क्षोभ उत्पन्न हो जाता है और प्रगाढ़ क्षण उसका मन एक विचित्र वितृष्णा में भर जाता है।

यद्यपि वह अपनी मनो भावनाओं को छिपाने का संघर्ष करता रहता है। सरल भाव में अपनी दृष्टि में वीतराग तथा तटस्थता लाने की चेष्टा भी करता रहा है कि कहीं वह उखड़ न जाय। अपने मानसिक विकार अथवा हृदय की उग्र अकुलाहट से उत्प्रेरित हो कहीं किसी के साथ निमम व्यवहार न कर बैठे और किसी को कुछ कठोर न न कह दे।

वह भली भांति जानता है कि आज वह सर्वथा अपंग है—असहाय है। जब इस निरीहता और अपात्रता का उसे बोध होता है तो उसकी आत्मा खोई खोई सी भटकने लगती है। नीच से नीच और दयनीय से दयनीय प्राणी में भी स्वाभिमान होता है मगर उसकी इस निराधार अपाहिज अवस्था में वह भी चूक चुका है। आज वह रीता है खाली है टूटा हुआ है ।

आकाश काली घटाओं से आच्छादित है। ढेर सारे बादल अनंत दिशा में आन हैं और परस्पर घुल मिल कर हल्का हल्का शोर करते हैं। हवा का वेग तीव्र है और उसमें शीतल लहरें सी चल रही हैं। कभी छोटे छोटे नन्हे नन्हे जल सीकरों की बौछार आकर वसुधा का अभिषेक कर जाती है। उसका रोम रोम पुलकित है—रस विभोर होकर झूम रहा है।

वर्षा का कोई भरोसा नहीं। पता नहीं कब शुरू हो जाय।

गाव भाग का सारा घरा म निकल कर चारा और फल गया है। खेत घाट और जगल आबाद हैं। एक नई स्फूर्ति—एक नई आशा लेकर नया जीवन जसे धरती की छाती पर अगडाइया लेने लगा है। चनत हल आकाश की ओर उठी आखें गरजती सोन मे से लकडिया निकालत हाथो ने आज प्रकृति क विरुद्ध सामूहिक युद्ध आरम्भ कर दिया है। आज का यह इमान मव म विजय प्राप्त करेगा। उसका विश्वास अडिग है—आस्था अमर है। यह भयकर प्रकृति उसके आगे सिर झुकायगी।

सघर्षों की लपटो म उसका जीवन पल रहा है।

बीच मझधार म एक बहुत बडा पेड बहता आ रहा है। उसम काफी मात्रा म लकडिया मिल सकती हैं। गाव वालो की ललचाई दृष्टि उस पर लगी है। परन्तु बीच मझधार म कूद कर कौन मौत क मुह म जा गलो डाल।

हालाकि गोमा ने भी उस देखा मगर अपने बूते के बाहर समझ कर उसने शीघ्र ही उधर से अपना ध्यान हटा लिया।

अब वह पेड एकाएक उछला और गोमा जिस घाट पर खडी थी उसी दिशा म बहकर आने लगा।

अचानक भोला की आखो मे आशा की नई किरण सी कौंध गई। उसके दुबले शरीर मे जस विद्युत लहर सी दौड पडी अज्ञात प्रेरणा से वशीभूत हो वह उफनती नदी म कूद गया।

गोमा तो सहमा भौचक्की रह गई। यह इतना अकल्पित तथा अप्रत्याशित है कि वह एकाएक कुछ समझ न सकी। उसके कण्ठ स तो एक चीख सी फूट पडी।

अक्सर गाव के कुछ व्यक्ति लालच म अधे होकर इस प्रकार की गरती हर साल करत हैं। व आवेश म कूद तो जाते हैं लेकिन वापिस

लौट कर नहीं आते । नदी की गरजती तूफानी लहरें उसे एक तिनके की भांति निगल जाती हैं।

"लौट आओ। हमें यह पेड नहीं चाहिए । —गोमा करुण स्वर में चिल्लाई।

परन्तु भोला सुनी अनसुनी कर गया। वह फुर्ती से तैरता हुआ अविराम आगे बढ़ता गया।

गोमा रस्सी और कुल्हाड़िया फेंक कर अनिमेष नयनों से अपलक देखती रही। अब तो उसका दिल अज्ञात भय और अनिष्ट की आशंका से कांप कांप उठता है।

थोड़े परिश्रम के बाद भोला पेड़ के पास पहुंच गया। शीघ्र ही उस पर काबू पाकर वह किनारे की ओर खेने लगा। सौभाग्य से वह अपने प्रयत्न में सफल रहा और धीरे धीरे गरजती लहरों का प्रलयकारी विद्रूप पीछे छूटता चला गया। अब तो उसके रुग्ण तन में जैसे अभूतपूर्व बल आ गया है। आज कई वर्षों के बाद उसके मुरझाये चेहरे पर विजयोल्लास की नई कांति चमक उठी है।

गोमा तो देखती की देखती रह गई। उसके नेत्र विस्मय से पल के पल रह गये। सब प्रथम उसे विश्वास ही नहीं हुआ। अपनी भय त्रस्त पलकों को बार बार झपका कर वह इस अप्रत्याशित चमत्कार को अविश्वास पूर्वक मुंह बाए देखती रही। लेकिन क्षण भर पश्चात् सब कुछ स्पष्ट हो गया। सारा भ्रम दूर हो गया। अब तो हर्षातिरेक से आंसू छलछला आए। पति के प्रति इतना प्रेम उमड आया कि उसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना प्राय सम्भव नहीं है। आवेश की द्रुत लहरों के संग उसका मन उड़ने लगा है। और वह पति के गले में बांह डाल कर बधाई देने के लिए सहसा बेताब हो उठी है।

संयोग की बात ! तभी पीछे से एक बलवती उमड़ती लहर आ गई और वह पेड़ से टकराई। उसने पेड़ सहित भोला को उछालकर उस छोटी धारा में डाल दिया, जो आगे चल कर बाढ़ की मुख्य धारा से मिल जाती है। इस आकस्मिक दुर्भाग्य ने तो गोमा के प्राण ही जैसे हर लिये। वह विकल कण्ठ से चिल्लाई— 'बचाओ बचाओ बचाओ !

और साथ ही उसकी रुलाई फूट पड़ी।

इस मर्म विदारक स्वर की गूंज एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक फैल गई। उसने जादू का सा प्रभाव डाला। बात की बात में सब लोग हाथ का काम छोड़ कर दौड़ पड़े। परिस्थिति की गम्भीरता ने भोला की विवेक शून्यता को अनावरण कर दिया। परन्तु अब समय कहां है ? उसकी मूर्खतापूर्ण क्षणिक आवेश की आलोचना करने का ? बस अविलम्ब ही सहायता के लिये भगीरथ प्रयत्न करने का निश्चय किया गया मगर ?

कइयों ने नाव डालने का सुझाव रखा परन्तु उसे असामयिक कह कर छोड़ दिया गया। भला इस चढ़ी नदी में कौन नाव डाल कर अपने प्राणों से खिलवाड़ करेगा ? किसमें इतना साहस है ?—सबकी गर्दनें लटक गई।

अब ?

सब लोगों को निरुपाय और मौन सा देख गोमा का रहा सहा धीरज भी छूट गया। भैया को छाती से लगाकर वह एक असहाय दुखिया की भांति करुण क्रन्दन करने लगी है। हृदय में चिन्ता की लपटें उठ रही हैं— उसमें सर्वस्व स्वाहा हो रहा है। विवश भी बड़ी है वह ! और अपनी आंखों के आगे अपने सौभाग्य का [illegible] रही है।

अचानक भयंकर प्रतिक्रिया से प्रभावित होकर गोमा एक पागल की तरह प्रलाप करने लगी। उसने प्रथम बार गांव के बुजुर्गों के सामने मुंह

बोला। वे सब हैरान हैं और साथ ही लज्जित।

"आप चुप क्या हैं ? कुछ कीजिए। आ॰॰ आ आप मद हैं। गाव का एक आदमी आ आ आदमी मेरे म रे नेरू के के आह! कोई नहीं करता। राम राम हाय ! कोई न्ही सुनता ।'

और वह नदी के किनारे किनारे बलहाना भागा लगा। कुछ लोग उसे पकडने के लिए पीछे दौड़। उन्हें डर है कि गोमा स्वय नदी म न कूद पडे।

नेरू बुक्का फाड कर रोने लगा।

भोला छिपकली की तरह पेड स चिपका है। यदि उस की पकड थोडी सी भी ढीली हो गई तो मौत निश्चित है। मटमले पानी से भरी आखो को उघाड कर उसने एक बार दूर तक दृष्टि दौडाई, लहरें दूर तक फली हैं। वे अत्यत तीव्र और भयोत्पादक हैं। उनकी प्रत्येक उछाल लनर नाक रूप धारण कर लेती है।

भोला घम तेजी से पेड के साथ बह रहा है। किनारा दूर छूटता चला जा रहा है। इसम कोई सदेह नही कि यह धारा उसे शीघ्र ही बाढ की मुख्य धारा म डाल देगी और फिर ?

गहन निराशा ने उस पर अधिकार जमा लिया है। प्रकृति के इस अपरिमित क्रोध का सामना करना उस जसे दुबल व्यक्ति के लिए नितात असम्भव है। लहरों की शक्ति और भयानकता के प्रभाव स बडे बडे साहसी और बलवान व्यक्तियों का साहस भी परास्त हो जाता है फिर उसमें कितना सामथ्य है ?

एकाएक वह पड किसी प्रबल लहर के थपेडे म उछला। भोला

भी उसके साथ भंवर में लटक कर छपाक से गिर पड़ा। देखने वालों के कलेजे मुंह को आ गये। अब तो उसका बचना मुश्किल है। अभी वह किसी भंवर के चक्कर में आ जायगा जहां से बचा पाना विधाता के बस में भी नहीं है।

बस गोमा पर तो भयंकर उन्माद छा गया। वह पागल हरह में चीखती हुई गरजती लहरों की ओर लपकी। वह ज्यों ही उनमें कूदने के लिए तैयार हुई कि तभी गांव के दो युवक भागे हुए आ गये और उसे पकड़ लिया।

छोड़ दो मुझे [illegible]।

गोमी! पागल हो गई हो [illegible]।

'हां ऽ ऽ ऽ! [illegible] [illegible] आ [illegible]

[illegible] [illegible] गोमा बिलख बिलख कर रो पड़ी — पर [illegible] [illegible] कोई [illegible] बचाता [illegible] ओ [illegible] [illegible] वह [illegible] [illegible]।

वह निष्प्राण सी होकर उन दोनों युवकों की बांहों में गिर [illegible] [illegible] करने लगी। अब धीरे धीरे वह [illegible] मानुषों के साथ [illegible] [illegible] [illegible] हो बह रहा है।

[illegible] में सबने आ [illegible] के साथ देखा कि एक छोटा सा [illegible] [illegible] बाथ में—लहरों के शिखर पर तैर रहा है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] चट्टान के [illegible] है—मानों [illegible] की तरह उछल कर यह छोटा-सा [illegible] टकराते ही चकनाचूर हो जायगी।

उसमें बैठा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एक अद्भुत [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ताकि [illegible] तूफानी लहरों में उसका [illegible] [illegible] [illegible] लहरों [illegible] [illegible] उस [illegible] में आ रहा है। [illegible] हुए [illegible] [illegible] हो रहा है।

'अरे कौन है ?

"किसने मरने की ठानी है ?

"यह जरूर डूबेगा।

इसमें क्या शक है ?"

जितने मुंह— उतने ही प्रश्न !

दुर्भाग्य से, नाव अब एक बड़ प्रबल शत्रु लहर के चंगुल में फंस गई है।

सबकी सांस गले में एक क्षण के लिए अटक गई। तनिक ठहर कर फिर प्रश्नों की झड़ी आरम्भ हो गई।

'इस उफनती नदी में किसने नाव डाली है ?'

यह कौन है

किसने ऐसी मूर्खता की है ?

तभी उनमें से एक पहचान कर चिल्लाया — अरे यह तो अपना शम्भू है।

शम्भू !

बस, पलक झपकते ही शम्भू का नाम सबकी जबानों पर घूम गया।

गोमा के कानों में जब उसका नाम पड़ा तो वह सन्नाटे में आ गई। विस्फारित नेत्रों से उसने देखा कि छोटी सी नाव पर बैठा शम्भू प्रबल प्रलयकारी लहरों से संघर्ष कर रहा है। वह उनको काट कर शीघ्रातिशीघ्र भीमा के पास पहुंच जाना चाहता है।

गोमा के आंसू पलकों पर आकर ठहर गये। रुलाई कण्ठ में घुट कर रह गई। वह तो सांस रोक कर अपलक उस छोटी सी नाव को देख

रही है ।

अब वह भेद । विरोधी धाराओं के टकराव म पड़ने वाले भवर मे चक्कर काट रहा है ।

भोला भी थक चुका है । उसका दुबल तन मनों म नहीं म अन्त चालक म न अनुभव कर रहा है । हाथ पाव टूट जाने म चक्कर कट मु न हो गये है । उस पर धीरे धीरे मूर्छा सी छा रही है ।

एकाएक निमिष भर हाथ म न पड़ छूट गया और वह भवर जाल म हरिया गया ।

'राम राम !'

बच्चों ने मुह फिरमाया । भोला की इस आकस्मिक विपत्ति पर सबका हृदय द्रवित हो गया । अब उनके बचने की सारी आशा धूमिल हो गई । वह अब डूबा वह अब डूबा अब डूबा ।

मामा के मुह स दारुण चीत्कार निकल पड़ी । वह मुह ढाप कर फूट फूट कर रो पड़ा ।

सम्भवत शम्भु न इस चिन्तापूर्ण परिस्थिति को भली भाति समझ लिया है । उसने एक पल भी व्यथ खोना उचित नही समझा । जब तक भोला भवर म चक्कर खा रहा है उस निश्चित रूप स पहुच जाना चाहिए वरना भवर के मध्य म पहुँच कर वह डूब जाएगा ।

वह नाव में से कूद पड़ा और एक द्रुतगामी धारा म पड़कर बहने लगा । उस तैरने की आवश्यकता नहीं है । धारा अपने आप उसे लक्ष्य तक पहुचा देगी ।

इस बार पुन दो विरोधी लहरे एक दूसरे को काटती भोला के नजदीक आ गई । भोला से टकराई और उसे अधर मे उछाला । लेकिन वह भवर स निकल कर दूर जा पड़ा । बस शम्भु ने डुबकी लगाई और

भोला के पावों के पास सिर निकाला। धाराएं उसे वहां ले जाने के लिये मचल रही है, मगर शम्भू के हाथों में भोला के सिर के बाल आ गये हैं और वह उन्हें काटने लगा है। यदि थोड़ा सा भी विलंब किया गया तो इस बार भोला के साथ शम्भू भी भवरजाल में फंस जाएगा।

सौभाग्य से, एक गरजती हुई लहर पीछे से आ गई और वह उन्हें बहाकर किनारे की ओर ले जाने लगी है। शम्भू भी अपने एक हाथ को फुर्ती से चला कर इस अनुकूल अवसर का समुचित लाभ उठा रहा है।

अब लहर भी उसकी सहायक बन गई है। वे परस्पर टकराती-कांपती उन्हें अपने लक्ष्य की ओर फेंक रही हैं। तत्काल ही वे एक धारा में पड़ गये जो सीधी किनारे की ओर जाती है।

कुछ ही देर में किनारा पास आ गया। वह थोड़ी ही दूर रह गया है। वहां खड़े लोगों ने भीमकाय लहरों पर विजय प्राप्त करके आने वाले शम्भू के प्रति हर्षध्वनि की। अब तो कई नवयुवक जल में कूद पड़े।

शम्भू साथ बहाती में तैर रहा है। उसका शरीर थकान से चूर चूर है। वह प्रसन्न है अपनी इस सफलता पर। ठंड से नीले पड़े होंठों पर मीठी सी मुस्कान तैर रही है।

गोमा तो यह अद्भुत चमत्कार देखकर हर्ष विह्वल हो उठी है। एक एक पल की प्रतीक्षा भी उसे अब बहुत भारी लग रही है। जी चाहता है कि वह एक पक्षी के समान उड़कर उसके पास चली जाय।

पता नहीं कहां से एक विषधर जल में बहता हुआ आ गया। वह साथ शम्भू के गले से लिपट गया। उसके प्राणों पर बन आई। घबरा कर हाथ से अलग करना चाहा तो सांप ने क्रोधित होकर उसे डस लिया।

शम्भू चीख पड़ा।

मुट्ठी ढीली पड़ गई और भोला के बाल हाथ से छूट गए। वह अब

रही है ।

अब वह तेज गति विपरीत धाराओं के टकराव से पड़ने वाले भँवर में चक्कर काट रहा है ।

भोला भी थक चुका है । उसका दुर्बल तन लहरों से लड़ने में अपने आपको असमर्थ अनुभव कर रहा है । हाथ पाँव ठंडे पानी में अकड़ कर सुन्न हो गये हैं । उस पर धीरे धीरे मूर्छा सी छा रही है ।

अकस्मात् निर्जीव वह हाथों से पतवार छूट गया और वह भँवर जाल में डुबकियाँ लेने लगा ।

राम राम !

बच्चों ने मुँह छिपाये । भोला की इस आकस्मिक विपत्ति पर सबके हृदय द्रवित हो गए । सब उसकी जान की सारी आशा धूमिल हो गई । वह अब डूबा वह अब डूबा अब डूबा !

गोमा के मुँह से दारुण चीत्कार निकल पड़ी । वह मुँह ढाँप कर फूट फूट कर रो पड़ी ।

सम्भवतः शम्भू ने इस चिन्तापूर्ण परिस्थिति को भली भाँति समझ लिया है । उसने एक पल भी व्यर्थ खोना उचित नहीं समझा । जब तक भोला भँवर में चक्कर खा रहा है उसे निश्चित रूप से पहुँच जाना चाहिए वरना भँवर के मध्य में पहुँच कर वह डूब जाएगा ।

वह नाव में से कूद पड़ा और एक द्रुतगामी धारा में पड़कर बहने लगा । उसे तैरने की आवश्यकता नहीं है । धारा अपने आप उसे लक्ष्य तक पहुँचा देगी ।

इस बार पुनः दो विरोधी लहरें एक दूसरे को काटती भोला के नज़दीक आ गईं । भोला से टकराईं और उसे अधर में उछाला । लेकिन भँवर से निकल कर दूर जा पड़ा । बस शम्भू ने डुबकी लगाई और

दुलत्तियां खाता हुआ सांप गोमा के हाथ में पड़ गया।

शम्भू की आंखों में अंधेरा सा फिरने लगा। धीरे धीरे विष का प्रभाव उस पर होने लगा। उसका शरीर शिथिल पड़ गया है और अंग अंग टूट रहा है।

वह सांप भी बुरी तरह लिपट गया है। कह नहीं सकते कि उसने फिर कितनी बार दंश किया होगा।

बस गांव वाले उसके पास पहुंच पाते पहुंचें कि उसने जल समाधि ले ली।

चारों ओर शोक छा गया। ऐसे साहसी और वीर की असमय मृत्यु पर सारा गांव आंसू बहा रहा है। कुछ लोग भी हैं जो अपना संयम खोकर रो पड़े हैं।

परन्तु गोमा चुप है। उसके आंसू तो सूख गये हैं। उसकी बावरी और सूनी-सूनी आंखें तो सुदूर उस उफनती नदी में पानी की सतह पर कुछ खोज रही हैं।

हे ईश्वर !

एक लम्बी चीख मार कर गोमा मूर्छित होकर गिर पड़ी।

॥ समाप्त ॥